

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
National Mission for Manuscripts

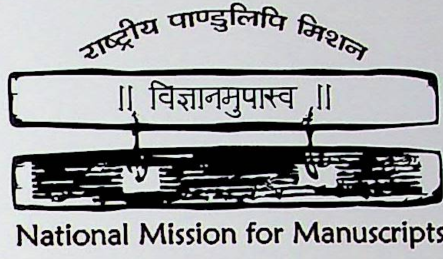
ग्यारहवें वर्ष का प्रतिवेदन
Report of the Eleventh Year
2013-2014

प्रकाशकः
निदेशक
राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
11, मानसिंह रोड
नई दिल्ली - 110 001
दूरभाषः +91 11 23383894
फैक्सः +91 11 23073340
ई-मेलः director.namami@nic.in
वेबसाईटः www.namami.org

मुद्रण एवं डिजाइनः
करंट एडवर्टाइजिंग प्राइवेट लिमिटेड

Publisher:
Director
National Mission for Manuscripts
11, Mansingh Road
New Delhi - 110 001
Tel.: +91 11 23383894
Fax: +91 11 23073340
E-mail: director.namami@nic.in
Website: www.namami.org

Print & Design:
Current Advertising Pvt. Ltd.



राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

ग्यारहवें वर्ष का प्रतिवेदन

2013 - 2014

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

वार्षिक प्रतिवेदन 2013-14

भारत साधिकार दावा कर सकता है कि उसके पास विश्व का विशालतम पाण्डुलिपि भण्डार है । भारत के पास न केवल साहित्यिक विरासत का विशालतम भण्डार है अपितु यह पाण्डुलिपि संरक्षण प्रयास में अग्रणी है। राष्ट्रीय पाण्डुंलिपि मिशन पाण्डुलिपि संरक्षण और उसमें निहित ज्ञान के प्रसार हेतु राष्ट्रीय स्तर पर किया गया विश्व में प्रथम समेकित प्रयास है। राष्ट्रीय पाण्डुंलिपि मिशन ने सन् 2002 में अपनी स्थापना से लेकर अभी तक 'भविष्य के लिए अतीत का संरक्षण' के अपने आदर्श को पूरा करने हेतु एक लम्बी यात्रा तय की है। यह देशभर में फैले अपने सौ से अधिक केन्द्रों और लगभग 350 उप केन्द्रों के माध्यम से कार्य निष्पादित करता है।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन संपूर्ण देश में स्थापित विभिन्न प्रकार के केन्द्रों के माध्यम के कार्य करता है। श्रेणी के अनुसार केन्द्रों की संख्या निम्नलिखित हैं -

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम.आर.सी.)-28
पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र(एम.सी.सी.)- 34
पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्र(एम.पी.सी.)-42
पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी केन्द्र (एम.सी.पी.सी.)-300

संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा अपनी स्थापना के लगभग एक दशक बाद यह संस्था देश में हुए विरासत संरक्षण प्रयासों के बीच निस्संदेह रूप से सर्वाधिक लोकप्रिय एवम् प्रभावी आंदोलन के रूप में उभरकर सामने आया है।

उद्देश्य

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की स्थापना के उद्‌देश्य का उल्लेख करते समय यह कहना गलत होगा कि इसका उद्‌देश्य भारत और विदेश में स्थित सभी पाण्डुलिपियों की केवल पहचान, गणना, परिरक्षण और वर्णन करना है। इन कार्यों के लिए दायित्व लेने के पीछे उद्‌देश्य इन तक पहुँच को आसान बनाना,सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाना और शैक्षणिक तथा अनुसंधान कार्य एवं आजीवन अध्ययन हेतु इसका उपयोग करना है। विकास उद्‌देश्य(उद्‌देश्य के चरण) को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

उद्‌देश्य 1 : प्रशिक्षण, जागरूकता और वित्तीय सहयोग के माध्यम से पाण्डुलिपियों के संरक्षण और परिरक्षण की सुविधा उपलब्ध कराना।

उद्‌देश्य 2: जहां कहीं भी भारतीय पाण्डुलिपियां उपलब्ध हो, उनका प्रलेखन और सूचीकरण करना, उनके संबंध में सटीक और अद्यतन सूचना रखना तथा अवलोकलन के लिए प्रस्तावित परिस्थिति की जानकारी रखना।

उद्‌देश्य 3: प्रकाशन और इलेक्ट्रॉनिक, दोनों रूपों में पाण्डुलिपियों को उपलब्ध कराकर उन तक आसानी से पहुंच को बढ़ावा देना।

उद्‌देश्य 4: भारतीय भाषा और पाण्डुलिपि शास्त्र के अध्ययन में शोध और अध्येतावृत्ति को बढ़ावा देना।

उद्‌देश्य 5: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय का निर्माण करना।

तीसरी चरण में रा. पा. मि. में कई गतिविधायों को नाना रूपों में विस्तारित किया गया है।

विगत दो वर्षों के दौरान रा.पा.मि. ने स्वयं को अधिक सापेक्ष तथा प्रभावी बनाने के लिए अपनी प्राथमिकताओं को पुनः समायोजित किया है। इनमें से कुछ प्रशंसनीय कार्य इस प्रकार हैं: पूर्वोत्तर और दूरस्थ क्षेत्रों में रा.पा.मि. के कार्य का विस्तार तथा मधयकालीन बौद्धिक विरासत पर उचित जोर देना प्रशंसनीय है। एक दशक के लम्बे अनुभव से यह स्पष्ट हो गया है कि पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण की गतिविधियाँ एक प्रयास में ही पूरी नहीं की जा सकती। यह एक निरन्तर प्रक्रिया है और इसे स्थायी संस्थान के द्वारा निरंतर बेहतर तरीके से उन्नतिशील बनाया जा सकता है। इसलिए पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण पाण्डुलिपि संस्थान केन्द्रों को सुपुर्द किया गया है जो उत्तर सर्वेक्षण गतिविधियों द्वारा प्रलेखन की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए भी उत्तरदायी हैं। इस निदर्शनात्मक बदलाव के साथ 2012 में रा. पा. मि. का तीसरा विस्तार आरम्भ किया गया था।

संरक्षण और आधुनिकीकरण पर जोर

पाण्डुलिपि संरक्षण हेतु रा.पा.मि. की एक द्वि-मुखी योजना है : क) मूल पाण्डुलिपियों के उपचारात्मक एवम् निवारणात्मक संरक्षण, और ख) सांख्यिकीकण के माध्यम से संरक्षण।

यह एक विदित तथ्य है कि रा.पा.मि. के अस्तित्व में आने से पूर्व स्वतंत्र भारत में मौजूद पाण्डुलिपि भण्डार में लगभग आधी पाण्डुलिपियां नष्ट हो गयी थी। अतएव रा.पा.मि. के कार्य में संरक्षण को समुचित सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी। अपने साधन संपन्न पा.सं.के. के माध्यम से पाण्डुलिपियों के संरक्षण के साथ-साथ रा.पा.मि. पाण्डुलिपि सरंक्षण एवम् संरक्षण कला व विज्ञान में लोगों को प्रशिक्षित करने हेतु कार्यशालाओं का आयोजन करता हैं। सन् 2011 में रा.पा.मि. ने अपने नयी दिल्ली स्थित मुख्यालय में प्रायः निष्क्रिय संरक्षण प्रयोगशाला को फिर से प्रारंभ किया है। हाल ही में फिर से प्रारंभ की गई इस प्रयोगशाला में वर्तमान में चार सुप्रशिक्षित संरक्षक युद्ध स्तर पर कार्यरत हैं, हालांकि जितने संरक्षकों की आवश्यकता है, उसकी तुलना में चार लोगों का होना बहुत कम है।

परिरक्षण हेतु आधुनिक तकनीकी के इस्तेमाल को रा.पा.मि. द्वारा तैयार एवम् प्रकाशित 'अभिलेखीय सामग्री के सांख्यिकीकरण हेतु दिशा-निर्देश' में परिभाषित किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य भविष्य के लिए पाण्डुलिपि संरक्षण हेतु डिजिटल प्रौधोगिकी का उपयोग करना है। राष्ट्रीय एवम् अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सांख्यिकीकरण परियोजनाओं से संबंधित सर्वोत्तम प्रयासों से जुड़े विशेषज्ञों के साथ काफी विचार-विमर्श करने के बाद रा.पा.मि. ने यह सामग्री प्रकाशित की। यह अपने तरह की देश में पहली पुस्तिका है। सांख्यिकीकरण प्रयास का उद्देश्य पाण्डुलिपियों को भविष्य के लिए सुरक्षित रखना तथा राष्ट्रीय डिजिटल पाण्डुलिपि पुस्तकालय की स्थापना करके पाण्डुलिपियों को सहज रूप से देख पाने की सुविधा उपलब्ध कराना है। रा.पा.मि. ने सन् 2011 में सांख्यिकीकरण परियोजना का तृतीय चरण प्रारंभ किया जिसके तहत अस्सी लाख पृष्ठ पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण करने की योजना है । प्रथम और द्वितीय चरणों सहित अभी तक 1.85 करोड़ पृष्ठ पाण्डुलिपियों का सांख्यिकीकरण किया जा चुका है। वर्तमान में , रा.पा.मि. के पास पाण्डुलिपियों की 1.85 करोड़ पृष्ठ डी.वी.डी. छवि उपलब्ध है।

रा.पा.मि. एक संरक्षण माध्यम के रूप में सांख्यिकीकरण की सीमाओं से परिचित है। जहां सांख्यिकीकृत प्रतियां सुविधापूर्वक उपलब्ध हो सकती हैं, वहीं परिवर्तनशील प्रौघोगिकी के इस युग और डी.वी.डी. के सीमित जीवन-अवधि को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि सांख्यिकीकृत प्रतियां दीर्घ-अवधि परिरक्षण का साधन नहीं हो सकती हैं। अतएव, रा.पा.मि. ने सभी सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपियों की प्रतियों का माइक्रोफिल्म तैयार कर उन्हें सुरक्षित रखने की योजना बनायी है।

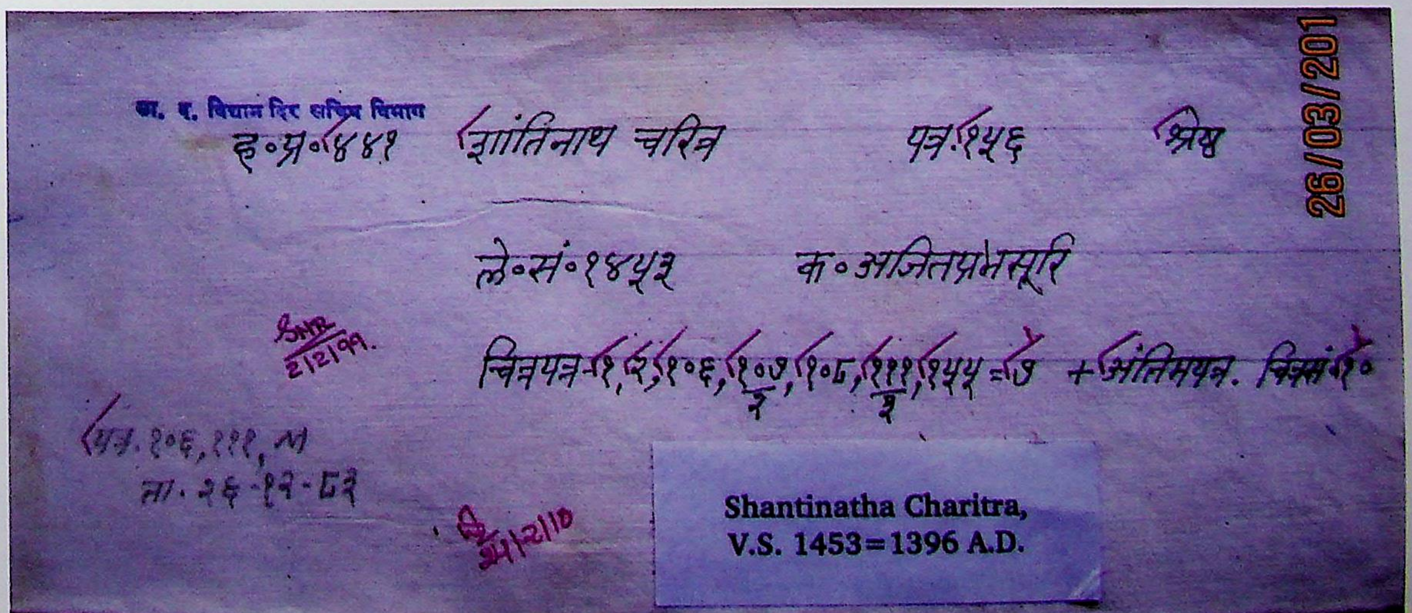
संक्षेप में, रा.पा.मि. का उद्देश्य पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान को सुरक्षित रखना तथा वर्तमान संदर्भ में उनका अधिकततम उपयोग करना है। इस लक्ष्य का पाने के विभिन्न साधन हैं - प्रलेखन, संरक्षण, सांख्यिकीकरण और प्रसारण।

देश के विभिन्न भागों में पाण्डुलिपियों, पाण्डुलिपि-शास्त्र और पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान के सम्बन्ध में संगोष्ठियां और व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं। विगत दो वर्षों के दौरान तत्त्वबोध सार्वजनिक व्याख्यानमाला के अंतर्गत दिए गए व्याख्यानों को संकलित कर 4 पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं। संगोष्ठि आलेखों की चार पुस्तकें, पाण्डुलिपियों के विवेचनात्मक संस्करण की दो पुस्तकें और दुर्लभ अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की तीन पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं। कुल मिलाकर अभी तक 37पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं और अनेक पुस्तकों को प्रकाशित करने की प्रक्रिया चल रही हैं। इसके साथ ही रा.पा.मि. के वेबसाइट -(www.namami.org) पर 31,23,000 पाण्डुलिपियों के बारे में सूचना उपलब्ध हैं।

विगत दो वर्षों के दौरान इस सम्बन्ध में व्याख्यानों, संगोष्ठियों और कार्यशलाओं के माध्यम से प्रसार के कार्य में कई गुना बढ़ोतरी हुयी है।

पाण्डुलिपियों में विगत पांच हजार वर्षों से हमारे देश में संचित ज्ञान का भण्डार निहित है। भारत के बौद्धिक सम्मान को बनाये रखने के लिए इस बात की आवश्कता है कि हम इसे वर्तमान संदर्भ में फलदायी एवम् लाभकारी बनाएं।





कार्यक्रम और गतिविधियां

1. प्रलेखन

- पाण्डुलिपि के राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस को संपन्न बनाना।
- पाण्डुलिपि का राष्ट्रीय सर्वेक्षण तथा सर्वेक्षणोत्तर कार्यक्रम ।
- पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों (एम.आर.सी.) का विस्तार और सशक्तिकरण।
- पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्रों (एम.पी.सी.) को सहयोग।

2. पाण्डुलिपि संरक्षण और प्रशिक्षण

- एम.सी.सी. नेटवर्क में विस्तार
- पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी केन्द्रों (एम.सी.पी.सी.) की स्थापना
- संरक्षणों के राष्ट्रीय संसाधन दल की स्थापना
- शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा
- निरोधात्मक सरक्षण में प्रशिक्षण का समावेश
- दुर्लभ सहयोग सामग्रियों के संरक्षण हेतु कार्यशाला
- एम.सी.पी.सी. कार्यशाला
- क्षेत्र प्रयोगशालाओं की स्थापना
- एम.आर.सी. में पाण्डुलिपि संकलन का संरक्षण
- सर्वेक्षण में तथा परवर्ती सर्वेक्षण में सहयोग
- सांख्यिकीकरण में सहयोग

3. पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन में प्रशिक्षण

- पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन
- प्रशिक्षित मानव संसाधन का निर्माण
- भारतीय विश्वविद्यालयों में पाण्डुलिपि शास्त्र पाठ्यक्रम को लागू करना
- पाण्डुलिपियों का विवेचनात्मक संस्करण जारी करना

4. सांख्यिकीकरण के माध्यम से प्रलेखन

- परवर्ती उपयोग हेतु मूल पाण्डुलिपियों का परिरक्षण
- मूल प्रतियों में छेड़छाड़ किए बिना अध्येताओं और शोधकर्ताओं तक उनकी पहुंच और उनके उपयोग को प्रोत्साहित करना
- देश के विभिन्न संकलनों में परिरक्षित पाण्डुलिपियों की सांख्यिकीकृत प्रतियों के संसाधन आधार के रूप में डिजिटल पुस्तकालय की स्थापना।
- पाण्डुलिपि के सांख्यिकीकरण हेतु मानकों और प्रक्रियाओं का निर्माण

5. शोध और प्रकाशन

- तत्वबोध: व्याख्यानों के संकलन का प्रकाशन
- समीक्षिका: संगोष्ठी आलेखों के संकलन का प्रकाशन
- संरक्षिका : संरक्षण संगोष्ठी आलेखों के संकलन का प्रकाशन
- कृतिबोध: विवेचनात्मक संस्करणों का प्रकाशन
- प्रकाशिका : दुर्लभ पाठों का प्रकाशन
- कृति रक्षण: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की द्वि–मासिक पत्रिका

6. जन सम्पर्क कार्यक्रम

- सार्वजनिक व्याख्यान
- संगोष्ठी
- प्रदर्शनी आदि।

कार्यक्रम निष्पादन : सार-संक्षेप
वर्ष 2013-14

- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने वर्ष 2013-14 में 15,6779 पाण्डुलिपियों के संबंध में सूचना संगृहीत की और इससे अब तक 34,94,520 पाण्डुलिपियों के संबंध में जानकारी प्राप्त हुई है। वर्ष 2013-2014के दौरान रा.पा.मि. के वेब पर 1,19,565 अतिरिक्त आंकड़े डाले गए। रा.पा.मि. के वेबसाइट www.namami.org पर लगभग 31,23,000 आंकड़े उपलब्ध हैं।

- पाण्डुलिपि संरक्षण हेतु 12 कार्यशालाएं आयांजित की गई हैं।

- 31 मार्च, 2014 तक 70,053 पाण्डुलिपियों (1,85,75 660 पृष्ठों) का सांख्यिकीकरण पूरा किया गया है।

- तत्त्वबोध श्रृंखला के अंतर्गत 6 (5 दिल्ली में और 5 दिल्ली से बाहर) व्याख्यान आयोजित किए गए।

- विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय स्तर की 6 संगोष्ठियां आयोजित की गई हैं।

- पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन पर 7 कार्यशालाएं (5 आधारभूत स्तर के और 2 उच्च स्तरीय) आयोजित की गई।

- पाण्डुलिपियों की दो प्रदर्शनियां आयोजित (एक दिल्ली, दूसरा जलन्धार में)

- पुस्तकों के 11 खण्ड तथा कृतिरक्षण के 3 अंक को जारी किया गया।

प्रलेखन

संपूर्ण भारत वर्ष में भारतीय पाण्डुलिपियाँ ज्ञात और अज्ञात संग्रहों में बिखरी हुई है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (रा.पा.मि.) के मुख्य कार्यक्रमों में हमारी पहली प्रतिबद्धता भारतीय पाण्डुलिपियों का एक राष्ट्रीय आधार संग्रह (डाटावेस्) का निर्माण और संकलन है। निजी संग्रहों एवं लोक से प्राप्त विभिन्न सूचनाओं और संकलन प्रक्रियाओं के द्वारा भारतीय पाण्डुलिपियों का संकलन मिशन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है।

जब सन् 2002 में रा.पा.मि. की स्थापना की गयी थी तो इसके समक्ष पाण्डुलिपियों की उपलब्धता, उनके पता लगाने और पाण्डुलिपियों के राष्ट्रीय डाटाबेस तैयार करने की चुनौति थी। यह एक चुनौतिपूर्ण काम इसलिए भी था कि पाश्चात्य देशों में पाण्डुलिपियां जिस तरह से व्यवस्थित पाण्डुलिपि भण्डारों में उपलब्ध हैं, उस रूप में भारत में पाण्डुलिपियां इन भण्डारों तक ही सीमित नहीं हैं। यहां पर पाण्डुलिपियां, पुस्तकालयों, मठों, मंदिरों, मसजिदों सहित लोगों के घरों में भी उपलब्ध हैं। इस प्रकार भारत में न केवल सबसे अधिक पाण्डुलिपियां उपलब्ध हैं बल्कि यहां पर सर्वाधिक संख्या में पाण्डुलिपि भण्डार भी उपलब्ध हैं। मिजोरम से गुजरात तक और लेह से कन्याकुमारी तक सर्वत्र पाण्डुलिपियां उपलब्ध हैं। इस सम्बन्ध में अनुमान लगाना निरर्थक होगा।

अपनी स्थापना के पश्चात्, रा.पा.मि. ने पाण्डुलिपियों की खोज तथा प्रलेखन की चुनौति का सामना करने के लिए विस्तृत योजना तैयार की। इसके अस्तित्व के प्रथम एवम् द्वितीय चरणों में पाण्डुलिपि भण्डारों का घर-घर पता लगाने तथा सर्वेक्षण पश्चात् विस्तृत प्रलेखन पर जोर दिया गया। साथ ही दीर्घकालीन लक्ष्य का प्राप्त करने की रणनीति के तहत देश के विभिन्न भागों ने सम्बन्धित संस्थाओं का जाल तैयार किया गया। इन संस्थानों को पाण्डुलिपियों की खोज एवम् प्रलेखन का दायित्व प्रदान करने हेतु संस्थागत रूप-रेखा तैयार की गयी। धीरे-धीरे इन संस्थाओं ने अधिक प्रभावी और सटिक ढंग से प्रलेखन का दायित्व लेना प्रारंभ कर दिया। परिणामस्वरूप, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों पर सर्वेक्षण और सर्वेक्षण पश्चात् कार्य करने पर जोर दिया जा रहा है। पहले की नीति में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है, जिसके संकेत रा.पा.मि. के स्थापना काल के बाद ही दिखने लगा था। वर्ष 2013-14 में एम.आर.सी. तथा एम.सी.सी के कार्य को और आर्थिक मजबूत करते हुए इन्हें और आर्थिक कीमत तथा प्रभावी बनाने के प्रयास किये गये।

फलस्वरूप, अनेक निष्क्रिय पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों में फिर से जान फूंकी गयी है और बहुत-से नए पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र खोले गए हैं। इससे आंचलिक असंतुलन दूर हो सकेगा और आंकड़ा संकल प्रयास को नया बल मिलेगा।

भारत में अधिकांश पाण्डुलिपि सम्पदा विद्वानों-शोधार्थियों के लिए एक संदर्भ पोर्टल पर प्रलेखन की दृष्टि से उपलब्ध कराने हेतु उपयुक्त नहीं है। कई दृष्टान्तों में हम दिखते हैं कि अतीत और वर्तमान की संस्कृति - ज्ञान में ये पाण्डुलिपियां एक शून्य की स्थिति पैदा करती है। वहां इन पाण्डुलिपियों के अभिगमन सम्बंधी ज्ञान का अभाव है।

भारत में एक करोड़ पाण्डुलिपियों के विद्यमान होने का अनुमान है। इस दृष्टि से भारत में पाण्डुलिपि का कदाचित् सबसे बड़ा भंडार है। हालांकि इस विपुल संपदा के अधिकांश अंश का प्रलेखन इस तरह से नहीं किया गया है कि उसका विद्वान और शोधकर्ता सहज रूप से उपयोग कर सकें। अक्सर इन पाण्डुलिपियों की जानकारी नहीं है अथवा इन तक लोगों की पहुंच नहीं है। इससे अतीत की ज्ञान- संस्कृति और वर्तमान के बीच एक अंतराल उत्पन्न हो गया है।

पाण्डुलिपियों के राष्ट्रीय सूचीकरण के लिए रा.पा.मि. भारत में विस्तृत पाण्डुलिपि प्रलेखन कार्य में संलग्न है। लगभग 31,23500 पाण्डुलिपियों के संबंध में सूचना रा.पा.मि. के वेबसाइट www.namami.org में पहले से उपलब्ध है। इस इलेक्ट्रॉनिक सूची में संपूर्ण देश की संस्थानिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और निजी संकलनों की पाण्डुलिपियों के संबंध में सूचना उपलब्ध है।

उद्देश्य

- संस्थाओं और निजी संग्रहों में उपलब्ध अज्ञात पाण्डुलिपि भंडार का पता लगाना।
- देश के अनुमानित एक करोड़ पाण्डुलिपियों का प्रलेखन
- पाण्डुलिपियों के संबंध में सूचना संकलित करने तथा सजगता लाने के लिए जमीनी स्तर पर सम्पर्क करना
- पाण्डुलिपियों की इलेक्ट्रॉनिक सूची निर्मित्त कर उसे इंटरनेट पर उपलब्ध करवाना

प्रविधि

- ज्ञात-अज्ञात, निजी-सार्वजनिक, सूचीबद्ध-गैर सूचीबद्ध सभी प्रकार की पाण्डुलिपियों की पहचान करने के लिए प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र में राष्ट्रीय सर्वेक्षण आयोजित करना।
- स्व-शासकीय निकाय एवं आम जन सहित राज्य और जिला प्रशासन के साथ वृहत्तर स्तर पर समन्वय करना
- पाण्डुलिपि आंकड़ा पत्र में प्रत्येक पाण्डुलिपि के प्रलेखन हेतु सर्वेक्षण पश्चात् व्यापक कार्यक्रम संचालित करना
- पाण्डुलिपि संसाधन केंद्रों(एम.आर.सी.) से आंकड़े प्राप्त करना
- आंकड़ों की छँटनी, जांच और उन्हें व्यवस्थित कर डाटाबेस में उनकी प्रविष्टि करना।
- निर्धारित प्रश्नावली और पाण्डुलिपि आंकड़ा प्रपत्र के माध्यम से भारत के बाहर भारतीय पाण्डुलिपियों के संकलन के प्रलेखन को प्रोत्साहन

आँकड़ा प्रसंस्करण :

सूचना संगृहीत करने के बाद एम.आर.सी. अथवा एम.पी. सी. पर उसकी प्रविष्टि मैनुस ग्रंथावली सॉफ्टवेयर में की जाती है और अंततः उस सूचना को मिशन के पास भेजा जाता है जिसकी विभिन्न क्षेत्र के विद्वान जांच करते हैं।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस भारतीय पाण्डुलिपियों का अपने तरह का पहला ऑनलाइन सूचीकरण है। ऐसा विभिन्न संस्थाओं द्वारा अतीत में पाण्डुलिपि प्रलेखन के विभिन्न प्रयासों के कारण संभव हुआ। मिशन के आंकड़े पत्र के माध्यम से प्रलेखित प्रत्येक पाण्डुलिपि से जुड़ी सूचना के विभिन्न पहलू सूची में अंकित होते हैं, यथा- शीर्षक, टिप्पणी, भाषा, लिपि, विषय, उपलब्धता स्थान, पृष्ठों की संख्या, चित्र, लेखन, तिथि आदि। समेकित पोर्टल के रूप में इसे लेखक, विषय जैसी श्रेणियों से खोजा जा सकता है।

भारत के संपन्न बौद्धिक विरासत के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाने के साथ-साथ डाटाबेस भावी पीढ़ी के लिए पाण्डुलिपियों को संरक्षित करने, परिरक्षित करने, सांख्यिकी कृत करने, उन तक पहुंच को बढ़ावा देने और सुरक्षित रखने की दिशा में भविष्य में नीति निर्माण करने को प्रोत्साहित करेगा।

आंकड़ा संग्रह विवरण

वर्ष	प्राप्त आंकड़े	अनुरक्षित आंकड़े
2003-2004	88,569	88,569
2004-2005	2,02,563	2,91,132
2005-2006	7,70,111	10,61,243
2006-2007	7,03,196	17,64,439
2007-2008	8,13,151	25,77,590
2008-2009	2,76,271	28,53,561
2009-2010	2,14,114	30,67,975
2010-2011	2,15,442	32,79,028
2011-2012	21,549	34,94,520
2012-2013	1 94 749	36,89,269
2013-2014	1,56,779	38,46,048

आंकड़ा प्रसंस्करण विवरण (2013-2014)

क. सं.	श्रेणी	31 मार्च, 2013 तक की स्थिति	31 मार्च, 2014 तक की स्थिति
1.	इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में उपलब्ध कुल आंकड़े	27,30,000	28,68,000
2.	पृष्ठ के रूप में प्राप्त कुल आंकड़े	9,58,000	9,78,000
3.	कुल संपादित आंकड़े	30,48,000	31,90,000
4.	वेबसाइट पर जारी कुल आंकड़े	30,03,000	31,23,000

एम.आर.सी. का योगदान

क्र.सं	एम.आर.सी.के नाम	31 मार्च 2013 तक प्राप्त कुल आंकडे	2013-14 में प्राप्त आंकडे	31 मार्च 2014 तक प्राप्त कुल आंकड़े
1.	अखिल भारतीय संस्कृत परिषद महात्मा गांधी मार्ग हजरतगंज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश	29,950	4,809	34,759
2.	आनंदआश्रम संस्था, 22 बुधवार पीठ, पुणे, महाराष्ट्र - 411 002	56,147	11	56,158
3.	आन्ध्रप्रदेश सरकार प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय एवम् शोध संस्थान, जामा-ए-ओसमानिया, ओसमानिया विश्वविद्यालय परिसर , हैदराबाद, आन्ध्रप्रदेश-500007	24,934	9,631	34,547
4.	बी.सी.गुप्ता मेमोरियल लाइब्रेरी, गुरुचरण कॉलेज, सिल्चर, असम - 788004	602	0	602

क्र.सं	एम.आर.सी.के नाम	31 मार्च 2013 तक प्राप्त कुल आंकडे	2013-14 में प्राप्त आंकडे	31 मार्च 2014 तक प्राप्त कुल आंकड़े
5.	भाई बीर सिंह साहित्य सदन, भाई बीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट नयी दिल्ली-1	214	0	214
6.	भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, दक्कन जिमखाना, पुणे , महाराष्ट्र-411037	71,544	276	71,820
7,	बी.एल. प्राच्यविद्या संस्थान, विजय वल्लभ स्मारक परिसर, 20 वां के एम, जी.टी.कर्नाल रोड, पोस्ट - अलीपुर, दिल्ली-36	1,689	0	1,689
8.	केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान चोग्लामसार, लेह, लद्दाख, जम्मू-कश्मीर -194001	9,242	0	9,242
9.	इतिहास विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर, त्रिपुरा वेस्ट	0	0	0
10.	संस्कृत विभाग, एच.एन.बी.गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौढ़ी गढ़वाल, उत्तराखंड - 246001	2340	0	2,340
11.	संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र-136119	29,454	4,878	34,332
12.	तमिल विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नै, तमिलनाडु	5,222	0	5,222
13.	राज्य पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय निदेशालय, स्टोन बिल्डिंग, पुराना साचिवालय, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर -190001	36,293	2,708	39,001
14.	डॉ. हरिसिंह गौड़ विश्वविद्यालय, गौड़नगर, सागर, म.प्र.-470003	58,173	0	58,173
15.	फ्रेंच संस्थान पुदुच्चेरी, 11, सेंटलुई स्ट्रीट , पीबी-33, पुदुच्चेरी 605001	58,892	3,572	62,464
16.	सरकारी प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय, चेन्नै, तमिलनाडु	18,110	6000	24,110
17.	हिमाचल कला, संस्कृति एवम् भाषा अकादेमी, क्लिफ एंड इस्टेट , शिमला, हिमाचल - 171001	87,547	13,696	1,01,243
18.	प्राच्य अध्ययन संस्थान, महर्षि कार्वे रोड, नौपाड़ा, थाने वेस्ट, महाराष्ट्र	2,800	0	2,800
19.	ताय अध्ययन एवं शोध संस्थान, मोरानहाट, जिला- शिबसागर, असम	2,199	3,781	5,980
20.	कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगरम्, दरभंगा, बिहार- 846 004	10,403	0	10,403
21.	कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी, विद्यारण्य, हॉस्पेट तालुक, जिला - बेल्लाड़ी, कर्नाटक - 583276	56,777	0	56,777
22.	कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, बाघला भवन, सितलवाड़ी, माण्डा रोड, रामटेक, महाराष्ट्र-441106	12,306	0	12,306
23.	केलाडी संग्रहालय एवं इतिहास शोध संस्थान, पोस्ट-केलाडी, सागर तालुक, जिला- शिमोगा, कर्नाटक	23,461	3,907	27,368

क्र.सं	एम.आर.सी.के नाम	31 मार्च 2013 तक प्राप्त कुल आंकडे	2013-14 में प्राप्त आंकडे	31 मार्च 2014 तक प्राप्त कुल आंकड़े
24.	खुदा बख्श प्राच्य सार्वजनिक पुस्तकालय, अशोक राजपथ, पटना, बिहार -800004	23,144	0	23,144
25.	कृष्णकांत हांडिक पुस्तकालय, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गोपीनाथ बरदलई नगर, असम	26,021	0	26,021
26.	कुंद-कुंद ज्ञानपीठ, 584, एम. जी. रोड, तुकोगंज, इंदौर , म. प्र. - 452 001	57,449	2,983	60,432
27.	लालभाई दलपतभाई प्राच्यविद्या संस्थान, नवरंगपुर, निकट गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात-380 009	64,740	0	64,740
28.	तिब्बती रचना एवम् अभिलेख पुस्तकालय, गंचेन क्यिसांग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश -176215	1,21,731	1,340	1,23,071
29.	महाभारत संशोधन प्रतिष्ठान, 1/ई, तृतीय क्रॉस, गिरिनगर प्रथम फेज, बंगलुरू, कर्नाटक - 560085	59,886	0	59,886
30.	मणिपर राज्य अभिलेखागार, किसामपट, इम्फल, मणिपुर - 795 001	43,527	1,886	45,413
31.	पाण्डुलिपि पुस्तकालय, हार्डिंग भवन, प्रथम तल, सीनेट हाउस, 87/1, कॉलेज स्ट्रीट, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल -700073	1,14,566	5,200	1,19,766
32.	मज़ाहार मेमोरियल संग्रहालय, बाहरीबाद, ग़ाज़ीपुर, उ.प्र.	22,000	13,000	35,000
33.	नव नालंदा महाविहार, नालंदा - 803111	34,762	2,498	37,260
34.	राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान श्रावणबेलगोला, जिला- हासन, कर्नाटक - 573135	70,440	2,083	72,523
35.	ओ.आर.आई. श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरूपति, आंध्रप्रदेश - 517502	36,763	0	36,763
36.	ओ.आर.आई., मैसूर विश्वविद्यालय कौटिल्य सर्कल, मैसूर, कर्नाटक - 570005	78,141	0	78,141
37.	ओ.आर.आई. एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालय, केरल विश्वविद्यालय, तिरूअनंतपुरम, केरल - 695585	79,062	1,334	80,396
38.	उड़ीसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर, उड़ीसा	2,94,076	0	2,94,076
39.	पटना संग्रहालय, विद्यापति मार्ग, पटना, बिहार	13,811	11,006	24,817
40.	राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, पी.डब्ल्यू.डी.रोड, जोधपुर, राजस्थान - 342011	2,38,489	2,600	2,41,089
41.	रामपुर राज़ा पुस्तकालय, रामपुर, उत्तर प्रदेश-244 901	43,300	0	43,300
42.	सलारजंग संग्रहालय, म्युजियम रोड हैदराबाद , आन्ध्रप्रदेश	40,845	0	40,845
43.	संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वनारस , उत्तरप्रदेश - 221001	62,779	4,487	67,266

क्र.सं	एम.आर.सी.के नाम	31 मार्च 2013 तक प्राप्त कुल आंकडे	2013-14 में प्राप्त आंकडे	31 मार्च 2014 तक प्राप्त कुल आंकड़े
44.	सरस्वती, भद्रक विहार, भद्रक, उड़िसा - 756113	1,28,804	3,326	1,32,130
45.	सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान , उज्जैन, बिक्रम विश्वविद्यालय, म.प्र.	38,840	0	38,840
46.	शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र	6,517	1,111	7,628
47.	श्री सत श्रुत प्रभावना न्यास, जूनी मानेकवाड़ी, भावनगर, गुजरात - 364001	81,810	6,223	88,033
48.	श्रीद्वारिकाधीश संस्कृत अकादेमी एवम् प्राच्यविद्या शोध संस्थान , द्वारिका, गुजरात	0	0	0
49.	श्रीचन्द्रशेखरानंद सरस्वती विश्व महाविद्यालय (विश्वविद्यालयवत) कांचिपुरम, तमिलनाडु-631561	40,961	0	40,961
50.	श्रीदेव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, देवस्थान, महादेव रोड, आरा, बिहार-802 301	1,17,114	3,039	1,20,153
51.	तंजौर महाराज सरुोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजौर, तमिलनाडु-613 009	35,914	0	35,914
52.	थुंचन स्मृति न्यास, थुंचन परम्बा, जिला- मामलपुरम, केरल - 676101	1,66,159	9,067	1,75,226
53.	उत्तरांचल संस्कृत अकादमी, हरिद्वार, उत्तराखंड - 249 401	30,000	1,999	31,999
53.	विश्वेश्वरानंद विश्वबंधु संस्कृत एवम् प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, होशियारपुर, पंजाब-146021	27,093	0	27,093
54.	वृन्दावन शोध संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन-281121	52,110	21,097	73,207
55.	जामिया हमदर्द, हमदर्द नगर, नई दिल्ली	3,621	00	00
56.	धरोहर अध्ययन केन्द्र त्रिपुनिथुरा, जिला - एर्णाकुलम, केरल	3,735	0	3,735

संरक्षण

वर्ष 2002 में जब रा.पा.मि. की स्थापना की गई थी उस समय एक तरफ से प्रशिक्षित व्यक्तियों का अभाव था। एक तरफ संरक्षण क्षेत्र में मानक दिशा निर्देशों की कमी थी तो दूसरी तरफ भारतीय पाण्डुलिपियों - संग्रहों की दयनीय स्थिति त्वरित कदम उठाने की मांग कर रहे थे। इन परिस्थितियों में रा.पा.मि. ने कार्य करना आरम्भ किया और एक दश के उपरान्त परिस्थितियां पूरी तरह बदल चुकी है। यद्यपि आत्म संतोष के लिए कोई स्थान नहीं है।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन पाण्डुलिपि की विशाल निधि में निहित ज्ञान की विरासत को सुरक्षित रखने तथा उसके प्रसार के लिए राष्ट्रीय स्तर पर किया गया विश्व में प्रथम समेकित प्रयास हैं। सन् 2002 में अपनी स्थापना काल से रा.पा.मि. ने अपने आदर्श वाक्य ''भविष्य हेतु अतीत के संरक्षण'' को पूरा करने के लिए एक लम्बी यात्रा तय की है।

रा. पा. मि. के संरक्षण प्रयास के तीन आयाम हैं :

1. मूल पाण्डुलिपियों का संरक्षण
2. सांख्यिकीकरण के माध्यम से संरक्षण
3. माइक्रोफिल्म के माध्यम से संरक्षण

मूल पाण्डुलिपियों का संरक्षण निवारक एवं उपचारात्मक विधियों से किया जाता है। इस उद्देश्य के लिए जो मानक प्रविधि अपनायी जाती है, उसका परंपरागत भारतीय विधियों और तैयार हुयी एवं पालन की जा रही आधुनिक वैज्ञानिक विधियों - दोनों के सकारात्मक पक्षों को शामिल किया जाता है। प्राथमिकता के आधार पर देश के विभिन्न स्थानों पर निवारणात्मक एवं उपचारात्मक कार्यशालाओं का आयोजन करने के साथ-साथ पाण्डुलिपि संरक्षण का काम 50 पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। संरक्षण कार्यशालाओं में दो उद्देश्यों को घ्यान में रखा जाता है - पाण्डुलिपि का सरंक्षण और इस क्षेत्र में प्रशिक्षित मानव संसाधन का विकास करना। संरक्षण की तुरंत आवश्यकता को महसूस करते हुए रा. पा. मि. ने पाण्डुलिपि संरक्षण को व्यापक स्तर पर प्रारंभ किया है। इन उपायों के साथ ही रा. पा. मि. ने अपने नयी दिल्ली स्थित मुख्यालय में एक प्रयोगशाला प्रारंभ की है। यहां पर छः सुप्रशिक्षित संरक्षक निवारक एवम् उपचारात्मक उपायों द्वारा महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के सरंक्षण को मूर्त रूप दे रहे हैं।

वर्ष 2013-2014 के दौरान आयोजित कार्यशाला

क्र.स.	तिथि	कार्यशाला के नाम	सहयोगी संस्थान के नाम एवम् स्थान	संरक्षित पृष्ठों की कुल संख्या
1.	11-15 नवम्बर, 2013	निवारक संरक्षण कार्यशाला	मणिपुर राज्य अभिलेखागार, कैशाम्पात, इम्फाल - 795001	250
2.	18-12 फरवरी, 2014	निवारक संरक्षण कार्यशाला	आन्ध्रप्रदेश राज्य अभिलेखागार एवं शोध संस्थान हैदराबाद	1500
3.	8-13 मार्च, 2014	निवारक संरक्षण कार्यशाला	पटना संग्रहालय विद्यापति मार्ग पटना	225

क्र.स.	तिथि	कार्यशाला के नाम	सहयोगी संस्थान के नाम एवम् स्थान	संरक्षित पृष्ठों की कुल संख्या
4.	10-15 मार्च, 2014	निवारक संरक्षण कार्यशाला	कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ 584 एम.जी. रोड तुकोगंज, लखनऊ	2000
5.	2 सितम्बर-8 अक्टूबर, 2014	उपचारात्मक संरक्षण कार्यशाला	इनटाक् आई सी आई ओडिसा कला संरक्षण केन्द्र, भुवनेश्वर ओडिशा	.
6.	17 फरवरी-15 मार्च, 2014	उपचारात्मक संरक्षण कार्यशाला	इनटाक् लखनऊ, उत्तरप्रदेश	.

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों का योगदान

क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	संरक्षित पृष्ठों की कुल संख्या
1.	ए आई टी आई एच वाई ए, प्लाट न. 4/330, प्रथम तल, पोस्ट- शिशुपाल गडा(नजदीक गंगुआ पुल, पुरी रोड), भूवनेश्वर-2 , उड़िशा	148	24,906	55	2,976	27,882
2.	अकलंक शोध संस्थान, अकलंक विद्यालय संगठन,बसंत विहार, कोटा, राजस्थान	141	15,951	24	7362	23,313
3.	आंध्रप्रदेश राज्य अभिलेखागार एवम् शोध संस्थान, तारनाका, हैदराबाद-7,आंध्रप्रदेश	29	41,773	20	27,843	69,616
4.	भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, दक्कन जिमखाना, पुणे, महाराष्ट्र - 411037	11	1,859	11	871	2,730
5.	केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान,चोग्लामसार लेह(लद्दाख), जम्मू-कश्मीर - 194001	2	509	2	509	1,018
6.	केन्द्रीय पुस्तकालय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, उत्तरप्रदेश	3593	91,783	41	3,033	94,816
7.	भाषा एवम् संस्कृति विभाग, हिमाचल राज्य संग्रहालय, चौड़ा मैदान, शिमला, हिमाचल प्रदेश - 171004	417	31,673	37	5,371	37,044
8.	संस्कृत, पाली एवम् प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा	.	25,150	.	1256	26,406
9.	दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन नसीम भट्टारकजी, स्वामी रामसिंह मार्ग, जयपुर, राजस्थान- 302004	1,125	27,635	61	7,503	35,138
10.	रामपुर राज़ा पुस्तकालय, हामिद मंजिल, किला रामपुर, रामपुर, उत्तर प्रदेश		8,244	16	2,901	11,145

क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	संरक्षित पृष्ठों की कुल संख्या
11.	कृष्णकांत हॉडिक पुस्तकालय, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गोपीनाथ बरदलई नगर, असम	292	19911	13	721	20632
12.	आई सी के पी ए सी, इनटैक, चित्रकला परिषद , कला संरक्षण केन्द्र, कुमार कुरूप मार्ग, बंगलुरु , कर्नाटक - 560001	482	54,421	96	10,954	65,375
13.	भारतीय संरक्षण संस्थान परिषद, एच आई जी - 44, सेक्टर - ई, अलीगंज स्कीम , लखनऊ, उत्तर प्रदेश - 226024	.	.	185	6727	6727
14.	इनटैक आई सी आई, उड़िशा कला संरक्षण केन्द्र, उड़िशा राज्य संग्रहालय परिसर, भुवनेश्वर, उड़िशा - 751014	77	8,913	159	15,953	24,506
15.	केलादी संग्रहालय एवं इतिहास शोध संस्थान , पो. - केलादी, सागर तालुक, जिला - शिमोगा, कर्नाटक - 577401	271	28,031	613	92,635	1,20,666
16.	भोगीलाल लहरचन्द इंस्ट्टीच्यूट ऑफ इण्डोलोजी, जी.टी. करनाल रोड, अलीपुर, दिल्ली	140	7,751	98	4,353	12,104
17.	कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, 584,एम.जी. रोड तुकोगंज, इंदौर - 452 001	1703	1,21455	2	307	1,21,762
18.	मणिपुर राज्य अभिलेखागार, केईसमपट, इम्फल , मणिपुर . 795 001	52	27,553	131	2433	29,986
19.	पाण्डुलिपि पुस्तकालय, हार्डिंग भवन, प्रथम तल, सीनेट हाउस, 87/1 कॉलेज स्ट्रीट, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700073	1277	26,313	.	.	23,313
20.	मजहर स्मृति संग्रहालय, बहारियाबाद, ग़ाज़ीपुर, उत्तर प्रदेश	305	55,081	.	.	55,081
21.	नागार्जुन बौद्ध फाउन्डेशन, 18 अँधियारी बाग, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश - 273001	1,281	20,928	.	.	20,928
22.	राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान, श्रीदेवल तीर्थम्, श्रावणबेलगोला , जिला-हासन, कर्नाटक	393	67,777	.	.	67,777
23.	प्राच्य शोध संस्थान, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरूपति, आन्ध प्रदेश-517507	167	15,261	55	1028	16,289
24.	प्राच्य शोध संस्थान एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालय, केरल विश्वविद्यालय, तिरूअनंतपुरम, केरल-695585	955	1,94,713	955	21,540	2,16253

क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	संरक्षित पृष्ठों की कुल संख्या
25.	उड़िशा राज्य संग्रहालय, उड़िशा	162	37,011	10	528	37,539
26.	पटना संग्रहालय, विद्यापति मार्ग, पटना, बिहार	2,254	60,732	102	2029	62,761
27.	हिमालयन सोसाइटी धरोहर एवं कला संरक्षण, मार्कण्डेय हाउस, रानीबाग, नैनीताल - 263126, उत्तराखण्ड	353	16,583	256	7,775	24,358
28.	संभलपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय, संभलपुर विश्वविद्यालय, बुर्ला, उड़िशा - 768001	205	1,46,266	35	14,684	1,60,950
29.	श्रीदेव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, देवाश्रम, महादेव रोड, आरा, बिहार-802301	356	56,230	60	4,607	60,837
30.	श्रीवादीराज शोध फाउंन्डेशन, श्रीपुथिगे मठ, कार स्ट्रीट, उडूपी, कर्नाटक	461	37,356	162	4,110	41,466
31.	थुंचन स्मृति न्यास, थुंचन परम्बू, जिला-मामलपुरम, केरल - 676 101	78	22,033	.	.	22,033
32.	त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर, त्रिपुरा वेस्ट, त्रिपुरा	.	13,071	11	690	13,761
33.	पाण्डुलिपि विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कन्नड़ विश्वविद्यालय, हाम्पि, कर्नाटक	221	20,990	223	25ए409	46,399
34.	वृन्दावन शोध संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन , उ.प्र . 281121	2767	16,227	277	52,187	68,414



Participants at the Curative Conservation Workshop, held at NRLC, Lucknow (17th Feb. – 15th March, 2014)

रा.पा.मि. दिल्ली प्रयोगशाला में 1 अप्रैल 2013 से 31 मार्च 2014 में संरक्षण

रा.पा.मि. ने नई दिल्ली स्थित कार्यालय में एक संरक्षण प्रयोगशाला की स्थापना की है (11 मानसिंह रोड, तीसरी मंजिल, नई दिल्ली 110001)। प्रयोगशाला ने 7 सितम्बर 2011 से कार्य आरम्भ कर दिया है। वर्ष 2013-14 के अंतर्गत रा.पा.मि. प्रयोगशाला में संरक्षक समूह ने 19,197 फोलिओ पर कार्य किया है। (11,982 फोलियो रोधात्मक रूप में और 7215 फोलिओ उपचारात्मक रूप में)। किये गये कार्य का विवरण इस प्रकार है।

क्रम सं.	भण्डार कर्ता	पाण्डुलिपि प्राप्त	कुल फोलियो	कार्य की स्थिति 1 अप्रैल, 31 मार्च 2014
1.	के के मिश्र	40 पेपर पाण्डुलिपि	1099 फोलियो	सम्पूर्ण
2.	जमिया - हन्सोत-भरूच्च, गुजरात	18 पेपर पाण्डुलिपि	2170 फोलियो	सम्पूर्ण
3.	रा.पा.मि., नई दिल्ली	8 पेपर पाण्डुलिपि	287 फोलियो	सम्पूर्ण
4.	प्रो. अब्दुल् हक्, नई दिल्ली	2 पेपर पाण्डुलिपि	287 फोलियो	सम्पूर्ण
5.	श्री राजेश आचार्य, बनारस	1 पेपर पाण्डुलिपि	172 फोलियो	सम्पूर्ण
6.	प्रो. शेरिफ् कस्मि, नई दिल्ली	1 पेपर पाण्डुलिपि	115 फोलियो	सम्पूर्ण
7.	प्रो. एम डी अफजल - उर रहमान, नोएडा	60 पेपर पाण्डुलिपि	25,000 फोलियो	जारी है
8.	ओम प्रकाश मित्तल, पंजाब	1 पेपर पाण्डुलिपि	409 फोलियो	जारी है
9.	प्रो. लोकेश चन्द्रा, नई दिल्ली	2 पेपर पाण्डुलिपि	88 फोलियो	जारी है



Conservators at NMM Lab., 11 Mansingh Road, New Delhi

सांख्यिकीकरण

पाण्डुलिपि के सांख्यिकीकरण का तात्पर्य है शब्द सम्पदा रूपी विरासत का परीक्षण और प्रलेखन करना। वर्तमान समय में सांख्यिकीकरण एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरकर सामने आया है। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण जहां एक ओर मूल पाठ के परिरक्षण और प्रलेखन की आशा बंधती है वहीं दूसरी ओर इसी के साथ विद्वानों और शोधार्थियों के लिए उसकी उपलब्धता पहले की तुलना में अधिक सुलभ हो गई है। सन् 2004 में मिशन ने सांख्यिकीकरण की एक पायलट परियोजना की शुरूआत की जिसका उद्देश्य संपूर्ण देश के विभिन्न पाण्डुलिपि भंडारों का सांख्यिकीकरण था। सन् 2006 में पायलट परियोजना पूरी हो गई। इसके उपरांत नई परियोजनाओं की शुरूआत हुई। जिनका लक्ष्य देश के महत्वपूर्ण पाण्डुलिपि संकलनों का सांख्यिकीकरण था। नई सांख्यिकीकरण परियोजनाओं के लिए मिशन पाण्डुलिपियों हेतु एक सांख्यिकीकरण संसाधन आधार तैयार करना चाहता है।

डिजिटलीकरण के द्वितीय चरण को सफलतापूर्वक पूरा किया जा चुका है तथा तृतीय चरण में एक तिहाई अनुमानित कार्यो का पूरा किया जा चुका है।

उद्देश्य

- भावी पीढ़ियों के लिए मूल पाण्डुलिपियों का परिरक्षण।
- मूल प्रतियों में छेड़छाड़ किए बिना उन तक विद्वानों और शोधार्थियों की पहुँच और उपयोगिता को प्रोत्साहित करना।
- देश के कुछ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपि संकलनों की सांख्यिकीकृत प्रतियों के संसाधन आधार के रूप में सांख्यिकीकृत पुस्तकालय का निर्माण करना।
- पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण हेतु मानकों और प्रक्रियाओं का निर्माण करना।

प्रविधि

- सांख्यिकीकरण के प्रथम चरण में पायलट परियोजना के अंतर्गत पांच राज्यों में प्राप्त पाण्डुलिपियों की पांच पेटियों पर काम हुआ है।
- द्वितीय चरण के अंतर्गत देशभर में फैले पाण्डुलिपि भण्डारों की महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की अस्सी लाख पृष्ठों का सांख्यिकीकरण किया गया।
- तृतीय चरण के अंतर्गत देशभर में फैले पाण्डुलिपि भण्डारों की महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की अन्य अस्सी लाख पृष्ठों का सांख्यिकीकरण का लक्ष्य रखा गया है।
- सूचियों का सांख्यिकीकरण और नव कैटलोगस कैटलोगरम का सांख्यिकीकरण।
- अभिलेखीय उद्देश्य से सांख्यिकीकृत छवियों से माइक्रोफिल्म तैयार करना।
- भण्डारण एवम् सुविधापूर्वक पहुंच हेतु सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि पुस्तकालयों की स्थापना।

स्कैन की गई छवि हेतु छवि प्रारूप

पाण्डुलिपि के प्रत्येक पृष्ठ के लिए तीन प्रकार की छवियों को उत्पन्न करने की आवश्यकता होती है।

- मास्टर इमेज(मूल अस्वच्छ और असंपीडित)
- क्लीन इमेज (कम क्षयी स्वच्छ छवि)

- पी डी एफ - ए (व्युत्पन्न क्षयी छवि)

इन छवियों का विस्तृत विनिर्देशन

रॉ मास्टर इमेज (मूल सांख्यिकीकृत छवि)

फाइल प्रारूप : टिफ 6.0 अथवा उच्चतर

संपीडन : असंपीडित

स्थानिक रिसॉल्यूशन: 300/600 डी.पी.आई. न्यूनतम 24 ऑप्टिकल बीट्स

संसिकोटा मास्टर: 3000-5000 पिक्सल

विषय अर्द्ध आंकड़े : रा. पा. मि. द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप

फाइल नामकरण : रा. पा. मि. द्वारा यथा विनिर्दिष्ट

क्लिन मास्टर इमेज (स्वच्छ छवि)

फाइल प्रारूप : टिफ 6.0 अथवा उच्चतर

संपीडन : कम क्षय संपीडित

स्थानिक निवेदन: 8'' X 10'' 300 डी.पी.आई. 24 बीट

स्वच्छ मास्टर: 3000-5000 पिक्सल

विषय अर्द्ध आंकड़े : रा. पा. मि. द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप

फाइल नामकरण : रा. पा. मि. द्वारा यथा विनिर्दिष्ट

पी डी एफ - ए इमेज :

फाइल प्रारूप : पी डी एफ

संपीडन : ग्रुप 4 सी.सी.आई.टी.टी. क्षयी संपीडन

स्थानिक रिसॉल्यूशन: 300/600 डी.पी.आई. पर 1024 गुने 768 पिक्सल

विषय अर्द्ध आंकड़े : रा. पा. मि. द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप

फाइल नामकरण : रा. पा. मि. द्वारा यथा विनिर्दिष्ट

नामकरण परिपाटी

छवियों का नामकरण एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जिस पर मिशन ने अत्यंत ही दक्षतापूर्वक कार्य किया है। प्रत्येक सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि को मिशन के इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस में प्रलेखित किया जा चुका है। स्कैन की गई प्रत्येक पाण्डुलिपि के मेटा डाटा (पाण्डुलिपि को वर्णित करने वाली मुख्य सूचना) सूचना के लिए पाण्डुलिपि पहचान संख्या दी गई है(मैनुस आई डी) जिसे मिशन के मैनुस ग्रंथावली सॉफ्टवेयर में सृजित किया गया है। (संस्थान में जहां पाण्डुलिपि रखी जाती है और सांख्यिकीकरण किया जाता है वहां से मैनुस आई डी और अधिग्रहण संख्या रखी जाती हैं, ये प्रत्येक पाण्डुलिपि की सांख्यिकीकृत छवि के नामकरण के आधार होते हैं।) सांख्यिकीकरण छवि के नामकरण के आधार होते हैं उसका मैनुअल आई.डी. तथा उस संस्थान द्वारा दी गई अधिग्रहण संख्या जहां ये पाण्डुलिपियाँ रखी गई है उनकी सांख्यिकीकरण किया जा रहा है।

गुणवत्ता आश्वासन

यह अनिवार्य है कि सांख्यिकीकरण गुणवत्ता नियंत्रण विश्लेषण के विभिन्न चरणों से होकर गुजरे। यह इस बात के सत्यापन के लिए स्वीकृत विधि है कि प्रत्येक प्रस्तुति मानक है। समय और वित्त की सीमा को देखते हुए , इस प्रक्रिया में लागत को कम करने के लिए किसी प्रकार के नूमने तैयार करना अनिवार्य हो जाता है। एन ए आर ए के अनुसार दस छवियां या कुल छवियों के दस प्रतिशत (जो अधिक हो) को गुणवत्ता नियंत्रण से होकर गुजरना चाहिए (यह चयन संपूर्ण संग्रह में से कहीं से भी कर लेना चाहिए)। उचित तो यह होता है कि सभी मुख्य छवियों और उनके व्युत्पन्न के संबंध में गुणवत्ता आश्वासन होना चाहिए, प्रलेखन के प्रत्येक चरण में। इस दौरान निम्नलिखित बिंदुओं पर ग़ौर करना चाहिए -

- छवि के आकार
- छवि का रिशॉल्यूशन
- फाइल प्रारूप

- छवि मोड(अर्थात रंगीन छवि रंगीन रहती है, ग्रे स्केल नहीं)
- बिट डेप्थ
- हाइलाइट और छाया का विवरण
- कुल मान
- धवलता
- कंट्रास्ट
- पैनापन (शार्पनेस)
- हस्तक्षेप
- अभिमुख(ओरिन्टेशन)
- क्रॉप्ड तथा बोर्डर क्षेत्र, छुटे हुए पाठ अंश और पृष्ठ संख्या
- छुटी हुई रेखाएं या पिक्सल
- अधिग्रहण और संक्षिप्तता सहित खराब स्तर का क्षेपक
- पाठ की पठनीयता
- फाइल नाम

समग्रता, कार्य की दक्षता और परियोजना के लक्ष्य को पूरा करने के लिए कुल प्राप्ति पर ध्यान देना चाहिए। एन. ए. आर. ए. की संस्तुति है कि एक प्रतिशत से अधिक पाण्डुलिपि अंश गुणवत्ता मानक के अनुरूप नहीं होने पर उन पर पुनः काम करने की आवश्यकता होती है। मिशन में गुणवत्ता नियंत्रण मानदंड अच्छी तरह से परिभाषित है। खुदा बख्श ओरियन्टल पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा शुरू की गई प्रक्रिया, गुणवत्ता नियंत्रण मानक को निर्धारित करने के लिए मिशन ने एक बैठक आयोजित की। इसमें सांख्यिकीकरण और इमेजिंग प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सांख्यिकीकरण एजेंसी द्वारा उपलब्ध करायी गई सामग्री की जांच करने का सर्वोत्तम और सस्ता तरीका विशेषज्ञ द्वारा यादृच्छिक जांच करना है। मिशन अंतिम सुपुर्दगी से पहले गुणवत्ता नियंत्रण के लिए सांख्यिकीकरण स्थल पर विशेषज्ञों को भेजता है और पर्यवेक्षण करता है।

उपलब्धता सुविधा मुहैया कराने की दृष्टि से सांख्यिकीकरण के लाभ और मानक परिरक्षण के रूप में सांख्यिकीकरण से होने वाली हानि को स्वीकार करते हुए , यह पूर्व के अनुभवों से स्पष्ट है कि विविध प्रस्तुतियों को होने देने के लिए मुख्य गुणवत्ता नियंत्रण स्तर पर सांख्यिकीकरण सबसे कम लागत वाली विधि है(प्रिंट, अधिग्रहण छवि और संक्षिप्त प्रस्तुति के लिए) जिसे दीर्घकालीन अवधि में मूल प्रलेखन के विकल्प के रूप में किया जा सकता है।

सांख्यिकीकरण परियोजना के अंतर्गत संस्थाएं

पायलट परियोजना तथा द्वितीय चरण के अंतर्गत देशभर की निम्नलिखित संस्थाओं में पाण्डुलिपियों का सांख्यिकीकरण किया गया :

1. केन्द्रीय अनुसंधान पुस्तकालय, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर
2. कुट्टिअट्टम पाण्डुलिपि, केरल
3. सिद्ध पाण्डुलिपि, तमिलनाडु
4. उड़िशा राज्य संग्रहालय, भूवनेश्वर, उड़िशा
5. चुनी हुई जैन पाण्डुलिपियां
6. कृशणकांत हांडिक पुस्तकालय, गुवाहाटी
7. हरि सिंह गौड़ विश्वविद्यालय, सागर
8. आनंद आश्रम संस्था, पुणे
9. हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी, शिमला
10. वृंदावन शोध संस्थान, वृंदावन
11. एशिया अध्ययन संस्थान, चेन्नै
12. फ्रांसीसी संस्थान, पुदुच्चेरी
13. कुंद कुंद ज्ञानपीठ, इंदौर
14. भोगीलाल लहरचंद भारतविद्या संस्थान, दिल्ली
15. अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ

रा. पा. मि. अपने तृतीय चरण के अंतर्गत निम्नलिखित पाण्डुलिपि भण्डारों में पाण्डुलिपि संकलनों का सांख्यिकीकरण कर रहा है :

1. राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, राजस्थान
2. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान , इलाहाबाद
3. भारत इतिहास संशोधन मंडल, पुणे
4. एच. एम. एस. केन्द्रीय पुस्तकालय, जामिया हमदर्द, नयी दिल्ली
5. बी. वी. बी. आई. एस. एंड आई. एस. , पंजाब विश्वविद्यालय, होशियारपुर

सांख्यिकीकरण : प्रथम चरण (2005-2007)

क्र.स.	संस्थान का नाम	पाण्डुलिपियों की संख्या	पत्र संख्या	राज्य
1.	ओडिशा राज्य संग्रहालय	1,749	3,50,000	ओडिशा
2.	जैन पाण्डुलिपियाँ, लखनऊ (ओ.पि. अग्रवाल संकलन)	180	42,951	उत्तर प्रदेश
3.	कुटिअट्टम पाण्डुलिपियाँ, केरल	340	38,260	केरल
4.	ओरिएंटल अनुसंधान पुस्तकालय, जम्मू कश्मीर	10,147	19,73,816	जम्मू कश्मीर
5.	अल्मा इकबाल पुस्तकालय, जम्मू कश्मीर	365	97,648	जम्मू कश्मीर
6.	श्री प्रताप सिंह पुस्तकालय, जम्मू कश्मीर	74	28,536	जम्मू कश्मीर
7.	सिद्ध पाण्डुलिपियाँ, चेन्नई	1,938	78,435	तमिलनाडू
	कुल संख्या	**14,793**	**26,09,646**	

सांख्यिकीकरण : द्वितीय चरण (2007-2012)

क्र.स.	संस्थान का नाम	पाण्डुलिपियों की संख्या	पत्र संख्या	राज्य
1.	कृष्णकान्त, पुस्तकालय, गुवाहाटी	2,091	1,57,013	असम
2.	ओडिशा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर	5,983	14,01,976	ओडिशा
3.	डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर	1,010	1,17,063	मध्य प्रदेश
4.	आनन्दाश्रम संस्था, पुणे	7,939	9,21,667	महाराष्ट्र
5.	भारत इतिहास संशोधन मण्डल, पुणे	4,429	6,60,730	महाराष्ट्र
6.	फ्रेंच संस्थान, पंडिचेरी	506	1,70,629	तमिलनाडु
7.	एसिआन अद्ययन संस्था, चेन्नई	500	34,505	तमिलनाडु
8.	कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर	7,506	11,56,373	मध्य प्रदेश
9.	भोगिलाल लेहरचन्द भारतीय विद्या संस्थान, दिल्ली	22,907	10,64,900	दिल्ली
10.	अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ	12,887	4,58,376	उत्तर प्रदेश
11.	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, इलाहाबाद	1,545	1,65,220	उत्तर प्रदेश
12.	हिमाचल अकादमी, शिमला	225	55,751	हिमाचल प्रदेश
13.	वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन	22,375	15,61,864	उत्तर प्रदेश
	कुल संख्या	**89903**	**79,26,607**	

सांख्यिकीकरण : तृतीय चरण (20012-2014)

क्र.स.	संस्थान का नाम	पाण्डुलिपियों की संख्या	पत्र संख्या	राज्य
1.	भारत इतिहास संशोधन मण्डल, पुणे	22,873	14,50,375	महाराष्ट्र
2.	आनन्दाश्रम संस्था, पुणे	6,734	3,27,484	महाराष्ट्र
3.	भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे	35	22,679	महाराष्ट्र
4.	इलाहाबाद संस्कृत संस्थान, वाराणसी	35,020	25,76,879	उत्तर प्रदेश
5.	जामिया हमदर्द, नई दिल्ली	4,200	10,10,273	दिल्ली
6.	वि.वि.बी.आई.एस., होशियारपुर	1,500	1,14,376	पंजाब

क्र.स.	संस्थान का नाम	पाण्डुलिपियों की संख्या	पत्र संख्या	राज्य
7.	ओडिशा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर	3,175	6,03,950	उड़िशा
8.	रा. पा. मि. संकलन, नई दिल्ली	562	1,21,329	दिल्ली
9.	राजस्थान प्राच्य अनुसंधान संस्थान	28,813	17,92,864	राजस्थान
	कुल	**1,06,697**	**80,39,407**	

अन्य गतिविधियां

1. सांख्यिकीकरण पाण्डुलिपि पुस्तकालय

रा.पा. मि के प्रमुख उद्देश्य भारतीय संख्यिकीकरण पाण्डुलिपि लाइब्रेरी की स्थापना करना है जो कि सृजनता एवं मानवीय ज्ञान के रूप में उपलब्ध देश की पाण्डुलिपियों तक सहज रूप में पहुंच को बढ़ावा देगी। इस मिशन को साकार करने के लिए प्रथम चरण के अंतर्गत सांख्यिकीकृत पुस्तकालय की स्थापना करना है जिसमें एक स्थान पर मुख्य रूप से भारतीय भाषाओं की महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की सांख्यिकृत प्रतियां उपलब्ध हो सके। इस सांख्यिकीकृत पुस्तकालय में सभी प्रकार के ज्ञान एवं सांख्यिकीकृत सामग्री एक साथ उपलब्ध रहेगा। इस पुस्तकालय के बनने से हम बहुत जल्द यह अपेक्षा.करेंगे कि विज्ञान, कला, संस्कृति, परंपरागत चिकित्सा पद्धति, वेद, तन्त्र और अन्य विषयों में भारतीय सांख्यिकीकृत पुस्तकालय स्थापित होने के प्रयास प्रारंभ हो जाएंगे।

31 मार्च 2014 तक रा.पा. मि 1,85,75,660 पृष्ठों में व्याप्त डिजिटल तस्वीरें, डी वी डी एवं हार्ड डिस्क का संग्रह किया है। इसके अतिरिक्त डिजिटाइजेसन कार्य प्रगति पर होने के कारण भविष्य में भी प्रचुर सामग्री प्राप्त होगी। यदि उपलब्ध डाटा को डीवीडी/हार्ड डिस्क में रखा जाए तो सम्बद्ध डाटा के करप्ट होने की संभावना है। डीवीडी/हार्ड डिस्क की आयु 5 वर्ष से अधिक नहीं होती। डाटा की सुरक्षा और इसकी सुगम उपलब्धता की दृष्टि से डाटा के संरक्षण की आशा से एक सर्वर की आवश्यकता है। यदि पाण्डुलिपियों की सामग्री की डिजिटाइज्ड प्रति को सर्वर में उपयुक्त तरीके से न रखा जाए तो डाटा के नुकसान होने की संभावना हैं। डिजिटल पाण्डुलिपि पुस्तकालय में सभी प्रकार की डिजिटल तस्वीरों के भण्डारण के लिए एक 100 टीबी के डाटा सर्वर का अधिग्रहण किया जाना है जो विद्वानों के शोध संबंधी उद्देश्यों के लिए पाण्डुलिपि डाटावेस के साथ जोड़ा जाएगा।

रा.पा.मि. इस ज्ञान आधार को सुलभ करने के लिए नयी दिल्ली में प्रारंभ 10 लोगों द्वारा उपयोग किए जाने की सुविधा वाले सांख्यिकीकृत पुस्तकालय की स्थापना की योजना बना रहा है जिसे बाद में एक सौ लोगों के उपयोग करने की क्षमता वाले पुस्तकालय के रूप में अद्यतन किये जाने की संभावना है। प्रयोक्ता पी सी के माध्यम से आंकड़ा केन्द्र से आंकड़ा प्राप्त कर सकेगा। भण्डारण सर्वर में प्रत्येक दिन नए आंकड़े जोड़े जाने की संभावना है। यह भी आवश्यकता है कि आंकड़ा भण्डारण, अतिरेक से बचने, संयोग समय तथा उपलब्धता के मामले में अंतर्राष्ट्रीय मानक के अनुरूप हो।

ऐसा भी अपेक्षित है कि इस पुस्तकालय की स्थापना के साथ ही तुरंत इसमें पूरी क्षमता न उपलब्ध हो, शुरू में इसमे सीमित संख्या में प्रयोक्ता इसका इस्तेमाल कर पाएं और इसकी भण्डारण क्षमता भी सीमित हो। हालांकि ऐसा प्रावधान हो कि भविष्य में 600 टी बी का भण्डारण हो सके और 100 प्रयोक्ता इसका एक साथ उपयोग कर सकें।

4. सांख्यिकीकरण से माइक्रोफिल्म निर्माण

मिशन ने महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की 1.85 करोड़ सांख्यिकीकृत छवियों का संग्रह किया है और यह कार्य जारी है। वर्तमान में इन छवियों को डी वी डी में रखा गया है लेकिन दीर्घकाल तक इनके भण्डारण के लिए इनका माइक्रोफिल्म बनाना आवश्यक है। दीर्घकाल तक आंकड़ों की सुरक्षा के लिए यह लाभकारी होगा (ये आंकड़े 500

वर्षों तक सुरिक्षित रह सकते हैं)। भौतिक क्षति से आंकड़ों को बचाना उपयोगी होता है। माइक्रोफिल्म का निर्माण सांख्यिकीकृत आंकड़ों के अभिलेखागारीय महत्त्व और भावी पाढ़ियों द्वारा उपयोग की दृष्टि से लाभदायी होगा।

रा.पा.मि. का लक्ष्य है कि सांख्यिकीकृत आंकड़ों का एक ऐसा अभिलेखागार तैयार किया जाए जिससे प्रयोक्ताओं को सदियों तक पाण्डुलिपियों से अपेक्षित सूचनाएं प्राप्त हो सकें। वर्तमान में माइक्रोफिल्म ही सर्वाधिक अवधि तक आंकड़ों के अभिलेखागारीय भण्डारण के सबसे उपयुक्त साधन है।

सांख्यिकीकरण की भावी योजना

1. मार्च 2017 तक विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 4 लाख पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण का लक्ष्य रखा गया है।
2. सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि आंकड़ों की प्रति को सर्वर में रखने की आवश्यकता है। सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपियों के भण्डारण के लिए 100 टी बी के आंकड़ा सर्वर की खरीद की जाएगी।
3. सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि पुस्तकालय के निर्माण का कार्य प्रगति पर है और विद्वानों द्वारा शोध कार्य हेतु इस पुस्तकालय को पाण्डुलिपि डाटाबेस से जोड़ दिया जाएगा।

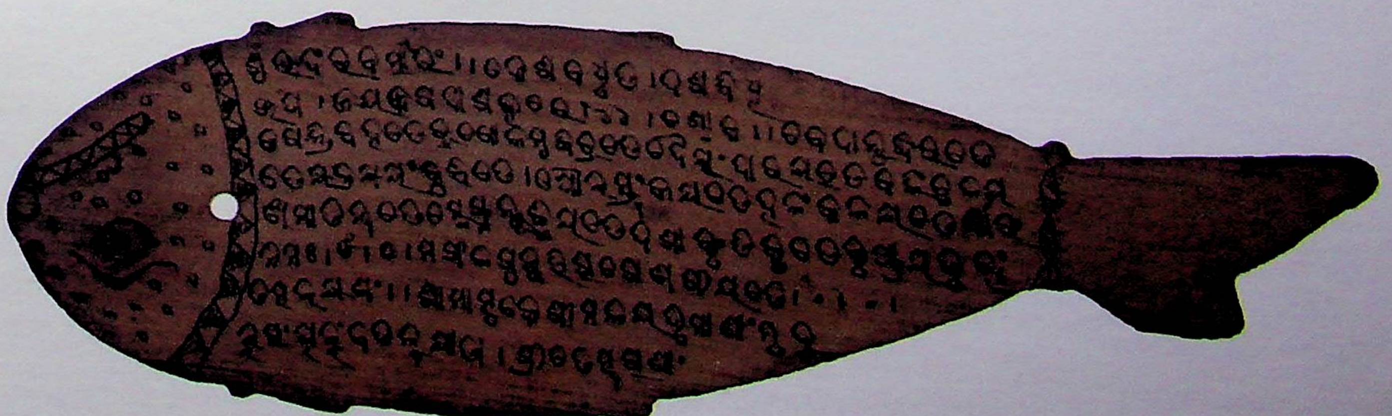
जन सम्पर्क कार्यक्रम

रा.प्रा.मि. केवल भारतीय पाण्डुलिपियों का पता लगाना, सूचीकरण और संरक्षण मात्र ही नहीं चाहता अपितु अभिगमन वृद्धि, जागरूकता वृद्धि और शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इनमें प्राप्त ज्ञान के उपयोग को प्रोत्साहित करना भी इसका उद्देश्य है। मिशन चाहता है कि पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान के अनेक पहलुओं को व्याख्यानों, सेमिनार, एवं विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए विशेष रूप से तैयार किये गये कार्यक्रमों के आदार से जन साधारण तक पहुंचाया जाये।

मिशन के पास तत्ववोध शीर्षक के व्याख्यानों की एक श्रृंखला है। इसके अतर्गत विभिन्न बौधिक अनुशासनों के प्रतिनिधि विद्वानों को उनके विचारों को लोगों के बीच अभिव्यक्त करने के लिए मिशन आमंत्रित करता है। इस श्रृंखला का प्राथमिक उद्देश्य भारतीय ज्ञान विद्वानों को एक मंच पर लाना है जहां ये विद्वानों अपने विचारों को लोगों के बीच व्यक्त कर सकें और उन सदस्यों जिनकी रूचि इन विषयों में हो, के साथ संवाद कर सकें। जहां तक संभव हो पाया है हमने दिल्ली एवं देश के अन्य भागों में भी इसे एक मासिक व्याख्यान श्रृंखला के रूप में संस्थापित किया है। इसके दौरान मिशन को इण्डोलोजी तथा विशेष रूप से पाण्डुलिपि क्षेत्र में अद्ययनरत विद्वानों को सम्मान प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वक्ताओ द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र का प्रकाशन भी मिशन द्वारा उनकी सहमति से किया जा रहा है।

सम्पर्क कार्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- पाण्डुलिपि के संबंध में परिचर्चा, वाद-विवाद और आलोचना के लिए मंच उपलब्ध करवाना।
- भारत की पाण्डुलिपि विरासत के प्रति लोगों में जागरूकता और समझ बढ़ाना।
- आम आदमी में पाण्डुलिपि के प्रति रूचि, जागरूकता और ज्ञान उत्पन्न करना।



सन् 2013- 2014 में आयोजित संगोष्ठियां		
तिथि	विषय	स्थान
21-23 नवम्बर 2013	अप्रकाशित आर्युवेद पाण्डुलिपियां	एक पी जी ओ एम एल, हैदराबाद
13-15 फरवरी 2014	हरियाणा की पाण्डुलिपि विरासत	श्री गुलजारीलाल नन्द नैतिकता केन्द्र, कुरूक्षेत्र (हरियाणा)
13-15 मार्च 2014	ओडिशा की परिलिक्षित के रूप में भारतीय संस्कृति	श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी (ओडिशा)
19-21 मार्च 2014	वैष्णव सम्प्रदायों की अल्पज्ञात-अज्ञात पाण्डुलिपि सम्पदा"	ब्रज संस्कृत शोध संस्थान, वृन्दावन (उत्तरप्रदेश)
27-29 मार्च 2014	पाण्डुलिपियों के लेंस के माध्यम से लोगों के बीच जागृति करना	डी ए वी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, जलन्धर (पंजाब)
28-30 मार्च 2014	पाण्डुलिपियों में साहित्य के अनुसंधान और महत्व	उर्दू प्रोफेशनल अध्ययन केन्द्र, जम्मू विश्व विद्यालय

तत्वबोध सार्वजनिक व्याख्यान

1. अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ
2. एम पी जी ओ एम एल हैदराबाद
3. केलाडि संग्रहालय, जिला - सिमोग, कर्णाटक
4. श्री लाल बहादुर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
5. रा. पा. मि., नई दिल्ली

प्रदर्शनी

श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, नई दिल्ली

श्री ए वी कॉलेज, जलन्धर (पंजाब)



Director, NMM, Prof. Dipti S. Tripathi addressing the National Level seminar on 'Unpublished Manuscripts on Medicine', held at APGOML & RI, Hyderabad (21st to 23rd November, 2013)

पाण्डुलिपि शास्त्र

भारत की पाण्डुलिपि विरासत अपनी भाषायी और ग्रन्थीय विविधता की दृष्टि से अनुपम है। हालांकि समकालीन अनुसंधान में पाठों में कौशल और विशेषज्ञता में कमी ने पाण्डुलिपि विरासत के अध्ययन और समझ के लिए एक गंभीर संकट उत्पन्न कर दिया है। इस समस्या के निदान के लिए रा. पा. मि. ने भारतीय पाठ और पाण्डुलिपि के अध्ययन में छात्रों और अनुसंधानकर्मियों को प्रशिक्षित करने हेतु एक विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया है। कार्यशालाओं, विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पाण्डुलिपि शास्त्र की शुरूआत करने तथा उच्च अध्ययन में पाण्डुलिपि शास्त्र के लिए छात्रवृत्ति देने के माध्यम से रा. पा. मि. ने प्रत्यक्ष तौर पर पाण्डुलिपि अध्ययन में प्रशिक्षित लोगों का दल बनाने में सहयोग दे रहा है।

सन् 2013- 2014 में पाण्डुलिपि शास्त्र पर आयोजित कार्यशाला

दिनांक	कार्यशाला के नाम	सहयोगी संस्थान एवम् आयोजन स्थल	प्रशिक्षण का विवरण	कुल प्रशिक्षुओं की संख्या
15 मार्च-04 अप्रैल, 2013	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	कश्मीर विश्वविद्यालय, श्री नगर (जम्मू और कश्मीर)	कोफिक, नास्ख, नस्टालिक	46
22 मार्च-11 अप्रैल, 2013	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	पुस्तकालय एवं सूचना विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उत्तरप्रदेश	ब्राह्मी, शारदा, नेवारी	37
24 जून-14 जुलाई, 2013	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	एशियायी अध्ययन संस्थान चेम्मनचेरी, चेन्नई	ब्राह्मी, ग्रंथ, मोदी, वटेलुट्टु	34
04-24 मार्च, 2014	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	श्रीलाल बहादुर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली	ब्राह्मी, शारदा, नेवारी	30
10-24 मार्च, 2014	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन पर उच्च स्तरीय कार्यशाला	श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, केलाडी, केरल	ब्राह्मी, ग्रंथ, तेगेलरी	30
18 अप्रैल-22 मई, 2013	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन पर उच्च स्तरीय कार्यशाला	उर्दू विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई	कोफिक, नास्ख, नस्टालिक	32
06 नवम्बर-11 दिसम्बर, 2013	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन पर उच्च स्तरीय कार्यशाला	प्राच्यशोध संस्थान, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरूपति	ब्राह्मी, ग्रंथ	35

प्रकाशन

अप्रकाशित पाण्डुलिपियों, पाण्डुलिपियों के विवेचनात्मक संस्करणों, संगोष्ठि आलेखों और व्याख्यानों आदि के प्रकाशन पर रा. पा. मि. के कार्यक्रमों में विशेष जोर दिया जाता है। रा. पा. मि. ने प्रारंभिक रूप में अन्य प्रकाशनों के साथ चार प्रकाशनों की श्रृंखला प्रारंभ की है -तत्वबोध (व्याख्यान आलेख), कृतिबोध (विवेचनात्मक संस्करण), समीक्षिका (संगोष्ठि आलेख) और संरक्षिका (संरक्षण संबंधी संगोष्ठि आलेख) । इसके साथ ही अन्य प्रकाशन भी उपलब्ध हैं। अभी तक रा. प. मि. ने तत्वबोध के अंतर्गत चार पुस्तकों का, कृतिबोध के अंतर्गत पाँच पुस्तकों का, समीक्षिका के अंतर्गत पाँच और संरक्षिका के तहत दो पुस्तकों को प्रकाशित किया है।

अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के प्रकाशन को बढ़ावा देने के लिए रा. पा. मि. ने भारत के विभिन्न पाण्डुलिपि भंडारों में उपलब्ध 300 महत्वपूर्ण अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की सूची तैयार की है। 200 और पाण्डुलिपियों के चयन करने के बाद कुल 500 पाण्डुलिपियों की सूची एक समिति को सुपुर्द की जाएगी जो उनमें से 100 पाण्डुलिपियों का चयन करेगी। उसके बाद इन्हें कृतिबोध श्रृंखला के तहत प्रकाशित की जाएगी।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के प्रकाशन

तत्त्वबोधः मासिक व्याख्यान की शुरूआत राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने जनवरी 2005 में की थी। अब यह बौद्धिक बहस और परिचर्चा के एक मंच के रूप में उभर कर आया हैं। भारत में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र में साधनारत विभिन्न विद्वानों ने दिल्ली तथा देश भर के अन्य केंद्रों में सभा को संबोधित किया है तथा श्रोताओं के साथ परिचर्चा की है। मिशन ने इन व्याख्यानों का प्रकाशन तत्त्वबोध नाम से किया है। अभी तक तत्त्वबोध के चार खंडों का प्रकाशन किया जा चुका है।

संरक्षिकाः राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन अपने संपर्क कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों का आयोजन करता है। इन संगोष्ठियों में प्रस्तुत आलेखों को संरक्षिका (संरक्षण से जुड़े) और समीक्षिका (अनुसंधान उन्मुखी) शीर्षक से प्रकाशित किया जाता है। संरक्षिका का प्रथम खंड 'पाण्डुलिपि परिरक्षण की देशी विधि' का प्रकाशन सितम्बर 2006 में किया गया। इसमें 2005 में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के नई दिल्ली मुख्यालय में प्रारंभ संगोष्ठि 'परिरक्षण की देशी विधि और पाण्डुलिपि संरक्षण' की कार्यवाही शामिल है। इस संगोष्ठि में प्रस्तुत आलेखों में पाण्डुलिपि संरक्षण की देशी विधि और तकनीकी के साथ-साथ उन्हें पुनर्जीवित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है क्योंकि यह पाण्डुलिपियों के लिए अधिक लाभकारी हैं। संरक्षिका खंड-2 'पाण्डुलिपि और उनके संरक्षण के लिए दुर्लभ सहायक सामग्री' का प्रकाशन सन् 2010 में किया गया।

समीक्षिकाः समीक्षिका- 1 में 'भारत में बौद्ध साहित्य की विरासत : पाठ और संदर्भ' विषय पर आयोजित संगोष्ठि की कार्यवाही है। इसका आयोजन जुलाई 2005 में कलकत्ता विश्वविद्यालय पाण्डुलिपि संसाधन केंद्र, कोलकाता में किया गया था।

समीक्षिका - 2 में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन द्वारा फरवरी 2007 में महाभारत पर आयोजित संगोष्ठि के आलेखों का प्रकाशन किया गया है। यह खंड 'महाभारत के पाठ और उनमें अंतर : संदर्भ, क्षेत्रीय और मंचीय परंपरा' के ऊपर है।

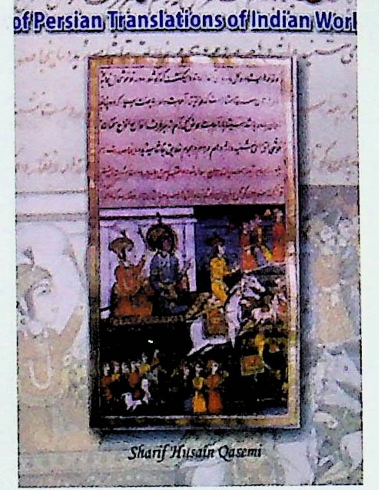
कृतिबोध: मिशन के कृतिवोध के अंतर्गत अज्ञात एवं अप्रकाशित पुस्तकों का प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ किया है। कृतिबोध श्रृंखला में पहला खंड है नारायण मिश्र का वाधूला गृहागमवृत्तिरहस्यम। इसका संपादन प्रो. बृज बिहारी चौबे ने किया। यह ग्रंथ वाधूला गृहसूत्रवृत्ति पर एक काव्यात्मक भाष्य है और जो कि स्वयं वाध ूलागृहसूत्र पर एक संक्षिप्त भाष्य है। इस ग्रंथ में पारिवारिक कर्मकांड और संस्कार विशेषकर गृह और स्मार्त कर्म से संबंधित सूचनाओं का भंडार है। इसमें कथा अरण्यक, वधूलागम और व्रत संग्रह जैसे ग्रंथों का उल्लेख है जो अभी तक अज्ञात थे। इस श्रृंखला में एक अन्य ग्रंथ कृतिबोध खंड-2, आचार्य शिवश्रोण कृत वाधूला श्रौत प्रयोगक्लिप्ति का प्रकाशन किया जा चुका है।

प्रकाशिका: सन् 2012 में रा. पा. मि. ने प्रकाशिका नाम से एक नई श्रृखंला की शुरूआत की। इसके तहत दुर्लभ अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन किया जाता है। इस प्रकाशिका श्रृंखला के 17 खंडों का प्रकाशन अभी तक किया जा चुका है।

कैटेलॉग: मिशन ने फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला में भारतीय पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी सूची प्रकाशित की थी। इन सूचियों में भारतीय पाण्डुलिपियों के कई पहलुओं को स्पर्श किया गया है। यह छः भागों में विभाजित है : मिट्टी से लेकर ताम्र तक जो पाठ अंकित होने वाली विभिन्न आधार सामग्रियों की सूचना देते हैं। 'पाण्डुलिपि का निर्माण' भाग में शलाका और दवात के संबंध में सूचना हैं। 'अध्ययन के क्षेत्र' भाग के अंतर्गत पाण्डुलिपि से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों के संबंध में सूचनाएं हैं। ' अर्चना, समर्पण और पूजा ' भाग के अंतर्गत पावन शब्दों के महत्त्व को दिखाया गया है। पांचवें भाग में ' शब्द और छवि' के अंतर्गत देश की चित्रित पाण्डुलिपियों की छवि पर प्रकाश डाला गया है। अंतिम भाग 'राजकीय आदेश और सरल रेकार्ड' उस तथ्य की ओर संकेत देते हैं कि पाण्डुलिपियां राजा से लेकर आम जन के जीवन के अभिन्न अंग थे।

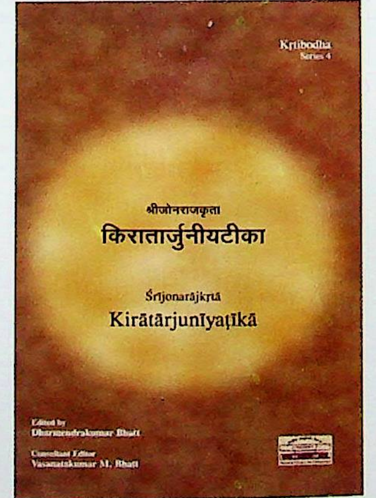
विज्ञाननिधि: मिशन द्वारा तैयार चुनिंदा पाण्डुलिपियों के संग्रह को 'विज्ञाननिधि : भारत की पाण्डुलिपि निधि' नाम से घोषित किया गया है। इसे 2007 में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन पर्यटन और संस्कृति मंत्री श्रीमती अम्बिका सोनी ने जारी की थी। इसी समारोह में दस लाख पाण्डुलिपियों के डाटाबेस को वेब पर डाला गया था। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने पंजाब अध्ययन राष्ट्रीय संस्थान , नयी दिल्ली के साथ मिलकर दुर्लभ गुरु ग्रंथ साहिब पाण्डुलिपियों की चित्रित सूची को सबद गुरु के नाम से प्रकाशित किया है।

2013-14 में प्रकाशित किताबें



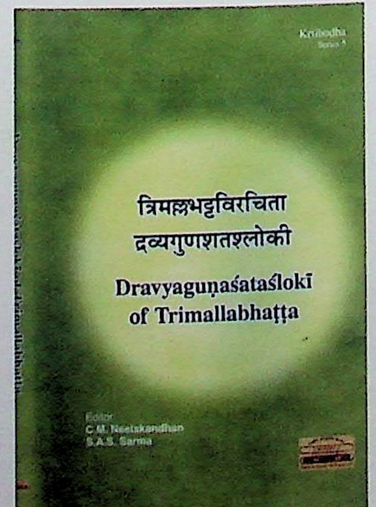
भारतीय कार्यों का फारसी में अनुवाद
का एक वर्णनात्मक सूची

सम्पादकः प्रो. शेरीफ हुसैन कासमी



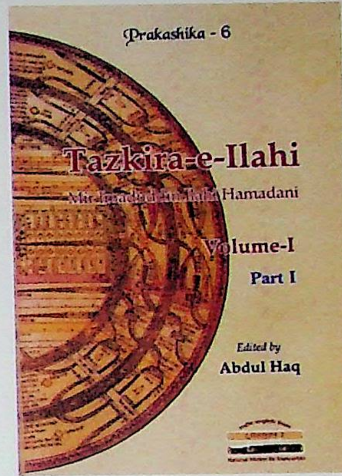
कृतिबोधा - IV रीजोनराजकृताकिरातार्जुनीयटीका

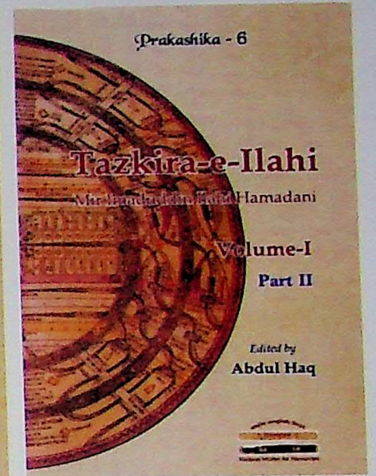
सम्पादकः डॉ. धमेन्द्र कुमार भट्ट, प्रो. बसंत कुमार भट्ट



कृतिबोधा - V त्रिमल्लभट्टविरचिता द्रव्यगुणशतश्लोकी

सम्पादकः डॉ. सी.एम. नीलकंधन, डॉ. एस.ए.एस. शर्मा

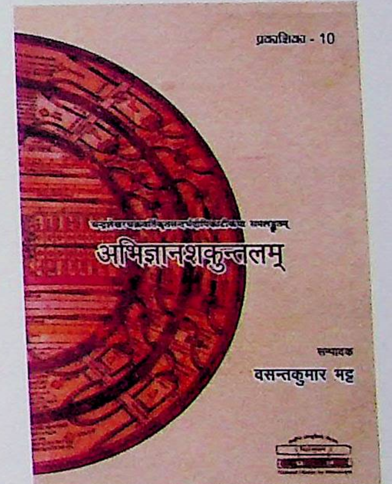




प्रकाशिका भाग VI (खण्ड 1 एवं 2)

मीर इमाद्उद्दीन की तजकिरा-ए-इलाही

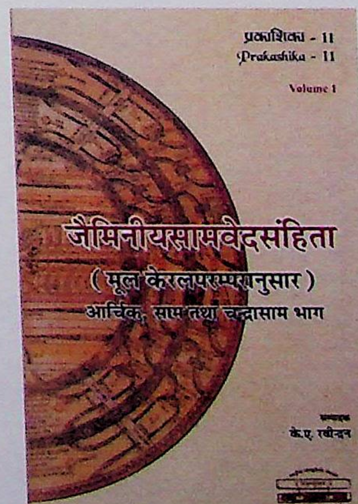
सम्पादकः प्रो. अब्दुल हक

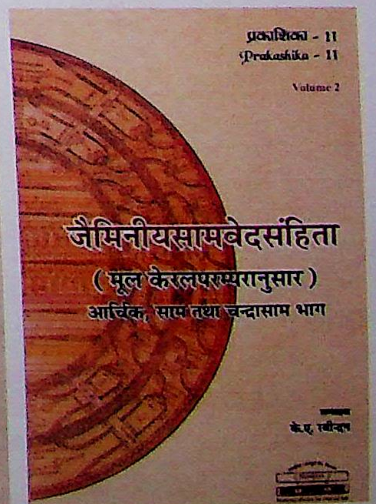


प्रकाशिका – X

चन्द्रशेखरचक्रवर्तिकृतसन्दर्भदीपिकाटीकया समलङ्कृतम्
अभिज्ञानशकुन्तलम

सम्पादकः प्रो. बसंत कुंज भट्ट





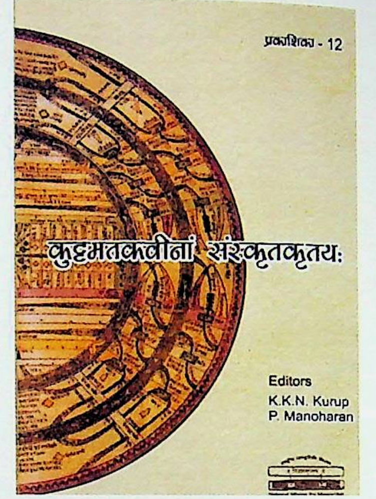
प्रकाशिका भाग XI (खण्ड 1 एवं 2)

जैमिनीयसामवेदसंहिता

(मूल केरलपरम्परानुसार)

आर्चिक, साम तथा चन्द्रासाम भाग

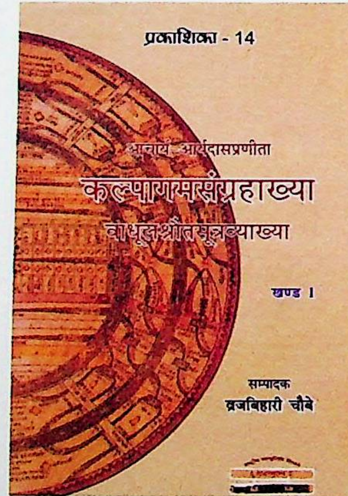
सम्पादकः प्रो. के. ए. रविन्द्रण

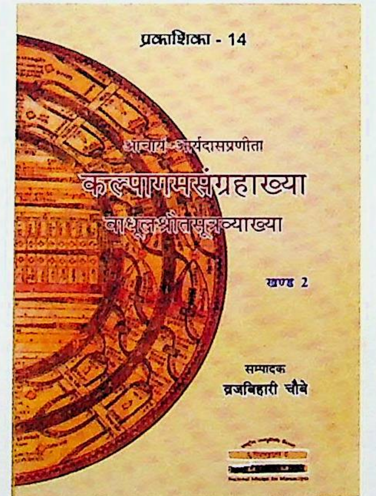


प्रकाशिका भाग XII

कुट्टमतकवीनां संस्कृतकृतयः

सम्पादकः प्रो. के.के.एन. कुरूप डॉ. पी. मनोहरन





प्रकाशिका भाग XII (खण्ड 1 एवं 2)

आचार्य-आर्यदासप्रणीता
कल्पागमसंग्रहाख्या
वाधूलश्रौतसूत्रव्याख्या

सम्पादकः प्रो. ब्रजबिहारी चौबे

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन प्रशासनिक समिति

राष्ट्रीय अधिकारप्राप्त समिति

अध्यक्ष

संस्कृति मंत्री, भारत सरकार

पदेन सदस्य

1. सचिव, संस्कृति मन्त्रालय
2. सदस्य सचिव, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र , नयी दिल्ली
3. संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
4. महानिदेशक, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार , नयी दिल्ली
5. निदेशक , राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

मनोनीत सदस्य

6. प्रो. वी आर. पंचमुखी
7. प्रो. के. के. कृपा
8. प्रो. ए.एम. आई. दल्वि
9. प्रो. वि.एस. कुमार
10. डा. पुष्पा दीक्षित
11. श्री श्याम सिंह राजपुरोहित
12. प्रो. के. ए. गुणशेखरन
13. के. एच. सरोजनी

कार्यकारी समिति

सचिव

संस्कृति मन्त्रालय

पदेन सदस्य

1. सदस्य सचिव, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र , नयी दिल्ली
2. संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
3. निदेशक , राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

मनोनीत सदस्य

4. प्रो. अस्फक अहमद
5. डा. मोहन गुप्ता
6. श्रीमती उशा सुरेश

वित्त समिति

वित्तीय सलाहकार, संस्कृति मन्त्रालय की अध्यक्षता में

सदस्य

1. वित्तीय सलाहकार, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
2. संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
3. निदेशक, वित्त, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
4. मिशन निदेशक , राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

परियोजना अनुवीक्षण समिति

संयुक्त सचिव , संस्कृति मन्त्रालय की अध्यक्षता में

पदेन सदस्य

1. संयुक्त सचिव, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली
2. निदेशक , संस्कृति मन्त्रालय
3. निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन - सदस्य सचिव

मनोनीत सदस्य

4. प्रो. बी. कुटुम्ब शास्त्री
5. प्रो. एच. के. सतपथी
6. श्री चमूकृष्ण शास्त्री, संस्कृत भारती
7. डॉ. इम्तियाज़ अहमद, निदेशक, खुदा बख्श पुस्तकालय , पटना
8. डॉ. जीतेन्द्र शाह - निदेशक, लालभाई दलपतभाई भारतविद्या संस्थान, अहमदाबाद
9. डॉ. रवीन्द्र पंत

हमारे सहयोगी

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम. आर. सी.)

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों का विस्तार और सशक्तीकरण

प्रलेखन, सूचीकरण, संग्रहीत तथ्यों का कम्प्युटरीकरण और लोगों में जागृति पैदा करने हेतु व्यापक नेटवर्क निर्माण करने तथा पाण्डुलिपि के रक्षकों और इस कार्य में संलग्न लोगों को सहायता पहुँचाने के लिए राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने सम्पूर्ण देश में विश्वविद्यालयों , प्रख्यात शोध संस्थानों और पाण्डुलिपि संबंधित कार्यों में संश्लिष्ट स्थापित ग़ैर सरकारी संगठनों में पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र स्थापित किया है।

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों का संगठन

- प्रत्येक एम. आर. सी. के पास सूचीकरण, सम्पादन और पाठों के अर्थ निकालने में विभिन्न स्तरों के विशेषज्ञता प्राप्त प्रशिक्षित कार्मिकों का एक दल होता है।
- प्रत्येक एम. आर. सी. के प्रशासन और संयोजन का कार्य संस्थान के वर्तमान कर्मचारी में से किसी परियोजना संयोजक द्वारा किया जाता है।
- आंकड़ों की आपूर्ति करने तथा पाण्डुलिपियों के प्रलेखन के लिए एम. आर. सी. के पास दो तरह के कर्मचारी होते हैं - क्षेत्र में तथ्य संग्रहण के कार्य में लगे विद्वान और मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर में आंकड़ों की प्रविष्टि करने के लिए कंप्यूटर प्रविष्टि कार्मिक।
- प्रत्येक एम. आर. सी. में एक कंप्यूटर, एक प्रिंटर , इंटरनेट सुविधा, निर्धारित मैनुस ग्रंथावली सॉफ्टवेयर होते हैं जिसमें पाण्डुलिपि आँकड़े की प्रविष्टि की जाती है और उसे अंततः मिशन कार्यालय स्थित राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस से जोड़ दिया जाता है।
- पाण्डुलिपि शास्त्र और प्राचीन लेखन शैली पर कार्यशाला आयोजन करके पाण्डुलिपि के पाठ के अर्थ निकालने और उनके संपादन के लिए संसाधन कार्मिक तैयार किए जाते हैं।
- प्रत्येक एम. आर. सी. को उसकी क्षमता और संतोषजनक कार्य निष्पादन के अनुरूप राशि आबंटित की जाती है।

एम. आर. सी. की गतिविधि

- एम. आर. सी. पाण्डुलिपि संबन्धित तथ्य संग्रहण तथा पंजीकरण हेतु पाण्डुलिपि शास्त्र में प्रशिक्षित अध्येताओं और छात्रों को अपने कार्य में शामिल करता है।
- एम. आर. सी. राज्य स्तर पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण को पूरा करने में मदद करते हैं।
- एम. आर. सी. पाण्डुलिपियों के व्यक्तिगत तथा संस्थागत अधिपतियों से संपर्क स्थापित करता है।
- एम. आर. सी. पाण्डुलिपियों के पठन-पाठन और पाण्डुलिपि शास्त्र तथा पुरातत्व लेखन के अन्य पक्षों के लिए विद्वानों की खोज करता है।
- पाण्डुलिपि विज्ञान तथा प्राचीन लेखन शैली संबन्धित व्याख्यान और राष्ट्रीय संगोष्ठि आयोजित करने हेतु एम. आर. सी. राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन को सहयोग करता है।

पाण्डुलिपि सहयोगी केंद्रों को सहायता

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के अतिरिक्त, मिशन ने पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्रों का एक नेटवर्क स्थापित किया है। यहां हमने प्रलेखन और उनके संग्रहों के सूचीकरण के लिए महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि भंडारों को अपने से संबद्ध किया है। उनका कार्य मैनुस ग्रंथावली सॉफ्टवेयर के माध्यम से मौलिक सूचीकरण करना है जो कि उनके कर्मचारी आनुपातिक आधार पर स्वयं अथवा बाहर के किसी व्यक्ति या संस्था से करवाते हैं। सन् 2006 से शुरू करके आज तक के समयावधी में मिशन ने अपने नेटवर्क के अंतर्गत 43 ऐसी संस्थानों को लाने में सफल रहा है।

विदेशी संग्रहों का प्रलेखन

मिशन विदेश में स्थित पाण्डुलिपि भंडारों में संग्रहों के प्रलेखन के लिए आधार तैयार करने में सदैव संलग्न रहा है। सन् 2006 में 70 से अधिक संस्थाओं के साथ संपर्क स्थापित किया गया था। सात साल के अंतराल के बाद विभिन्न दक्षिण एशियाई देशों में स्थित भारतीय पाण्डुलिपियों के प्रलेखन हेतु मिशन एक परियोजना को रूप रेखा देने के लिए दक्षता के साथ समन्वय कार्य कर रहा है। उम्मीद है कि वर्ष 2014 -15 में अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्किंग और विदेश में स्थित संग्रहों के प्रलेखन के इस कार्य का राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस के विस्तार और विशेष दुर्लभ तथा महत्त्वपूर्ण भारतीय पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण की दृष्टि से ठोस परिणाम प्राप्त होगा।

रणनीति

- यूरोप, अमरीका और एशिया में भारतीय पाण्डुलिपियों के ज्ञात भंडार से संपर्क स्थापित करना।
- जिस प्रारूप में हमारे पाण्डुलिपि आँकड़े संगृहीत किए जातें हैं उस उचित प्रारूप को भेजना।
- आंकड़े के कंप्यूटरीकरण हेतु मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर भेजना।
- अब तक की गैर सूचीकृत भारतीय पाण्डुलिपियों के पढ़ने और अर्थ निकालने के लिए भंडारों को उस क्षेत्र में विद्वानों का पता लगाने में मदद करना।
- जहां भारतीय पाण्डुलिपियों की सूची मौजूद हो वहां से सूची का संग्रह करना।
- विदेशों में स्थित संग्रहों में उपालब्ध भारतीय पाण्डुलिपियों का सांख्यिकीकरण करना।

2013-14 वित्तीय वर्ष में पाण्डुलिपियों की प्रलेखन कार्य करनेवाले पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों की सूची

राज्य	क्र.स.	पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के नाम
असम	1.	**ताय अध्ययन एवम् शोध संस्थान** मोरानहाट जिला- सिबसागर असम
	2.	**कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय** गुवाहाटी विश्वविद्यालय गुवाहाटी- 781014 असम
बिहार	3.	**नव नालंदा महाविहार, नालंदा** नालंदा- 803111 बिहार

राज्य	क्र.स.	पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के नाम
बिहार	4.	**पटना संग्रहालय** विद्यापति मार्ग पटना बिहार
	5.	**श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान** देवाश्रम , महादेव रोड, आरा बिहार 802301
गुजरात	6.	**श्री सतश्रुत प्रभावन न्यास** 580, जुनी मानेकवाड़ी भावनगर - 364001 गुजरात
हरियाणा	7.	**संस्कृत, पाली एवम् प्राकृत विभाग** कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र - 136119
हिमाचल	8.	**हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी,** क्लिफ एंड इस्टेट शिमला - 171001 हिमाचल प्रदेश
	9.	**तिब्बती रचना और अभिलेखागार पुस्तकालय** गंगचेन क्यिसांग घर्मशाला - 176215 हिमाचल प्रदेश
जम्मू-कश्मीर	10.	**राज्य पुरातत्त्व , अभिलेखागार और संग्रहालय निदेशालय** स्टोन बिल्डिंग पुराना सचिवालय, श्रीनगर- 190001, जम्मू-कश्मीर
कर्नाटक	11.	**राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान** श्रुतकेवाली शिक्षा न्यास श्रावणबेलगोला- 571335 जिला- हसन कर्नाटक
	12.	**केलाडि संग्रहालय एवम् ऐतिहासिक शोध संस्थान** पोस्ट- केलाडि सागर तालुका जिला- शिमोगा, कर्नाटक

राज्य	क्र.स.	पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के नाम
केरल	13.	**प्राच्य शोध संस्थान और पाण्डुलिपि पुस्तकालय,** केरल विश्वविद्यालय, , करियावत्तोम , तिरुअनन्तपुरम - 695585 केरल
	14.	**थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट** थुंचन परंबा तिरूर जिला- मामल्लापुरम् केरल
मध्यप्रदेश	15.	**डॉ. हरि सिंह गौड़ विश्वविद्यालय** गौड़ नगर सागर- 470003 मध्यप्रदेश
	16.	**कुंद कुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर** 584 एम. जी. रोड तुकोगंज , इन्दौर - 452001 मध्यप्रदेश
महाराष्ट्र	17.	**आनंद आश्रम संस्था** 22 बुधवार पथ पुणे - 411002
	18.	**भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान** दक्कन जिमखाना पुणे - 411047, महाराष्ट्र
मणिपुर	19.	**मणिपुर राज्य अभिलेखागार** कैसामपाट इम्फाल- 795001 मणिपुर
उड़ीशा	20.	**सरस्वती** सरस्वती विहार, बारपद भद्रक - 756113 उड़ीशा
तमिलनाडु	21.	**पुरातत्व विभाग** तमिल वालारची वलगम हिल्स रोड, एगमोर चेन्नै- 600008

राज्य	क्र.स.	पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के नाम
उत्तर प्रदेश	22.	**संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,** बनारस- 2210001 (उ. प्र.)
	23.	**वृन्दावन शोध संस्थान** रमण रेती वृन्दावन - 281121 उत्तरप्रदेश
	24.	**अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्** महात्मा गांधी मार्ग हज़रतगंज लखनऊ, उत्तरप्रदेश
	25.	**चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय** विश्वविद्यालय मार्ग मेरठ- 200005 उत्तरप्रदेश
	26.	**मजहर मेमोरियल संग्रहालय** गाजीपुर , उत्तरप्रदेश
उत्तराखंड	27.	**उत्तरांचल संस्कृत अकादमी** रानीपुरझाट दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग हरिद्वार - 249401 उत्तराखंड
पश्चिम बंगाल	28.	**पाण्डुलिपि पुस्तकालय** हार्डिंग भवन, प्रथम तल 87/1, कॉलेज स्ट्रीट सीनेट हाऊस, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता- 700073, पश्चिम बंगाल

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र

एम. सी. सी. का संगठन

- प्रत्येक एम.सी.सी. में पाण्डुलिपि संरक्षण प्रशिक्षित संरक्षकों और विशेषज्ञों का एक दल होता है।
- प्रत्येक एम.सी.सी. में उस संस्थान के वर्तमान में उपलब्ध कर्मचारियों में से एक जो परियोजना संयोजक होता है वह गतिविधियों के प्रशासन और देखरेख का दायित्व लेता है।
- प्रत्येक एम. सी. सी. में पाण्डुलिपि संरक्षण कार्य करने के लिए आधारभूत सुविधा-युक्त प्रयोगशाला होती है।
- प्रत्येक एम. सी. सी. अनेक संस्थाओं को उनके पास उपलब्ध पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु अनेक स्तर का प्रशिक्षण देती है।
- प्रत्येक एम. सी. सी. अपने-अपने क्षेत्रों में पाण्डुलिपि भण्डार स्वामियों को निवारक एवं उपचारात्मक संरक्षण में प्रशिक्षण देता है।
- एम. सी. सी. में काम करने वाले संरक्षकों के कौशल को बढ़ाने नियमित रूप से कार्यशालाओं और प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया जाता है।

एम. सी. सी. का कार्य निष्पादन

- सभी एम. सी. सी. में आधारभूत सुविधाओं से युक्त संरक्षण प्रयोगशाला होती है।
- प्रत्येक एम. सी. सी. में संबंधित कर्मचारियों के दल को विभिन्न स्तर की विशेषज्ञता प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
- एम. सी. सी. के निवारक संरक्षण कार्यक्रम में व्यवस्थित ढंग से बढ़ोतरी की जाती है।
- संरक्षण से संबंधित विषयों में समझ बढ़ाने और देख रेख के लिए अधिकाधिक संस्थानों के साथ सम्पर्क अभियान चलाया जाता है।
- किसी संस्थान में उपलब्ध आधारभूत सुविधा, अतीत के कार्य और पाण्डुलिपि संकलन और संस्थान में उपचारात्मक संरक्षण कार्य में उसके सहयोग के आधार पर उसे एम. सी. सी. बनाया जाता है।

2013-14 वित्तीय वर्ष में पाण्डुलिपियों की प्रलेखन कार्य करनेवाले पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों की सूची

राज्य	क्र.स.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम
आन्ध्रप्रदेश	1.	**आन्ध्रप्रदेश राज्य अभिलेखागार और शोध संस्थान** तारनाका, हैदराबाद- 7 आन्ध्रप्रदेश
	2.	**प्राच्य शोध संस्थान , श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,** तिरुपति ; 517502 आन्ध्र प्रदेश
असम	3.	**कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय** गुवाहाटी विश्वविद्यालय गुवाहाटी- 781014 असम
बिहार	4.	**पटना संग्रहालय** विद्यापति मार्ग पटना, बिहार

राज्य	क्र.स.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम
बिहार	5.	**श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान** देवाश्रम, महादेव रोड, आरा बिहार 802301
दिल्ली	6.	**बी.एल. भारतविद्या संस्थान** विजय वल्लभ स्मारक परिसर 20वां केएम, जी टी कर्नाल रोड पोस्ट- अलीपुर दिल्ली-36
हरियाणा	7.	**संस्कृत, पाली एवम् प्राकृत विभाग** कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र - 136119
हिमाचल	8.	**हिमाचल राज्य संग्रहालय** छौरमैदान शिमला हिमाचल प्रदेश - 171004
जम्मू-कश्मीर	9.	**केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान** चोग्लमसार लेह (लद्दाख)- 194001 जम्मू-कश्मीर
कर्नाटक	10.	**पाण्डुलिपि शास्त्र विभाग** कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी विद्यारण्य- 583276 हॉस्पेट तालुक जिला- बेल्लारी (कर्नाटक)
	11.	**आई.एन.टी.ए.सी.एच. चित्रकला परिषद् कला संरक्षण केन्द्र,** कुमार कृपा मार्ग बंगलुरु - 560001
	12.	**केलाडि संग्रहालय एवम् ऐतिहासिक शोध संस्थान** पोस्ट- केलाडि सागर तालुका जिला- शिमोगा कर्नाटक
	13.	**राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान** श्री धेवलतीर्थम् श्रवणबेलगोला- 571335 जिला- हसन कर्नाटक

राज्य	क्र.स.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम
कर्नाटक	14.	**श्री वादिराज शोध फाउंडेशन** गीता मार्ग श्री पुथिजे मठ कार स्ट्रीट उडुपी कर्नाटक ; 576101
केरल	15.	**प्राच्य शोध संस्थान एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालय** केरल विश्वविद्यालय करियावट्टम तिरूवनन्तपुरम केरल - 695585
	16.	**थंचन मेमोरियल ट्रस्ट** थुंचन परंबा तिरूर जिला- मामल्लापुरम् केरल
मध्यप्रदेश	17.	**कुंद कुंद ज्ञानपीठ,** देवी अहिल्या विश्वविद्यालय 584 एम. जी. रोड तुकोगंज , इन्दौर - 452001, मध्यप्रदेश
महाराष्ट्र	18.	**भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान** दक्कन जिमखाना पुणे - 411047 महाराष्ट्र
मणिपुर	19.	**मणिपुर राज्य अभिलेखागार** कैसामपाट इम्फल- 795001 मणिपुर
उड़िशा	20.	**ए आई टी आई एच वाई ए** प्लाट नं 4/330, प्रथम तल पोस्ट- शिशुपाल गाडा (निकट गंगुआ पुल, पुरी रोड) भवनेश्वर -2 उड़िसा
	21.	**आई. एन. टी. ए. सी. एच.** उड़िशा कला संरक्षण केन्द्र उड़िशा राज्य संग्रहालय परिसर भुवनेश्वर - 751014, उड़िशा

राज्य	क्र.स.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम
उड़िशा	22.	**उड़िशा राज्य संग्रहालय,** संग्रहालय भवन भुवनेश्वर उड़िशा
	23.	**संबलपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय** संबलपुर विश्वविद्यालय बुरला - 768001
राजस्थान	24.	**अकलंक शोध संस्थान** अकलंक विद्यालय शोध संस्थान बसंत बिहार कोटा, राजस्थान
	25.	**दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र,** जैन विद्या संस्थान दिगम्बर जैन नासिम भट्टारक जी सवाई रामसिंह रोड जयपुर- 302004 राजस्थान
त्रिपुरा	26.	**त्रिपुरा विश्वविद्यालय** सूर्यमणिनगर त्रिपुरा वेस्ट , त्रिपुरा
उत्तर प्रदेश	27.	**केन्द्रीय पुस्तकालय** बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस , उत्तर प्रदेश
	28.	**आई सी आई** रामपुर राजा पुस्तकालय हामिद मंजिल रामपुर- 244901 उत्तर प्रदेश
	29.	**भारतीय संरक्षण संस्थान परिषद्** एच. आई. जी. - 44 सेक्ट ई, अलीगंज स्कीम लखनऊ
	30.	**मजहर मेमोरियल संग्रहालय,** बहरियाबाद, गाजीपुर, उत्तरप्रदेश

राज्य	क्र.स.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम
उत्तर प्रदेश	31.	**नागार्जुन बौद्ध फाउंडेशन** 18, अंधियारी बाग , गोरखपुर - 273001 उत्तर प्रदेश
	32.	**वृन्दावन शोध संस्थान** रमण रेती वृन्दावन - 281121 उत्तरप्रदेश
उत्तराखंड	33.	**हिमालय विरासत समाज एवम् कला संरक्षण केन्द्र** नैनीताल, उत्तराखंड
पश्चिम बंगाल	34.	**पाण्डुलिपि पुस्तकालय** हार्डिंग भवन, प्रथम तल 87/1, कॉलेज स्ट्रीट सीनेट हाऊस, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता- 700073, पश्चिम बंगाल



National Mission for Manuscripts

Report of the Eelventh Year

2013-14

National Mission for Manuscripts

Annual Report 2013 – 2014

National Mission for Manuscripts (NMM) completed precious 11 years of its existence on 7th February, 2014. Initially NMM was established in 2002 (started functioning in 2013) for a period of five years, and subsequently given extension twice, the latest one in 2012. Year 2013 – 2014 was the second year of the third phase, significant in many ways and indeed a year of intense activity for the NMM.

Set up by the Government of India under the Department of Culture, the Mission has the mandate of identifying, documenting, conserving and making accessible the manuscript heritage of India. We see a national effort in the form of a mission for manuscripts as a logical, radical and urgent response to a very contemporary challenge – of reclaiming the inheritance contained in manuscripts, often in a poor state of preservation.

India can rightfully claim to be the largest repository of manuscripts in the world. It is not only the largest repository of literary heritage, but is also the forerunner in conservation efforts. National Mission for Manuscripts is first such national level comprehensive initiative in the world which caters to the need of conserving manuscripts and disseminating knowledge contained therein. NMM has covered a long distance since its inception in 2002 towards fulfilling its motto, 'conserving the past for the future'. It works through a network of more than 100 centres and nearly 350 sub-centres, spread all over the country.

The number of centres (category-wise) is as follows:

Manuscript Resource Centres (MRCs) – 28

Manuscript Conservation Centres (MCCs) – 34

Manuscript Partner Centres (MPCs) – 42

Manuscript Conservation Partner Centres (MCPCs) – 300

After more than a decade since it was established by the Department of Culture, Govt. of India, it has emerged as a movement, undoubtedly the most popular and effective among all the heritage conservation initiatives in the country.

In the third phase, the activities of the NMM have expanded manifold. In the past two years, rejuvenated NMM has made adjustments in its priorities to make it more relevant and effective. Commendable among them are: extending NMM network in the Northeast and other remote areas and appropriate emphasis on intellectual heritage of the medieval period. From the decade long experience, it has been felt that survey of manuscripts is the activity which cannot be accomplished in one go. It is a continuous process and can be better handled through permanent institutional set up. Therefore survey of manuscripts has been entrusted upon the Manuscript Resource Centres (MRCs) which are also

Objectives

In suggesting the objectives for the Mission it would be simplistic to suppose that the objective for launching a National Mission for Manuscripts is merely to locate, enumerate, preserve and describe all the Indian manuscripts in India and abroad. The objective for undertaking these tasks is to enhance their access, improve awareness about cultural inheritance and encourage their use for educational and research purposes and lifelong learning. The Development Objective can be broken down into the following five sub-objectives:

- **Objective 1**: To facilitate conservation and preservation of manuscripts through training, awareness and financial support;
- **Objective 2:** To document and catalogue Indian manuscripts, wherever they may be, maintain accurate and updated information about them and the conditions under which they may be consulted;
- **Objective 3:** To promote ready access to these manuscripts through publication, both in book form as well as electronic form;
- **Objective 4:** To boost scholarship and research in the study of Indian language and manuscriptology;
- **Objective 5:** To build up a National Manuscript Library.

-Page 21, Project Document, National Mission for Manuscripts

made responsible to complete documentation through post-survey activities. The third phase of the NMM started in 2012 with this paradigm shift.

NMM has a two-pronged strategy to conserve manuscripts: (a) preventive and curative conservation of original manuscripts and (b) conservation through digitization and micro-filming.

It is an acknowledged fact that almost half of the total manuscript reserve in independent India was irretrievably lost before NMM came into being. Therefore, conservation is appropriately accorded top priority in the work plan of the NMM. Besides carrying out conservation through well-equipped centres (MCCs), NMM also conducts conservation workshops to conserve manuscripts and train manpower in the art and science of conservation. In 2011, NMM has revived the dysfunctional conservation laboratory at the head office in New Delhi. At present, five well trained conservationists (though the number is negligible in comparison to demand) are treating manuscripts on war footing in this laboratory.

The way to applying modern technology for preservation has been defined in 'Guidelines for Digitization of Archival Material' formulated and published by the NMM. It has the primary objective of using digital technology to preserve manuscripts for posterity. After studying the best practices being adopted in digitization projects at national and international level and after long consultation with experts in the

field, NMM has come up with this document, which is first of its kind in the country. The aims of digitization effort are to conserve the manuscripts for posterity and to provide easy access to manuscripts by establishing a National Digital Manuscript Library. In 2011 NMM has launched the third phase of its digitization project, which is designed to digitize 8 million pages of manuscripts. Including the first and second phase of digitization, NMM has been able to digitize more than 18 million pages.

NMM is aware of the limitation of digitization as a means of conservation. The digitized copies are convenient for providing accessibility, but in the era of changing technology and as also the limited life span of DVDs, digital copies cannot be the medium for long term preservation. Therefore, NMM has planned to create and keep microfilms of all the digitized copies of manuscripts.

To sum up, the aim of NMM is to retrieve the knowledge contained in manuscripts and ensure its optimum use in the present context. Means to this goal are varied: documentation, conservation, digitization and dissemination.

Seminars and lectures on diverse topics related to manuscripts, manuscriptology and knowledge contained in manuscripts are organized in different parts of the country. In the last few years 4 volumes containing the lectures delivered under Tattabodha Public Lecture Series were published. Seven volumes of seminar papers, 5 volumes of critical editions of manuscripts, 17 volumes of rare unpublished manuscripts and 4 catalogues were published. In total, 37 volumes of books have been published so far and a large number of books are under process of publication as well. Besides these, NMM has in its website, (www.namami.org) information on 31,23,000 manuscripts. Efforts on dissemination, through lectures, seminars and workshops, etc. have increased manifold during the last two years.



Participants at Preventive Conservation Workshop, held at Patna Museum (8th March – 13th March, 2014)

Manuscripts are the store house of knowledge gained in our country over a period of more than five thousand years. This needs to be fruitfully and gainfully harvested for application in the present context to restore to India the intellectual respectability it once enjoyed.

Programmes and Activities

I. Documentation

- Enriching National Electronic Database of Manuscripts
- Survey of Manuscripts and Post Survey Programme
- Expansion and Strengthening of Manuscript Resource Centres (MRCs)
- Supporting Manuscript Partner Centres (MPCs)

II. Manuscript Conservation and Training

- Expansion of MCC network
- Establish Manuscript Conservation Partner Centres (MCPCs)
- Creation of a National Resource Team of Conservators
- Promotion of research programmes
- Preventive conservation training
- Workshops on conservation of rare support materials
- Establishment of field laboratories
- Organising MCPC workshops
- Conservation of manuscript collections in MRCs
- Collaboration in survey and post survey
- Collaboration with digitization

III. Training on Manuscriptology and Paleography

- Conducting training courses on manuscriptology and paleography
- Create trained manpower
- Introducing manuscriptology courses in Indian universities
- Preparation of critical editions of manuscripts

IV. Documentation through Digitization

- Preservation of manuscripts for posterity
- Promotion of access and usage for scholars and researchers, without tampering with original copies
- Creation of a digital library as a resource base of the digitized copies of Indian manuscripts
- Creation of standards and procedures for digitization of manuscripts

V. Research and Publication

- Tattvabodha: Publication of Collection of Lectures
- Sameekshika: Publication of Collection of Seminar Papers
- Samrakshika: Publication of Collection of Seminar Papers on Conservation
- Kritibodha: Publication of Critical Editions
- Prakashika: Publication of rare texts
- Kriti Rakshana: Bi-monthly publication of the NMM

VI. Outreach Programmes

- Organise public lectures
- Organise seminars
- Organise exhibitions etc. under public awareness programme

Performance Summary : In brief 2013 - 2014

- Collected information regarding 1,56,779 manuscripts and total information available with the NMM up to 31st March, 2014 was 38,46,048. In 2013 – 2014, NMM wave-launched 1,19,565 additional data. On 31st March, 2014, the total data available in the NMM website, www.namami.org stands at around 31,23,000.
- 12 workshops (10 preventive and 2 curative) on conservation of manuscripts were organized.
- Up to 31st March, 2014, digitization of 1,85,75,660 pages has been completed and images are available with the NMM.
- In total, 6 (1 in Delhi and 5 outside Delhi) public lectures were organized under Tattvabodha Series.
- 6 national level seminars on different topics were organized.
- 7 (5 Basic Level and 2 Advance Level) workshops on manuscriptology and paleography were organized
- 2 exhibitions of manuscripts were conducted (1 in Delhi and 1 at Jalandhar)
- 11 volumes of books were published. Besides these 3 issues of NMM Journal *Kriti Rakshana* were published in the same year.

Documentation

India's manuscripts are scattered in known and unknown collections across the country. One of the main programmes of the National Mission for Manuscripts is the first concerted effort to create and compile a National Database of Indian Manuscripts. As the most significant contribution of the Mission, it is being compiled with information on Indian manuscripts in public and private collections that is gathered through different information collection processes.

When it was established in 2002, one of the challenges before the National Mission for Manuscripts (NMM) was to collect information about the availability of manuscripts, to locate manuscripts and to prepare a national database of manuscripts. It seemed to be challenging considering the fact that unlike developed countries of the West, availability of manuscripts in India is not limited to organized repositories only. Here manuscripts are available in libraries, muthas, temples, mosques as well as in households. Therefore, it is not only the country with largest number of manuscripts but also the largest number of repositories. From Mizoram to Gujarat and from Leh to Kanyakumari, one may come across manuscript anywhere. Presumption in this regard is bound to be proved futile.

After establishment, NMM has formulated a detail plan to face this challenge of locating and documenting manuscripts. In its first and second phases of existence, emphasis was given on door to door survey to locate manuscript repositories and detail documentation through post survey. Simultaneously, under a strategy which is aimed at far reaching consequences, a network of institutions locating at different corners of the country has been created. The institutional framework has been worked out to entrust upon the responsibility of locating and documenting manuscripts to these institutions. Gradually the network of institutions has stated to shoulder the responsibility of documentation with more efficiency and accuracy. As a result the emphasis has shifted and survey and post-survey activities are carried out through Manuscript Resource Centres or MRCs now. This is a remarkable shift from the policy followed earlier, though the very seed of the network was sowed just after the beginning of the Mission. In 2013 – 2014, steps have been taken to strengthen the network and make it more comprehensive and effective. As a result, a number of almost inactive MRCs have been rejuvenated and a large number of new MRCs have been established to end the regional imbalance and give the much needed boost up to data collection.

Most of the manuscript wealth of India has not been documented in a manner to provide a common portal for reference to aid scholars and researchers. In many instances, there has been no knowledge of or access to these manuscripts, creating a gap between the knowledge cultures of the past and present.

NMM is engaged in detailed documentation

of manuscripts in India, by creating a National Catalogue of Manuscripts. The catalogue containing information about 31,23,000 manuscripts is already available in NMM website, www.namami.org. This electronic catalogue provides information of manuscripts from institutions, religious, cultural and educational, as well as private collections across the country.

Objectives of documentation

- Location of the unknown manuscript reserves in the country, both in institutional and private repositories
- Documentation of the entire estimated ten million manuscripts of the country
- Reaching out to the grass root level for gathering information on manuscripts, as well as spreading awareness
- Creation of the electronic catalogue of manuscripts to be made available on the Internet

Methodology

- Conducting surveys in each state and union territory, for locating manuscripts in both known and unknown, private and public, catalogued and non-catalogued collections, through the standard questionnaire format
- Co-ordinating with the State and district administration, as well as local self-governing bodies and general populace at large
- Conducting extensive post survey exercises to document each manuscript in manus data sheets
- Gathering data from the manuscript resource centres (MRC-s)
- Sorting, checking, organizing and entering the data on the database
- Promoting the documentation of collections of Indian manuscripts outside India through set questionnaire and manus data forms (Yet to be started)

Data Processing

After collection of information, it is entered into the Manus Granthavali software at the manuscript resource centres (MRC-s) or manuscript partner centres (MPC-s). Finally the data comes to the Mission for checking by scholars who are qualified in various fields of knowledge.

National Electronic Database of Manuscripts

National Electronic Database of manuscripts is the first of its kind online catalogue of Indian manuscripts, emerging out of various earlier attempts at such documentation by different institutions. With information on every manuscript that has been documented through the Mission's datasheets, the catalogue covers various aspects of manuscripts, from title, commentary, language, script, subject, place of availability, number of pages, illustrations, date of writing, etc. As a consolidated portal, it can be searched through the categories of author, subject] etc.

Apart from sensitizing people about the rich intellectual heritage of India, the Database will provide vital policy impetus for future initiatives to be taken to conserve, preserve, digitize, improve access and save manuscripts for posterity.

Data Collection Detail

Year	Net Data collected in the particular year	Total data collected up to that year (progressive)
2003 – 2004	0,88,569	00,88,569
2004 – 2005	2,02,563	02,91,132
2005 – 2006	7,70,111	10,61,243
2006 – 2007	7,03,196	17,64,439
2007 – 2008	8,13,151	25,77,590
2008 – 2009	2,76,271	28,53,861
2009 – 2010	2,14,114	30,67,975
2010 – 2011	2,11,053	32,79,028
2011 – 2012	2,15,492	34,94,520
2012 – 2013	1,94,749	36,89,269
2013 - 2014	1,56,779	38,46,048

Data Processing Detail (2013 – 2014)

Sl. No.	Category	Position up to 31st March, 2013	Position up to 31st March, 2014
1.	Total data received in electronic format	27,30,000	28,68,000
2.	Total data received in hard copy	9,58,000	9,78,000
3.	Total data edited	30,48,000	31,90,000
4.	Total Data released on Website	30,03,000	31,23,000

Contribution of the MRCs

Sl. No.	Name of the MRC	Total data received till 31st March, 2013	Data received in 2013 - 2014	Total data received till 31st March, 2014
1.	Akhila Bharatiya Sanskrit Parishad Mahatma Gandhi Marg Hazratganj, Lucknow, Uttar Pradesh	29,950	4,809	34,759
2.	Anandashram Samstha 22, Budhwar Peth Pune – 411 002	56,147	11	56,158
3.	A.P. Govt. Oriental Manuscripts Library and Research Institute Jama-I-Osmania, Osmania University Campus Hyderabad –500007, Andhra Pradesh	24,934	9,613	34,547

Sl. No.	Name of the MRC	Total data received till 31st March, 2013	Data received in 2013 - 2014	Total data received till 31st March, 2014
4.	Jamia Hamdard Hamdard Nagar, New Delhi	3,621	00	3,621
5.	B.C. Gupta Memorial Library Guru Charan College Silchar, Assam – 788 004	602	0	602
6.	Bhai Vir Singh Sahitya Sadan Bhai Vir Singh Marg Gole Market, New Delhi-1	214	0	214
7.	Bhandarkar Oriental Research Institute Deccan Gymkhana Pune-411 037, Maharashtra	71,544	276	71,820
8.	B.L Institute of Indology Vijay Vallab Smarak Complex 20th KM,GTK Road PO - Alipur, Delhi-36, Delhi	1,689	0	1,689
9.	Central Institute of Buddhist Studies Choglamsar, Leh (Laddak)-194001 Jammu & Kashmir	9,242	0	9,242
10.	Centre for Heritage Studies Tripunithura Dist. – Ernakulam, Kerala	3,735	0	3,735
11.	Department of History Tripura University Suryamani Nagar Dist. - Tripura West, Tripura	0	0	0
12.	Department of Sanskrit HNB Garhwal University Pauri Garhwal – 246 001 Uttarakhand	2,340	0	2,340
13.	Department of Sanskrit, Pali and Prakrit Kurukshetra University Kurukshetra-136119	29,454	4,878	34,332
14.	Department of Tamil University of Madras Chennai, Tamil Nadu		5,222	05,222
15.	Directorate of State Archaeology, Archives & Museum, Stone Building, Old Secretariat, Srinagar – 190001 Jammu and Kashmir	36,293	2,708	39,001

Sl. No.	Name of the MRC	Total data received till 31st March, 2013	Data received in 2013 - 2014	Total data received till 31st March, 2014
16.	French Institute, Pondicherry 11, Saint Louis Street, PB-33 Puducherry-605001	58,892	3,572	62,464
17.	Government Oriental Manuscript Library Chennai, Tamil Nadu	18,110	6,000	24,110
18.	Himachal Academy of Arts Culture and Languages Cliff-End Estate, Shimla- 171001 Himachal Pradesh	87,547	13,696	1,01,243
19.	H.S. Gaur University Gaur Nagar, Sagar, Madhya Pradesh	58,173	0	58,173
20.	Institute for Oriental Studies Maharshi Karve Road Naupura, Thane West, Maharashtra	2,800	0	2,800
21.	Institute of Tai Studies and Research Moranhat, Dist. - Sibsagar, Assam	2,199	3,781	5,980
22.	Kameswar Singh Darbhanga Sanskrit University Kameswar Nagaram Darbhanga – 846 004, Bihar	10,403	0	10,403
23.	Kannada University Hampi, Vidyaranya – 583 276 Taluq - Hospet, Dt- Bellary, Karnataka	56,777	0	56,777
24.	Kavikulaguru Kalidasa Sanskrit University Baghla Bhawan Sitalwadi, Manda Road Ramtek – 441106, Maharashtra	12,306	0	12,306
25.	Keladi Museum & Historical Research P.O. - Keladi, Taluq – Sagar Dist. – Simoga, Karnataka	23,461	3,907	27,368
26.	Khuda Bakhsh Oriental Public Library Ashok Rajpath, Patna – 800 004, Bihar	23,144	0	23,144
27.	Krishna Kanta Handique Library Gauhati University Gopinath Bardolai Nagar Guwahati, Assam	26,021	0	26,021
28.	Kundakunda Jnanapitha 584, M.G. Road Tukoganj, Indore – 452 001 Madhya Pradesh	57,449	2,983	60,432

Sl. No.	Name of the MRC	Total data received till 31st March, 2013	Data received in 2013 - 2014	Total data received till 31st March, 2014
29.	Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology Navarangpur Near Gujarat University Ahmedabad -380 009, Gujarat	64,740	0	64,740
30.	Library of Tibetan Works and Archives Gangchen Kyisong Dharamshala – 176215 Himachal Pradesh	1,21,731	1,340	1,23,071
31.	Mahabharata Samshodhana Pratisthan 1/ E, 3rd Cross Girinagar 1st Phase Bengaluru – 560 085, Karnataka	59,886	0	59,886
32.	Manipur State Archives Keishampat Imphal - 795 001, Manipur	43,527	1,886	45,413
33.	Manuscript Library Hardinge Building, 1st Floor, Senate House 87/1, College Street University of Calcutta Kolkata-700073, West Bengal	1,14,566	5,200	1,19,766
34.	Mazahar Memorial Museum Bahariabad, Ghazipur, Uttar Pradesh	22,000	13,000	35,000
35.	Nava Nalanda Mahavihara Nalanda – 803111, Bihar	34,762	2,498	37,260
36.	National Institute of Prakrit Studies & Research Shrutakevali Education Trust Shravanabelagola – 573 135, Dist. - Hassan, Karnataka	70,440	2,083	72,523
37.	Oriental Research Institute Sri Venkateswara University Tirupati-517 502, Andhra Pradesh	36,763	0	36,763
38.	Oriental Research Institute University of Mysore, Kautilya Circle Mysore – 570005, Karnataka	78,141	0	78,141
39.	Oriental Research Institute & Manuscripts Library University of Kerala, Kariavattom Thiruvananthapuram - 695585 Kerala	79,062	1,334	80,396

Sl. No.	Name of the MRC	Total data received till 31st March, 2013	Data received in 2013 - 2014	Total data received till 31st March, 2014
40.	Orissa State Museum Museum Building Bhubaneswar, Odisha	2,94,076	0	2,94,076
41.	Patna Museum Vidyapati Marg Patna, Bihar	13,811	11,006	24,817
42.	Rajasthan Oriental Research Institute P.W.D. Road Jodhpur – 342011, Rajasthan	2,37,500	2,600	2,41,089
43.	Rampur Raza Library Hamid Manzil Rampur – 244 901 Uttar Pradesh	43,300	0	43,300
44.	Salarjung Museum Museum Road Hyderabad, Andhra Pradesh	40,845	0	40,845
45.	Sampurnananda Sanskrit Visvavidyalaya Varanasi – 221001, Uttar Pradesh	62,779	4,487	67,266
46.	Sanskrit Academy of Research for Advanced Society through Vedic & Allied Tradition of India (SARASVATI) Sarasvati Vihar, Barpada Bhadrak – 756 113, Odisha	1,28,804	3,326	1,32,130
47.	Scindia Oriental Research Institute Vikram University Ujjain, Madhya Pradesh	38,840	0	38,840
48.	Shivaji University Kolhapur, Maharashtra	6,517	1,111	7,628
49.	Shri Satshrut Prabhavana Trust 580, Juni Manekwadi Bhavnagar - 364001, Gujarat	81,810	6,223	88,033
50.	Shree Dwarkadhish Sanskrit Academy and Indological Research Institute Dwaraka, Gujarat	0	0	0
51.	Sri Chandrashekharendra Saraswati Viswa Mahavidyalaya (Deemed University) Enathur, Kanchipuram – 631561 Tamil Nadu	40,961	0	40,961

Sl. No.	Name of the MRC	Total data received till 31st March, 2013	Data received in 2013 - 2014	Total data received till 31st March, 2014
52.	Sri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute Devashram Mahadeva Road Arrah– 802 301, Bihar	1,17,114	3,039	1,20,153
53.	Tanjavur Maharaja Serfoji's Saraswati Mahal Library Tanjavur – 613 009, Tamil Nadu	35,914	0	35,914
54.	Thunchan Memorial Trust Thunchan Paramba Tirur – 676101 Dist. – Mamlapuram, Kerala	1,66,159	9,067	1,75,226
55.	Uttaranchal Sanskrit Academy Near Zila Panchayat Office Haridwar – 249 401 Uttarakhand	30,000	1,999	31,999
56.	Viswesvarananda Viswabandhu Institute of Sanskrit & Indological Studies Sadhu Ashram Hoshiarpur-146021, Punjab	27,093	0	27,093
57.	Vrindavan Research Institute Raman Reti Vrindavan-281121 Uttar Pradesh	52,110	21,097	73,207

Conservation

When NMM was formed in 2002, there were paucity of trained persons and absence of standard norms of conservation on the one hand and pitiable conditions of Indian collections demanding urgent steps on the other hand. NMM started functioning in such a situation and after a decade, the situation has clearly changed a lot, though there is no room for complacency.

India is not only the largest repository of literary heritage, but is also the forerunner in conservation efforts. National Mission for Manuscripts is first such national level comprehensive initiative in the world which caters to the need of conserving manuscripts and disseminating knowledge contained therein. NMM has covered a long distance since its inception in 2002 towards fulfilling its motto, 'conserving the past for the future'.

Conservation efforts of the NMM encompass the following dimensions:

1. Conservation of original manuscripts
2. Conservation through digitization
3. Conservation through microfilming

Conservation of manuscript in original is done through preventive and curative methods. For that purpose a standard methodology comprising the positive aspects of both traditional Indian practices and modern scientific methods has been formulated and followed. Conservation of manuscripts is carried out through 33 Manuscript Conservation Centres (MCCs), besides organizing preventive and curative conservation workshops at different locations of the country as per priorities. Manpower development in the field of manuscript conservation, another objective of the NMM is also taken care of during workshops. Conservation workshops aim at fulfilling dual objectives of conservation of manuscripts and generate trained manpower in the field of manuscript conservation. Realising the urgency of conservation, NMM has launched the conservation of manuscripts in a massive scale. Besides these, in 2011, NMM has established an in-house laboratory at its head-quarters in Delhi. Here 4 well-trained conservators are busy in treating important cashes of manuscripts in preventive and curative ways.

Conservation Workshops Held in 2013 – 2014

Sl. No.	Date	Name of the Workshop	Collaborating Institution/ Venue	No. of Manuscripts Conserved
1.	11th – 15th Nov., 2013	Workshop on Preventive Conservation	Manipur State Archives Keishampat, Imphal - 795001, Manipur	250

Sl. No.	Date	Name of the Workshop	Collaborating Institution/ Venue	No. of Manuscripts Conserved
2.	18th – 22nd Feb., 2014	Workshop on Preventive Conservation	Andhra Pradesh State Archives and Research Institute, Hyderabad	1,500
3.	8th – 13th March, 2014	Workshop on Preventive Conservation	Patna Museum Vidyapati Marg, Patna	225
4.	10th – 15th March, 2014	Workshop on Preventive Conservation	Kundakunda Jnanapitha 584, M.G. Road Tukoganj, Indore – 452 001 Madhya Pradesh	2,000
5.	2nd Sept. – 8th October, 2013	Workshop on Curative Conservation of Palmleaf	INTACH ICI Odisha Art Conservation Centre Bhubaneswar, Odisha	-
6.	17th Feb. – 15th March, 2014	Curative Conservation Workshop	INTACH Lucknow Uttar Pradesh	-

Contribution of the MCCs

Sl. No.	Name of the MCC	No. of Mss. Conserved in Preventive Way	No. of Folios Conserved in Preventive Way	No. of Mss. Conserved in Curative Way	No. of Folios Conserved in Curative Way	Total Number of Folios Conserved
1.	AITIHYA Plot No. 4/330, 1st Floor P.O. Sisupala Gada (Near Gangua Bridge, Puri Road), Bhubaneswar - 2 Odisha	148	24,906	55	2,976	27,882
2.	Aklank Shodh Sansthan Aklank Vidyalaya Association Basant Vihar Kota, Rajasthan	141	15,951	24	7,362	23,313
3.	AP State Archives and Research Institute Tarnaka Hyderabad-7 Andhra Pradesh	29	41,773	20	27,843	69,616
4.	Bhandarkar Oriental Research Institute Deccan Gymkhana Pune-411 037 Maharashtra	11	1,859	11	871	2,730

Sl. No.	Name of the MCC	No. of Mss. Conserved in Preventive Way	No. of Folios Conserved in Preventive Way	No. of Mss. Conserved in Curative Way	No. of Folios Conserved in Curative Way	Total Number of Folios Conserved
5.	B.L. Institute of Indology Alipur G.T. Karnal Road, Delhi	140	7,751	98	4,353	12,104
6.	Central Institute of Buddhist Studies Choglamsar Leh (Laddak)-194001 Jammu & Kashmir	2	509	2	509	1,018
7.	Central Library Banaras Hindu University Varanasi, Uttar Pradesh	3,593	91,783	41	3,033	94,816
8.	Dept. of History Tripura University P.O. – Suryamani Nagar Dist. – Tripura West Tripura	-	13,071	11	690	13,761
9.	Department of Language and Culture Himachal State Museum Chaura Maidan Shimla – 171 004 Himachal Pradesh	417	31,673	37	5,371	37,044
10.	Deptt. of Manuscriptology, Kannada University Hampi, Karnataka	221	20,990	223	25,409	46,399
11.	Dept. of Sankskrit, Pali & Prakrit Kurukshetra University Kurukshetra, Haryana	-	25,150	-	1256	26,406
12.	Digambar Jain Pandulipi Samrakshan Kendra Jain Vidya Samsthan Digambar Jain Nasim Bhattarakji Sawai Ramsing Road Jaipur – 302004 Rajasthan	1,125	27,635	61	7,503	35,138
13.	Himalayan Society for Heritage and Art Conservation Markandeya House Rani Bagh, Nainital -263 126 Uttaranchal	353	16,583	256	7,775	24,358

Sl. No.	Name of the MCC	No. of Mss. Conserved in Preventive Way	No. of Folios Conserved in Preventive Way	No. of Mss. Conserved in Curative Way	No. of Folios Conserved in Curative Way	Total Number of Folios Conserved
14.	ICKPAC, INTACH Chitrakala Parishath Art Conservation Centre Kumara Krupa Road Bengaluru - 560 001 Karnataka	482	54,421	96	10,954	65,375
15.	Indian Council of Conservation Institutes HIG- 44, Sector – E Aliganj Scheme Lucknow – 226024 Uttar Pradesh	-	-	185	6,727	6,727
16.	INTACH ICI Orissa Art Conservation Centre Orissa State Museum Premises Bhubaneswar –751 014 Odisha	77	8,913	159	15,593	24,506
17.	Keladi Museum & Historical Research, P.O. Keladi Sagar Tq, - 577401, Dist. - Simoga, Karnataka	271	28,031	613	92,635	1,20,666
18.	Kund Kund Jnanpith Devi Ahilya University 584, M. G. Road Tukoganj, Indore – 452 001	1,703	1,21,455	2	307	1,21,762
19.	Manipur State Archives Keishampat Imphal - 795 001, Manipur	52	27,553	131	2,433	29,986
20.	Manuscript Library Hardinge Building 1st Floor, Senate House 87/1, College Street University of Calcutta Kolkata-700073 West Bengal	1,277	26,313	-	-	26,313
21.	Mazahar Memorial Museum Bahariabad Ghazipur Uttar Pradesh	305	55,081	-	-	55,081

Sl. No.	Name of the MCC	No. of Mss. Conserved in Preventive Way	No. of Folios Conserved in Preventive Way	No. of Mss. Conserved in Curative Way	No. of Folios Conserved in Curative Way	Total Number of Folios Conserved
22.	Nagarjuna Buddhist Foundation 18, Andhiari Bagh, Gorakhpur – 273 001 Uttar Pradesh	1,281	20,928	-	-	20,928
23.	National Institute of Prakrit Studies and Research Shri Davala Teertham Shravanabelagola Dist: Hassan Karnataka	393	67,777	-	-	67,777
24.	Oriental Research Institute, Sri Venkateswara University Tirupati -517507 Andhra Pradesh	167	15,261	53	1,028	16,289
25.	Oriental Research Institute & Manuscripts Library University of Kerala Kariavattom Thiruvananthapuram Kerala	955	1,94,713	955	21,540	2,16,253
26.	Odisha State Museum Bhubaneswar Odisha	162	37,011	10	528	37,539
27.	Patna Museum Vidyapati Marg Patna, Bihar	2,254	60,732	102	2,029	62,761
28.	Rampur Raza Library Hamid Manzil Quila Rampur Rampur Uttar Pradesh		8,244	16	2,901	11145
29.	Sambalpur University Library Sambalpur University Burla – 768001 Odisha	205	1,46,266	35	14,684	1,60,950
30.	Sri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute Devashram Mahadeva Road Arrah– 802 301, Bihar	356	56,230	60	4,607	60,837

Sl. No.	Name of the MCC	No. of Mss. Conserved in Preventive Way	No. of Folios Conserved in Preventive Way	No. of Mss. Conserved in Curative Way	No. of Folios Conserved in Curative Way	Total Number of Folios Conserved
31.	Krishnakant Handique Library, Gauhati University, Gopinath Bardolai Nagar, Assam	392	19,911	13	721	20,632
31.	Sri Vadiraja Research Foundation Sri Puthige Matha Car Street, Udupi Karnataka	461	37,356	162	4,110	41,466
32.	Thunchan Memorial Trust Thunchan Parambu Tirur – 676 101 Dist. - Malapurram, Kerala	78	22,033	-	-	22,033
33.	Vrindavan Research Institute, Raman Reti Vrindavan - 281121 Uttar Pradesh	2,767	16,227	277	52,187	68,414

Conservation at NMM Lab., New Delhi from 1st April 2013 to 31st March 2014

NMM has established a Conservation Laboratory at its Office in New Delhi (11 Mansingh Road, 3rd Floor, New Delhi – 110 001). The laboratory started functioning on 7th September, 2011. In 2013 – 2014, the conservation team at the NMM Lab. worked on 19,197 folios (11,982 folios in preventive way and 7,2156 folios curative way). Detail of the work done is as under:

Sl. No	Repository/Owner	No. of manuscripts received	Total Folios	Status of the work done from 1st April 2013 to 31st March 2014
1.	K. Mishra, Ghaziabad	40 paper manuscripts	1009 folios	Completed
2.	Jamiah-Hansot-Bharuch, Gujarat	18 Paper manuscripts	2170 folios	Completed
3.	NMM Collection, New Delhi	8 Paper manuscripts	287 folios	Completed
4.	Prof. Abdul Haq, New Delhi	2 Paper manuscripts	441 folios	Completed and Returned
5.	Shri Rajesh Acharya, Banaras	1 paper manuscripts	172 folios	Completed and Returned
6.	Prof. Sherif Hussain Kasmi, New Delhi	1 Paper manuscripts	115 folios	Completed and Returned
7.	Prof. Md. Afzal-Ur-Rahman, Noida	60 paper manuscripts	25,000 folios	Continuing
8.	Om Parkash Mittal, Punjab	1 paper manuscripts	409 folios	Continuing
9.	Lokesh Chandra, New Delhi	2 paper manuscripts	88 folios	Continuing

Digitization

Digitization of manuscripts as means of protecting and documenting textual heritage has emerged as an important field in recent times. With the advancement of information technology, digitization promises documentation and preservation of original texts, facilitating at the same time, greater access for scholars and researchers. In 2004, the Mission had initiated a Pilot Project of Digitization, aiming at digitizing several caches of manuscripts across the country. In 2006, the Pilot Project was completed, with the Mission setting standards and guidelines for digitization. New projects were taken up, targeting some of the most important manuscript collections of the country. The second phase of digitization was successfully completed and the major part of the estimated work has been done under the Third Phase of Digitization. With the fresh digitization projects, the Mission seeks to create a digital resource base for manuscripts.

Objectives of digitization

- Digital preservation of the original manuscripts for posterity
- Promotion of access and usage for scholars and researchers, without tampering with original copies
- Creation of a digital library as a resource base of the digitized copies of some of the significant manuscript collections of the country
- Creation of standards and procedures for digitization of manuscripts

Methodology

- Pilot Project in five States across the country covering five repositories in the first phase of digitization
- Digitization of 80 lakh manuscript pages in the second phase in important manuscript repositories all over the country
- Targeting, in the third phase, digitization of another 80 lakh pages of manuscripts in repositories all over the country
- Digitizing catalogues
- Creating microfilms from digital images for archival purpose
- Creation of Digital Manuscripts Library for storage and easy access for research

Output Specification

Three types of images are generated for every page of a manuscript:

1. Master Image (original, uncleaned and uncompressed)
2. Clean Master (cleaned, loss and less compressed image)
3. PDF-A (derivative lossy image)

The detail specifications of these images are as follows:

1. Raw Master Image: (Original Digitized Image)

File Format: Tiff 6.0 or higher

Compression: Uncompressed

Spatial Resolution: 300/600 dpi, minimum, optical

Digital Master: 3000-5000 Pixel

Subject Metadata: As per standards fixed by National Mission for Manuscripts

File Naming: As Specified by NMM

2. Clean Master Image:

File Format: Tiff 6.0 or higher

Compression: Loss less compression

Spatial Resolution: 8" X 10" at 300 dpi

Clean Master: 3000 x 5000 Pixel

Subject Metadata: As per standards fixed by National Mission for Manuscripts

File Naming: As Specified by NMM

3. PDF-A Image:

File Format: PDF

Compression: Group 4 CCITT lossy compression

Spatial Resolution:1024 x 768 pixels at 300 dpi

Subject Metadata: As per standards fixed by National Mission for Manuscripts

File Naming: As Specified by NMM

Naming Convention

The naming of images is an important issue that is handled by the Mission in the most enabling manner. Each manuscript digitized is already documented on the Mission's Electronic Database and the Meta Data (the main fields describing the manuscript) information for each manuscript scanned is identified by its Manuscript Identification Number (Manus ID) which is generated by the Mission's Manus Granthavali software. So the Manus ID and the Accession Number, from the Institute/ Repository catalogue where the manuscript is kept and where the digitization is taking place, forms the basis of naming the digitized images of each manuscript page.

Quality Assurance

It is imperative that all digitization undergoes a series of quality control analyses at various stages. This is an accepted method of verifying that all reproduction is up to the prescribed standard. Bearing in mind limits on time and finances, some form of sampling is necessary to reduce the cost of this process. As per the NARA a minimum of 10 images or 10% of images (whichever number is higher) need to undergo quality control (these should be selected randomly from the entire collection). Ideally Quality Assurance (or QA) is performed on all master images and their derivatives with each step being fully documented. The types of things which are looked for are:

- size of image
- resolution of image
- file format
- image mode (i.e. colour images are in colour, not greyscale)
- bit depth
- details highlights and shadows
- tonal values
- brightness
- contrast
- sharpness
- interference
- orientation
- noise
- cropped and border areas, missing text, page numbers, etc.
- missing lines or pixels
- text legibility

The overall return is checked for file name integrity, completeness of job, and overall meeting of project scope. NARA recommends that if more than 1% of images looked at

fail the above quality control checks then the job needs to be redone. Quality control parameters are well defined in the Mission. It has conducted meetings on setting up of Quality Control Standards. the process initiated by Khuda Bakhsh Oriental Public Library, Patna, Bihar. Experts on Digitization and Imaging Technology have come to a conclusion that random checking by Imaging Experts is the best and cheapest solution to keep a check on deliverables by the Digitizing Agency. Mission has adopted the observation and will send Imaging Experts to Digitization Sites for Quality Checking before final delivery.

Having accepted the advantages digitization presents for facilitating access, and the disadvantages digitization has in acting as a substitute for standard preservation methods. It is clear from previous projects that it is most cost-effective to digitize at a master level quality to allow for multiple outputs (e.g. print, access images, etc.) that can be used as alternatives for the original document in the long run.

Repositories covered under the Digitization Project

The Mission has digitized Manuscripts in various places throughout the country under the Pilot project and Second Phase, namely:

1. Oriental Research Library, Srinagar, Jammu & Kashmir
2. Kutiyattam Manuscripts, Kerala
3. Siddha Manuscripts, Tamil Nadu
4. Odisha State Museum, Bhubaneswar, Odisha
5. Selected Jain Manuscripts
6. Krishnakant Handique Library, Guwahati
7. Hari Singh Gaur University, Sagar
8. Anandashram Sanstha, Pune
9. Himachal Academy of Arts Culture and Languages, Shimla
10. Vrindavan Research Institute, Vrindavan
11. Institute of Asian Studies, Chennai
12. French Institute, Pondicherry
13. Kunda Kunda Jnanapith, Indore
14. Bhogilal Leherchand Institute of Indology, Delhi
15. Akhil Bharatiya Sanskrit Parishad, Lucknow

NMM is digitizing another cache of Manuscripts under the Third Phase in the following repositories:

1. Rajasthan Oriental Research Institute, Rajasthan
2. Rashtriya Sanskrit Sansthan, Allahabad
3. Bharat Itihaas Samshodhan Mandal, Pune
4. HMS Central Library, Jamia Hamdard, New Delhi
5. VVBIS & IS, Punjab University, Hoshiarpur

Digitization: 1st Phase (2005 to 2007)

Sr.no	Name of the Institute	No. of Manuscripts	No. of Pages	State
1	Odisha State Museum , BBSR, Odisha	1,749	3,50,000	Odisha
2	Jain Manuscripts, Lucknow (O.P. Agrawal collection)	180	42,951	U.P.
3	Kutiattam Manuscripts, Kerala	340	38,260	Kerala
4	Oriental Research Library, J&K	10,147	19,73,816	J&K
5	Allama Iqbal Library, J&K	365	97,648	J&K
6	Sri Pratap Singh Library, J&K	74	28,536	J&K
7	Siddha Manuscripts, Chennai	1,938	78,435	Tamil Nadu
	Total No	**14,793**	**26,09,646**	

Digitization: 2nd Phase (2007 to 2012)				
Sr.no	Name of the Institute	No. of Manuscripts	No of Pages	State
1	Krishnakanta Handique Library, Guwahati	2,091	1,57,013	Assam
2	Odisha State Museum , BBSR, Odisha	5,983	14,01,976	Odisha
3	Dr. Harisingh Gour University, Sagar	1,010	1,17,603	M.P
4	Anandashram Sanstha, Pune	7,939	9,21,667	Maharashtra
5	Bharat Itihas Sanshodhan Mandal, Pune	4,429	6,60,730	Maharashtra
6	French Institute of Pondicherry, Puducherry	506	1,70,629	Tamil Nadu
7	Institute of Asian Studies, Chennai	500	34,505	Tamil Nadu
8	Kundakunda Jnanapitha , Indore	7,506	11,56,373	M.P.
9	Bhogilal Leherchand Institute of Indology, Delhi	22,907	10,64,900	Delhi
10	Akhil Bhartiya Sanskrit Parishad, Lucknow	12,887	4,58,376	U.P.
11	Rashtriya Sanskrit Sansthan, Allahabad	1,545	1,65,220	U.P.
12	Himachal Academy, Shimla	225	55,751	H.P.
13	Vrindavan Research Institute, Vrindavan	22,375	15,61,864	U.P.
	Total	**89903**	**79,26,607**	

Digitization: 3rd Phase (2012 to 2014)				
Sr.no	Name of the institute	No. of Manuscripts	No of Pages	State
1	Bharat Itihas Samshodhan Mandal, Pune	22,873	14,50,375	Maharashtra
2	Anandashram Samstha, Pune	6,734	3,27,484	Maharashtra
3	Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune	35	22,679	Maharashtra
4	Allahabad Sanskrit Sansthan, Varanasi	35,020	25,76,879	Uttar Pradesh
5	Jamia Hamdard, New Delhi	4,200	10,10,273	Delhi
6	VVBIS & IS, Hosiarpur	1,500	1,14,376	Punjab
7	Odisha State Museum, Bhubaneswar	3,175	6,03,950	Odisha
8.	NMM Collection, New Delhi	562	1,21,329	Delhi
9.	Rajasthan Oriental Research Institute	28,813	17,92,864	Rajasthan
	Total	**1,06,697**	**80,39,407**	

Total number of pages digitized up to 31st March, 2014 (including first, second and third phases) = 26,09,646 + 79,26,607 + 80,39,407 = 1,85,75,660. Digitized images of 1,85,75,660 pages of manuscripts are available with the NMM as on 31st March, 2014.

National Digital Manuscripts Library

One of the primary aims of the NMM is to set up a Digital Manuscripts Library of India which will foster creativity and easy access to all human knowledge in the form of manuscripts of this country. As the first step in realizing this mission, it is proposed to create the Digital Manuscripts Library with a searchable collection of many valuable Manuscripts,

predominantly in Indian languages, available at one place. This digital library will also become an aggregator of all the knowledge and digital contents created by other digital library initiatives in India. Very soon we expect that this library would provide a gateway to Indian Digital Manuscripts Libraries in science, arts, culture, music, traditional medicine, vedas, tantras and many more disciplines. The result will be a unique resource accessible to everyone, without regard to socio-economic background or nationality.

Up to 31st March, 2014, NMM has collected DVDs and hard disks containing digital images of 1,85,75,660 pages and more will be received in future as the work of digitization is going on. The data is not safe if kept in DVD's/HDDs and there are chances of data getting corrupt. The life of the DVD/HDD is not more than 5 years. Hence, the storage solution is an urgent need of the hour to ensure the safety and easy retrieval of data. A server is needed to optimize the storage of the digitized images and keep them safe. The copy of digitized manuscripts data needs to be kept in the server as there are chances of loss of data, if not stored in a proper manner. A data server of 100 TB (which can be upgraded to more than 600 TB in future) is being acquired for storing all the digital images in the Digital Manuscripts Library which will be linked with the Manuscript database for the research purpose of the scholars.

NMM is planning to set up a state of the art Digital Manuscript Library at New Delhi with the capacity for 10 users initially (to be expanded up to 100 users) to facilitate access to this knowledge base. Users are expected to access data from a Data Centre through desktop PCs. New data is expected to be added to the storage servers on a daily basis. It is also required that the Data Centre adheres to the international standards of data storage and availability.

Digitization to microfilming: NMM has collected around 1,85,75,660 pages of digital images of valuable manuscripts and the process is continuing. The images are presently stored in DVDs but for long term storage the images need to be converted into the microfilm form. This will prove beneficial for the security of the data in long run for many centuries (more than 500 years). The microfilming will serve the archival purpose of the digital data which can be kept safe in relatively lesser space and may be used by generations to come.

NMM aims to make an archive of the digital data which can be used for centuries by the users for accessing the desired information from manuscripts. At present, microfilming is the only feasible media for archival storage of the data for the longest period of time. It is the only standard accepted worldwide for archival purpose.

Future plans of digitization

1. Around 4 lakh manuscripts are targeted to be digitized from different zones within March 2017.
2. The digitized manuscripts data needs to be preserved. A data server of 600 TB will be purchased for storing all the digital images of the manuscripts digitized.
3. Expedite the process of establishing a digital library of manuscripts and linking the library with the manuscripts database for the research purpose of the scholars.

Outreach Programmes

The NMM seeks not merely to locate, catalogue and preserve India's manuscripts, but to enhance access, spread awareness and encourage use of the knowledge content therein for educational purposes.

The Mission seeks to bring the several facets of knowledge contained in manuscripts to the public through lectures, seminars, publications and specially designed programmes for school children and university students.

We have a series of lectures titled 'Tattvabodha' in which we invite scholars representing different intellectual disciplines to share their thoughts with the public at large. The primary aim of this series is to bring the most eminent scholars of Indian knowledge systems to a forum where they can present their ideas and interact with interested members of the public. We have instituted this as a monthly lecture series in Delhi, and also in other parts of the country, wherever possible. In the course of this series, we were honoured to have most eminent scholars in the field of Indology, especially manuscript studies. So far, this has been a successful programme and we are also publishing the papers presented with the permission of the speakers.

The objectives of the outreach programmes are:

- Creation of a platform for discussion, debate and critical engagement with manuscripts,
- Promotion of awareness and understanding of the manuscript heritage of India,
- Generation of interest, awareness and knowledge of the manuscripts among the general populace.



Scholars on the Dias, at Tattvabodha Lecture held at Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth (Deemed University), New Delhi on 25th March, 2014

Seminars Held in 2013 - 2014

Date	Collaborating Institution/ Venue	Topic
21st to 23rd November, 2013	APGOML & RI, Hyderabad	Unpublished Manuscripts on Medicine
13th to 15th February, 2014	Shri Guljarilal Nanda Centre for Ethics, Philosophy, Museum and Library, Kurukshetra University, Kurukshetra (Haryana)	Manuscript Heritage of Haryana
13th to 15th March, 2014	Shri Jagannath Sanskrit University, Puri (Odisha)	Indian Culture as Reflected in the Manuscripts of Odisha
19th to 21st March, 2014	Braj Sanskriti Shodh Sansthan, Brindavan (UP)	वैष्ण सम्प्रदायों की अल्पज्ञात-अज्ञात पाण्डुलिपि
27th to 29th March, 2014	DAV Post-Graduate College, Jalandhar (Punjab)	Awakening Among People Through the Lens of Manuscripts
28th to 30th March, 2014	Centre for Professional Studies in Urdu, Jammu University (J & K)	Importance of Research and Manuscripts in Literature

Public lectures under Tattvabodha Series were held at

1. Akhil Bharatiya Sanskrit Parishad, Lucknow
2. APGOML, Hyderabad
3. Keladi Museum, Dist,- Simoga, Karnataka
4. Shri Lal Bahadur Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi
5. Tripura University, Tripura, and
6. NMM, New Delhi

Exhibition of Manuscripts were held at

1. Shriram College of Commerce, New Delhi
2. DAV College, Jalandhar (Punjab)



Curious visitors at Manuscript Exhibition, held from 27th to 29th February, 2014, at DAV College, Jalandhar (Punjab)

Manuscript Studies

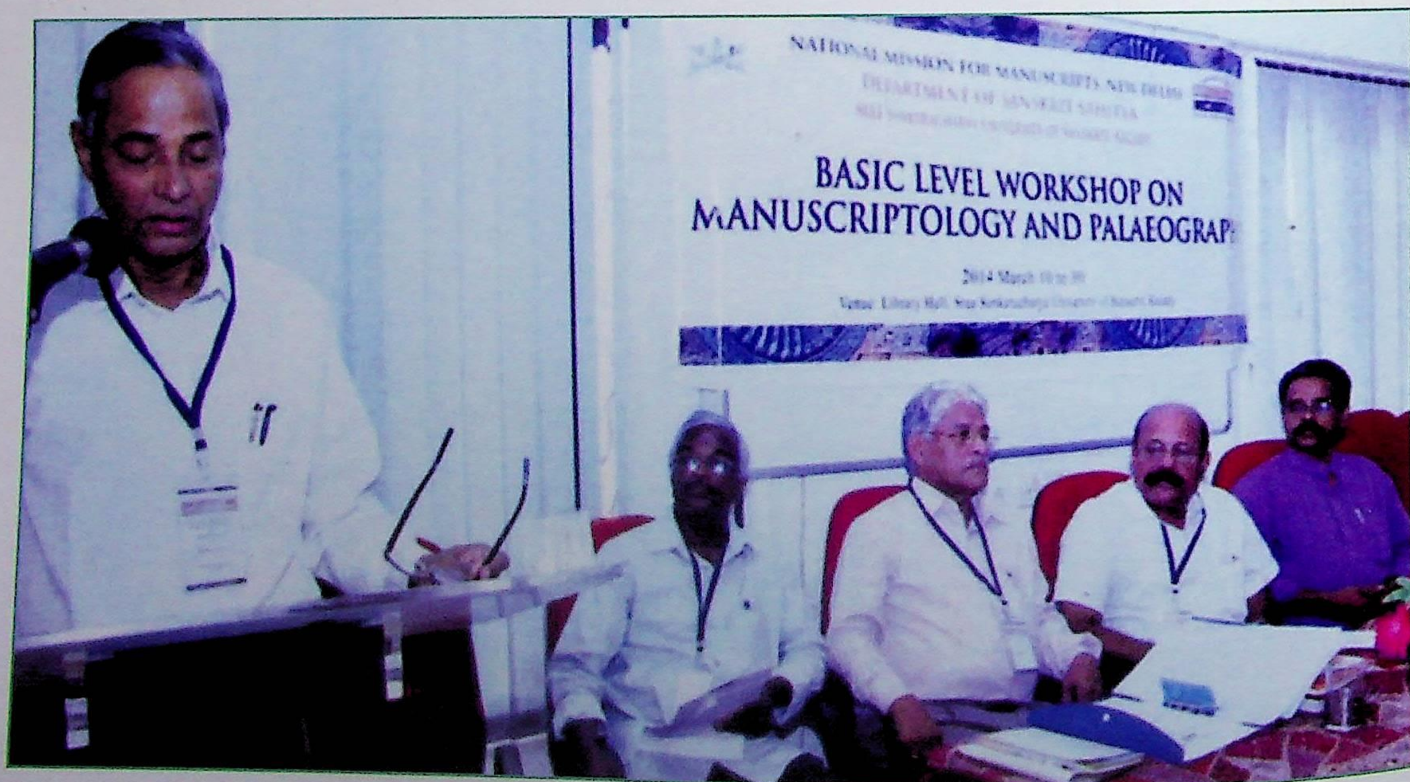
The manuscript heritage of India is unique in its linguistic and scriptural diversity. Dearth of skill or expertise in scripts in contemporary researchers has, however, posed a threat to the study and understanding of this textual heritage. To address this, the NMM has developed a detailed framework, with a view to train students and researchers in Indian scripts and manuscript studies. Through workshops, introduction of manuscriptology courses in universities, and providing fellowships for the higher studies in manuscriptology, NMM seeks to contribute directly to the production of a skilled resource pool in manuscript studies.



Inauguration of the Preventive Conservation Workshop at Indore, 10th March 2014

Workshops on Manuscriptology, Held in 2013 – 2014

Date	Title of the Workshop	Name of the Collaborating Institution/ Venue	Scripts Taught	No. of Persons Trained
15th March to 4th April, 2013	Basic Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Kashmir University, Srinagar (J & K)	Kofiq, Naskh, Nastaliq	46
22nd March to 11th April, 2013	Basic Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Dept. of Library and Information Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi (UP)	Brahmi, Sarada, Newari	37
24th June to 14th July, 2013	Basic Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Institute of Asian Studies, Chemmancherry, Chennai	Brahmi, Grantha, Modi, Vatteluttu	34
4th March to 24th March, 2014	Basic Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, New Delhi	Brahmi, Sarada, Newari	30
10th March to 24th March, 2014	Basic Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Shri Shankaracharya University of Sanskrit, Kalady (Kerala)	Brahmi, Grantha, Tigelari	32
18th April to 22nd May, 2013	Advance Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Dept. of Urdu, University of Bombay, Mumbai	Kofiq, Naskh, Nastaliq	35
6th November to 11th December, 2013	Advance Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Oriental Research Institute, Shri Venkateswar University, Tirupathi	Brahmi, Grantha	35



Inauguration of the Preventive Conservation Workshop at Indore, 10th March 2014

Publication

Publication of unpublished manuscripts, critical editions of manuscripts, seminar papers, lectures etc. occupy a position of prime emphasis in the scheme of things undertaken by the NMM. The NMM has started five primary series –Tattvabodha (lecture papers), Kṛtibodha (critical editions), Samikṣikā (seminar papers), Saṁrakṣikā (papers of seminars on conservation) and Prakāśika - besides other publications. So far NMM has published four volumes under Tattvabodha series, five volumes under Kṛtibodha, five under Samikṣikā, two under Saṁrakṣikā and seventeen under Prakāśika Series.

Publications of the NMM

Tattvabodha: In January 2005, National Mission for Manuscripts launched a monthly public lecture series titled, Tattvabodha. Tattvabodha has established itself as a forum for intellectual debate and discussion. Eminent scholars representing different aspects of Indian knowledge systems address and interact with audiences both in Delhi and other centres across the country. The Mission publishes a compilation of these lectures by the same name, Tattvabodha. Four volumes of Tattvabodha have been published so far.

Saṁrakṣikā: National Mission for Manuscripts organises national level seminars as part of its outreach programme. The papers presented in these seminars are published under the title, Saṁrakṣikā (conservation related) and Samikṣikā (research oriented) series.

The first volume of Saṁrakṣikā: Indigenous Methods and Manuscript Preservation, published in September 2006, contains proceedings of the seminar 'Oral Traditions and Indigenous Methods of Preservation and Conservation of Manuscripts' organised at Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), New Delhi in February 2005. The papers in this volume emphasize on indigenous techniques and methods of conservation, the need to revive these as they are beneficial to manuscript conservation. Another volume, Saṁrakṣikā Vol II: Rare Support Materials for Manuscripts and their Conservation has been published in 2010.

Samikṣikā: Samikṣikā-I contains proceedings of the seminar, 'Buddhist Literary Heritage in India: Text and Context ' organized at Calcutta University Manuscript Resource Centre, Kolkata in July 2005. Samikṣikā-II is an anthology of papers presented at a national seminar on the Mahābhārata, organized by the National Mission for Manuscripts, in February 2007. The volume is on Text and Variations of

the Mahābhārata: Contextual, Regional and Performative Traditions. Four more volumes of the Samikṣikā have already been published so far.

Kṛtibodha: National Mission for Manuscripts has taken the initiative of publishing critical editions of rare and previously unpublished texts under the title Kṛtibodha. The first of the Kṛtibodha series is Vādhūlagṛhyāgamavṛttirahasyam of Nārāyaṇa Miśra critically edited by Prof. Braj Bihari Chaubey. The text is a versified commentary on the Vādhūlagṛhyāgamavṛtti, which itself is a short commentary on Vadhulagahyasutra. The text is important for the wealth of information it contains on domestic rites and rituals, especially related to Gṛhya and Smartakarma. It also has reference to other important texts such as Katha-Āranyaka, Vadhulāgama and Vrata Sangraha which have so far remained unknown. Another volume in this series, which has already been published, is Kṛtibodha II: Srauta Prayogakḷpti of Acarya Sivasrona.

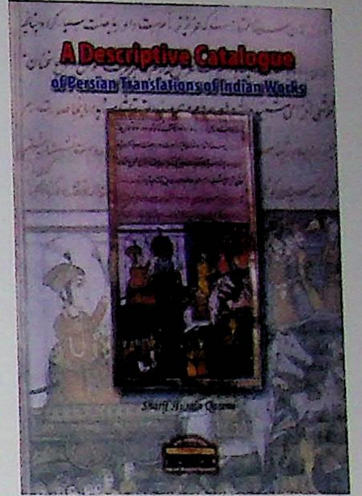
Prakāśika: Besides publishing the critical volumes of unpublished manuscripts, NMM has taken up a project wherein unpublished rare and important manuscripts are published. Seventeen volumes under the series, Prakāśika have been published so far.

Catalogues: The Mission not only encourages documentation of manuscript collections all over the country but also publishes them. We have a programme of publishing descriptive catalogues of all the collections of the Manuscript Resource Centres working with the Mission.

The Mission has published a catalogue of the exhibition of Indian manuscripts at the Frankfurt Book Fair, Germany. The catalogue covers several aspects of Indian manuscripts. It is divided into 6 sections; 'From Clay to Copper' giving us an idea of the variety of materials on which texts are found; 'The Making of a Manuscript' with information on styluses and inkpots; 'Fields of Learning' which provides an overview of the different areas which manuscripts deal in; 'Veneration, Submission, Worship' shows us the importance of the word which is considered sacred; the fifth section, 'Word and Image' provides us a glimpse of illustrated manuscripts in the country; lastly, 'Royal Commands and Plain Records' is an indicator of the fact that manuscripts were an integral part of lives of everyone from the King to the common man.

Vijñānanidhi : Manuscript Treasures of India, a catalogue of select manuscripts declared 'Vijñānanidhi: Manuscript Treasures of India' has also been prepared by the Mission. NMM has also published illustrated catalogue of rare Guru Granth Sahib manuscripts, Shabad Guru in Collaboration with National Institute of Punjab Studies, New Delhi

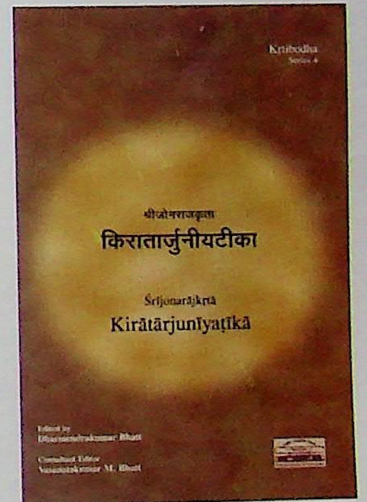
Books Published in 2013-14



A Descriptive Catalogue of Persian Translations of Indian works.

Editor:- Prof. Sherif Hussain Qasemi

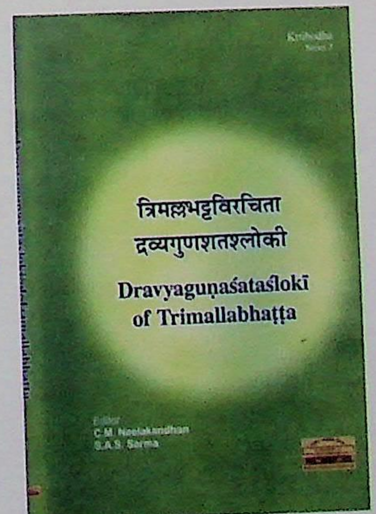
A descriptive Catalogue of Persian Translations of Indian works is the first attempt of its kind. Manuscripts and published editions of the work related to Hindu religion, philosophy, mysticism, Indian culture, science, music, history, romance, historical and semi-historical tales and moral fables and some works on Sikh religion have been catalogued in this volume. In total 2517 manuscripts and printed editions of such works have been recorded here. It is actually a documented record of the endeavors of Muslims in India to understand their homeland and its magnificent religious and cultural traditions. It is a point to note with appreciation that some of the Sanskrit works are now only available in their Persian translations.



Kritibodha-IV : Srijonarajakṛta Kiratarjuniyatika

Editor:- Dharmendra Kumar Bhatt, Vasant Kumar Bhatt

The text is one of the Gurukula scheme projects critically edited by Dharmendra Kumar Bhatt under the Guru, Prof. Vasant Kumar Bhatt. The text comprises the commentary of Shri Jonaraja on Kiratarjuniya of Bharavi. The commentary has been critically edited and transcribed from Sarada script to Devanagari script.

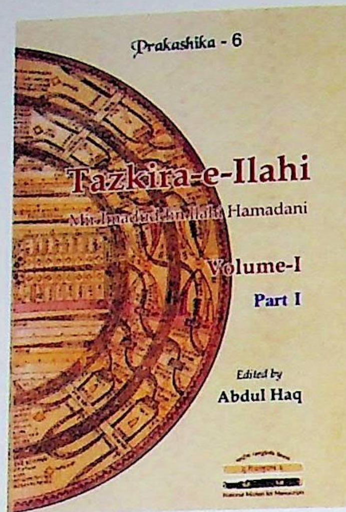


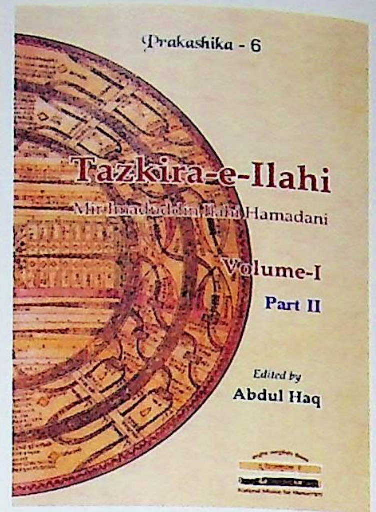
Kritibodha-V : Dravyagunasatasloki of Trimallabhatta

Editor:- Dr. C.M. Neelakandhan Dr. S.A.S. Sarma

The persent text is transcribed and critically edited in one of the Manuscriptology and Paleography workshops conducted by the Mission. It is an important work related to Ayurveda describing medicinal properties and usage of particles of food.

Prakasika Volume VI (Part I & II) : Tazkira-e-Ilahi of Mir Imaduddin Ilahi Hamdani

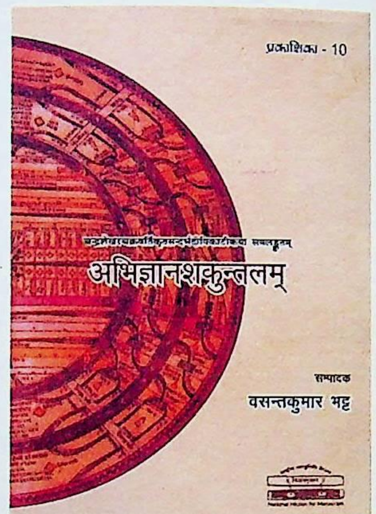




Editor:- Prof. Abdul Haq

Tazkira-e-Ilahi, written by Imaduddin Al Husaini, poetically called Ilahi, is an unique Persian work of 17th century A.D. The work contains information of multitude of writers besides some of Indian poets. *Tazkira-e-Ilahi* was also known as *Khazina-e-Ganj-e-Ilahi or Khazina-e-Ganj-e-ilahi or Ilahi's Treasury.*

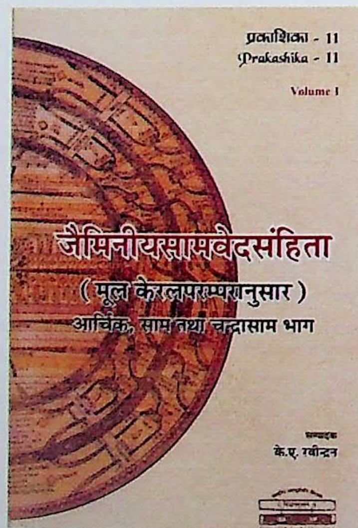
Prakasika- X : Abhijnanasakuntalam with Sandarbhadipika Tika

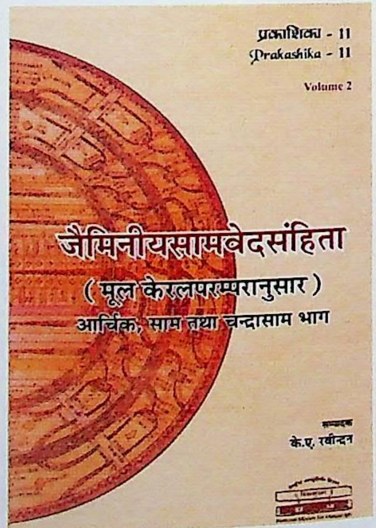


Editor:- Prof. Vasant Kumar Bhatt

The texts brings forth the unpublished commentary "Sandarbhadipika" on Abhijnanasakuntalam; probably the oldest commentary prevalent in Bengal.

Prakasika -XI (Part I & II) : Jaiminiyasamavedasamhita



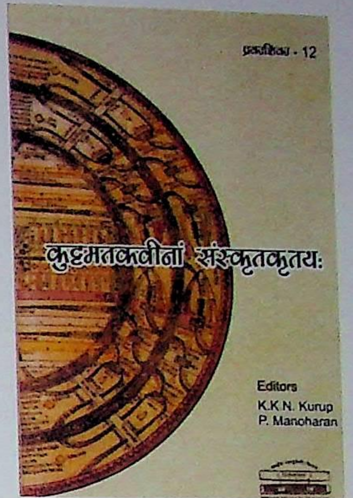


Editor:- Prof. K. A. Ravindran

The Objective of this project is to bring out the critical edition of the Samhita of Jaiminiyasamaveda text of Kerala tradition containing Arcika, Sama and Candrasama portions. The entire Samhita of Jaiminiyasamaveda (Kerala version) is not printed so far in Devanagari script. It is preserved in the transcript form among the Namputiris of Kerala. The transcript contains about 400 pages of notebook size written in Malayalam character. The Samaveda chanting of Kerala including all its modes like Arcika, Sama, Candrasama, Uha and Usani has many characteristic features when compared to the chanting of other parts of India. Also the arrangement of the text of Jaiminiyasamaveda of Kerala is different from that of other parts of the country.

Considering all these factors the publication of Samita of Jaiminiyasamaveda of Kerala version including Arcika, Sama and Candrasama portions in both Devanagari and Malayalam script has relevance.

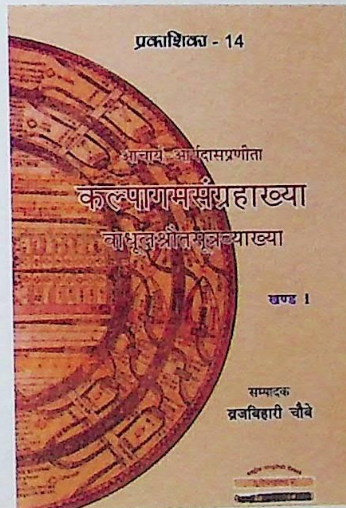
Prakasika -XI : Sanskrit Manuscripts of Kuttamatt Family of Kasaragod.

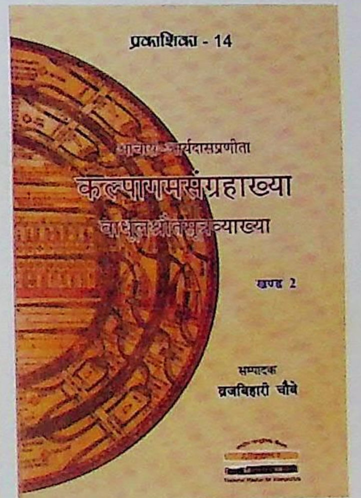


Editor:- K.K.N. Kurup P. Manoharan

Since 1820, the Kuttamatt family of Kasaragod had contributed by way of stotras prayers, commentaries, astrology and other branches of technical literatures in Sanskrit. But they were written in Malayalam script as was the popular tradition in Kerala. This creativity in literature continued till 1960 to have a voluminous composition in the family. Unfortunately many of these manuscripts had been lost forever due to negligence. As the texts were written in Malayalam scripts they could not come in the mainstream of Sanskrit publications of India. In this book some strotras composed by scholars of Kuttamatt Family are published in Devanagari script along with hindi translation.

Prakasika-XIV (Part I & II) : Kalpagamasamgraha





Editor:- Prof. Braj Bihari Chaubey

Kalpagamasamgraha of Aryadasa, the commentary of Vadhulasrautasutra is another text of Vadhula tradition which is being published for the first time. It is a very important text containing significant information of the Srauta rituals practised through generations who used to follow the Vadhula tradition. Acarya Aryadasa, most likely of thirteenth century AD, is considered to be one of the ancient commentaries of the Vadhulasrautasutra. In his work, he refers to his predecessors who composed many such ritualistic texts but unfortunately most of them are not available to us till date.

Committees Governing the National Mission for Manuscripts

National Empowered Committee

Chairperson

Minister, Ministry of Culture, Government of India

Official Members

1 Secretary, Ministry of Culture, GoI
2 Member Secretary, IGNCA, New Delhi
3 Joint Secretary, Ministry of Culture, GoI
4 Director General, National Archives of India, New Delhi
5 Director, National Mission for Manuscripts – Member Secretary

Non-Official Members

6 Prof. V. R. Panchmukhi
7 Prof. K.K.N. Kurup
8 Prof. A.M.I. Dalvi
9. Prof. B.S. Kumar
10. Dr. Pushpa Dixit
11. Shri Shyam Singh Rajpurohit
12. Prof. K.A. Gunashekharan
13. Mrs. K.H. Sarojini Devi

Executive Committee

Chairman

Secretary, Ministry of Culture, GoI

Official Members

1. Member Secretary, IGNCA, New Delhi
2. Joint Secretary, Ministry of Culture, GoI
3. Mission Director, National Mission for Manuscripts – Member Secretary

Non-Official Members

4. Prof. Ashfaq Ahmed
5. Dr. Mohan Gupta
6. Mrs. Usha Suresh

Finance Committee

Chairman

Financial Adviser, Ministry of Culture

Members

1. Member Secretary, IGNCA, New Delhi
2. Joint Secretary, Ministry of Culture, GoI
3. Director, Finance, Ministry of Culture, GoI
4. Director, National Mission for Manuscripts – Member Secretary

Project Monitoring Committee

Chairman

Joint Secretary, Ministry of Culture, GoI

Official Members

1. Joint Secretary, IGNCA
2. Director, Ministry of Culture, GoI
3. Mission Director, National Mission for Manuscripts – Member Secretary

Non-Official Members

4. Prof. V. Kutumba Sastri
5. Prof. H. K. Satapathy, Vice Chancellor, Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, Tirupati
6. Shri Chamu Krishna Sastri, Samskrita Bharati
7. Dr. Imtiaz Ahmed, Director, Khuda Bakhsh Library, Patna
8. Dr. Jitendra B. Shah, Director, Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology, Ahmedabad
9. Dr. Ravindra Pant

Our Partners

Manuscript Resource Centres (MRCs)

To create an extensive network for documentation, cataloguing, data entry and awareness among the people and to assist the keepers and stakeholders of manuscripts, the Mission has set up Manuscript Resource Centres (MRC-s) across the country in universities, renowned research institutions and established non-governmental organizations engaged in work relating to manuscripts.

Organization of the MRCs

- Each MRC has a core team of personnel trained in various levels of expertise like cataloguing, editing and deciphering scripts
- The activities of each MRC are administered and coordinated by a Project Coordinator from the existing staff of the Institution
- To source the data through documentation of manuscripts, two types of personnel work with the MRC—scholars engaged in the field for documenting and the computer entry personnel to enter data in the Manus Granthavali software
- To set up a Manuscript Resource Centre equipped with one computer and a printer with internet facilities and the prescribed Manus Granthavali software where manuscript data is entered for eventual integration into the National Electronic Database of Manuscripts at the Mission Office
- To find resource persons to decipher and edit manuscripts through organizing workshops on manuscriptology and palaeography
- The funds for each MRC are disbursed according to its capacity and satisfactory output

Activities of MRCs

- The MRC-s engage trained researchers and students in the field of Manuscript documentation and catalogueing.
- MRC help in the National Surveys at the State level
- MRC-s create network with private and institutional manuscript custodians
- MRC-s find scholars to decipher manuscripts and teach scripts and other aspects of manuscriptology and palaeography
- MRC-s coordinate with the NMM office in Delhi to organize public lectures and national seminars related to manuscriptology and palaeography.

Supporting Manuscript Partner Centres

Apart from the Manuscript Resource Centres, the Mission in the past years has created a network of Manuscript Partner Centres. Here we have been associated with important

manuscript repositories for the documentation and cataloguing of their own collections. Their work involves basic cataloguing through Manus Granthavali software done by their own staff on a pro-rata basis or by outsourcing the task. Since 2006 to till date, the Mission was able to bring 43 such institutions within its network.

Documentation of Collections Abroad

The Mission had been preparing the ground for the documentation of collections located in repositories abroad. Mission has been in the process of drawing up a project for coordinating with the SAARC nations, to document Indian manuscripts in the various South Asian countries. It is expected that in 2014-15, this exercise in international networking and documentation of collections abroad will begin to yield tangible results in terms of the expansion of the National Electronic Database and the digitization of particularly rare and valuable Indian manuscripts.

Strategy

- Establishing contact with known repositories of Indian manuscripts in Europe, USA and Asia
- Sending the appropriate formats on which our manuscript data is collected
- Sending the Manus Granthavali software for computerization of data
- Helping repositories locate scholars in their areas who can read and decipher as yet un-catalogued Indian manuscripts
- Collecting catalogues where such catalogue of Indian manuscripts exist
- Digitize the Indian manuscripts available in collections abroad

List of Manuscript Resource Centres (MRCs) which have contributed data in the Financial Year 2013-14

State	Sl. No.	Name of the MRCs
Assam	1.	**Institute of Tai Studies and Research** Moranhat Dist. - Sibsagar Assam
	2.	**Krishna Kanta Handiqui Library** Gauhati University Gopinath Bardolai Nagar Guwahati, Assam
Bihar	3.	**Nava Nalanda Mahavihara** Nalanda – 803111 Bihar
	4.	**Patna Museum** Vidyapati Marg Patna Bihar

State	Sl. No.	Name of the MRCs
Bihar	5.	**Sri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute** Devashram Mahadeva Road Arrah– 802 301 Bihar
Gujarat	6.	**Sri Satshrut Prabhavana Trust** 580, Juni Manekwadi Bhavnagar - 364001 Gujarat
Haryana	7.	**Department of Sanskrit Pali and Prakrit** Kurukshetra University Kurukshetra-136119
Himachal Pradesh	8.	**Himachal Academy of Arts** Culture and Languages Cliff-End Estate Shimla- 171001 Himachal Pradesh
	9.	**Library of Tibetan Works and Archives** Gangchen Kyisong Dharamshala – 176215 Himachal Pradesh
Jammu & Kashmir	10.	**Directorate of State Archaeology, Archives & Museum** Stone Building, Old Secretariat Srinagar – 190001 Jammu and Kashmir
Karnataka	11.	**National Institute of Prakrit Studies & Research** Shrutakevali Education Trust Shravanabelagola – 573 135, Dist. - Hassan Karnataka
	12.	**Keladi Museum & Historical Research** P.O. Keladi Sagar Tq Dist. - Simoga Karnataka

State	Sl. No.	Name of the MRCs
Kerala	13.	**Oriental Research Institute & Manuscripts Library** University of Kerala Kariavattom Thiruvananthapuram - 695585 Kerala
Kerala	14.	**Thunchan Memorial Trust** Thunchan Paramba Tirur – 676101 Dist. – Mamlapuram Kerala
Madya Pradesh	15.	**Dr. Harisingh Gour University** Gour Nagar Sagar-470003 Madhya Pradesh
	16.	**Kund-Kund Jnanapith** 584, M.G. Road, Tukoganj Indore – 452 001 Madhya Pradesh
Maharashtra	17.	**Anandashram Samstha** 22, Budhwar Peth Pune – 411 002 Maharashtra
	18.	**Bhandarkar Oriental Research Institute** Deccan Gymkhana Pune-411 037, Maharashtra
Manipur	19.	**Manipur State Archives** Keishampat Imphal - 795 001 Manipur
Odisha	20.	**Sanskrit Academy of Research for Advanced Society through Vedic & Allied Tradition of India (SARASVATI)** Sarasvati Vihar Barpada Bhadrak – 756 113 Odisha

State	Sl. No.	Name of the MRCs
Tamil Nadu	21.	**Department of Archaeology** Tamil Valarchy Valagam Halls Road Egmore, Chennai- 600 008
Uttar Pradesh	22.	**Sampurnananda Sanskrit Visvavidyalaya** Varanasi – 221001 Uttar Pradesh
Uttar Pradesh	23.	**Vrindavan Research Institute** Raman Reti Vrindavan-281121 Uttar Pradesh
	24.	**Akhila Bharatiya Sanskrit Parishad** Mahatma Gandhi Marg Hazratganj, Lucknow Uttar Pradesh
	25.	**Chaudhary Charan Singh University** University Road Meerut – 200 005, Uttar Pradesh
	26.	**Mazahar Memorial Museum** Bahariabad Ghazipur Uttar Pradesh
Uttarakhand	27.	**Uttaranchal Sanskrit Academy** Near Zila Panchayat Office Haridwar – 249 401 Uttarakhand
West Bengal	28.	**Manuscript Library** Hardinge Building 1st Floor, Senate House 87/1, College Street, University of Calcutta Kolkata-700073 West Bengal

Manuscript Conservation Centres (MCCs)

Organization of the MCC-s

- Each MCC has a team of trained conservators and specialists in the field of manuscript conservation
- The activities of each MCC are administered and coordinated by a Project Coordinator from the existing staff of the Institution
- Each MCC has a laboratory with at least basic facilities to undertake manuscript conservation
- Each MCC assists a number of institutions in varying degrees to provide basic preventive conservation care for their manuscript collections
- Each MCC provides training in preventive and curative conservation to custodians of manuscripts in the concerned areas.
- MCC-s conduct outreach campaigns to promote knowledge of basic conservation of manuscripts
- The skills of the conservators working for MCC-s are regularly updated with workshops and training sessions

Performance Summary of the MCC-s

- Basic conservation laboratories are established in all MCC-s
- Core team of staff in each MCC created from trained staff in varied levels of expertise
- Systematic increase in the preventive conservation drives of the MCC-s
- Outreach programmes expanded to cover more institutions in providing vital care and understanding of conservation issues
- MCC-s identified on the basis of their infrastructure, past performance and expertise to provide curative assistance to collections and institutions

List of Manuscript Conservation Centres (MCCs) which have contributed to the output in the Financial Year 2013-14

State	Sl. No.	Name of the MCCs
Andhra Pradesh	1.	**AP State Archives and Research Institute** Tarnaka Hyderabad-7 Andhra Pradesh
	2.	**Oriental Research Institute,** Sri Venkateswara University Tirupati -517507 Andhra Pradesh
Assam	3.	**Krishna Kanta Handique Library** Gauhati University Gopinath Bardolai Nagar Guwahati – 781014, Assam
Bihar	4.	**Patna Museum** Vidyapati Marg Patna, Bihar

State	Sl. No.	Name of the MCCs
Bihar	5.	**Sri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute** Devashram Mahadeva Road Arrah– 802 30, Bihar
Delhi	6.	**B.L Institute of Indology** Vijay Vallab Smarak Complex 20th KM, GTK Road PO - Alipur Delhi-3
Gujarat	7.	**Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology** Navarangpur Near Gujrat University Ahmedabad - 380 009 Gujarat
Haryana	8.	**Dept. of Sankskrit, Pali & Prakrit** Kurukshetra University Kurukshetra Haryana
Jammu & Kashmir	9.	**Central Institute of Buddhist Studies** Choglamsar Leh (Ladakh) – 194104 Jammu & Kashmir
Karnataka	10.	**Department of Manuscriptology** Kannada University Hampi Vidyaranya – 583 276 Dist. Bellary Karnataka
	11.	**ICKPAC, INTACH Chitrakala Parishath** Art Conservation Centre Kumara Krupa Road Bengaluru - 560 001 Karnataka
	12.	**Keladi Museum & Historical Research,** P.O. Keladi Sagar Tq , Dist. - Simoga Karnataka, PIN: 577 401
	13.	**National Institute of Prakrit Studies and Research** Shri Davala Teertham Shravanabelagola Dist: Hassan, Karnataka

State	Sl. No.	Name of the MCCs
Karnataka	14.	**Sri Vadiraja Research Foundation** Geeta Mandir Sri Puthige Matha Car Street Udupi Karnataka PIN: 576 101
Kerala	15.	**Oriental Research Institute & Manuscripts Library** University of Kerala Kariavattom Thiruvananthapuram - 695585 Kerala
	16.	**Thunchan Memorial Trust** Thunchan Parambu Tirur – 676 101 Dist. - Malapurram Kerala
Madhya Pradesh	17.	**Kund Kund Jananpith** Devi Ahilya University 584, M. G. Road Tukoganj Indore – 452 001
Maharashtra	18.	**Bhandarkar Oriental Research Institute** Deccan Gymkhana Pune-411 037 Maharashtra
Manipur	19.	**Manipur State Archives** Keishampat Imphal - 795 001 Manipur
Odisha	20.	**AITIHYA** Plot No. 4/330, 1st Floor P.O. Sisupala Gada (Near Gangua Bridge, Puri Road), Bhubaneswar - 2 Odisha
	21.	**INTACH ICI** Orissa Art Conservation Centre Orissa State Museum Premises Bhubaneswar –751 014 Odisha

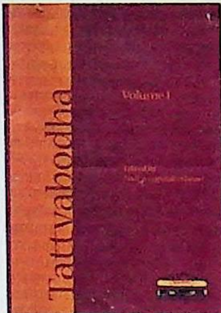
State	Sl. No.	Name of the MCCs
Odisha	22.	**Orissa State Museum** Bhubaneswar Odisha
	23.	**Sambalpur University Library** Sambalpur University Burla – 768001 Odisha
Rajasthan	24.	**Aklank Shodh Sansthan** Aklank Vidyalaya Association Basnt Vihar Kota Rajasthan
	25.	**Digambar Jain Pandulipi Samrakshan Kendra** Jain Vidya Samsthan Digambar Jain Nasim Bhattarakji Sawai Ramsing Road Jaipur – 302004 Rajasthan
Tripura	26.	**Tripura University** Suryamaninagar Tripura West Tripura
Uttar Pradesh	27.	**Central Library** Banaras Hindu University Varanasi Uttar Pradesh
	28.	**ICI Coservation Centre** Rampur Raza Library Hamid Manzil Rampur – 244901 Uttar Pradesh
	29.	**Indian Council of Conservation Institutes** HIG- 44, Sector – E Aliganj Scheme Lucknow – 226024 Uttar Pradesh
	30.	**Mazahar Memorial Museum** Bahariabad Ghazipur Uttar Pradesh

State	Sl. No.	Name of the MCCs
Uttar Pradesh	31.	**Nagarjuna Buddhist Foundation** 18, Andhiari Bagh, Gorakhpur – 273 001 Uttar Pradesh
	32.	**Vrindavan Research Institute** Raman Reti Vrindavan - 281121 Uttar Pradesh
Uttarakhand	33.	**Himalayan Society of Heritage & Art Conservation Centre** Nainital Uttarakhand
West Bengal	34 .	**Manuscript Library** Hardinge Building 1st Floor, Senate House 87/1, College Street University of Calcutta Kolkata-700073 West Bengal

Publications of the NMM

TATTVABODHA

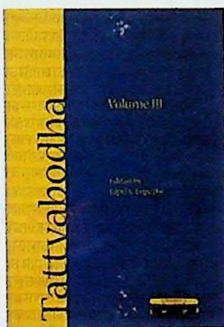
Compilation of the proceedings of public lectures delivered under Tattvabodha Series



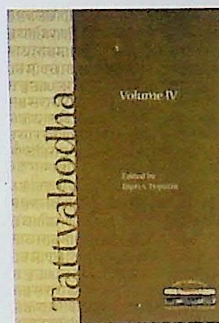
***TATTVABODHA* VOLUME–I**
Editor: Sudha Gopalakrishnan
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd, New Delhi
Pages: 164
Price: ₹ 325/-



***TATTVABODHA* VOLUME–II**
Editor: Kalyan Kumar Chakravarty
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd. New Delhi
Pages: 194
Price: ₹ 350/-



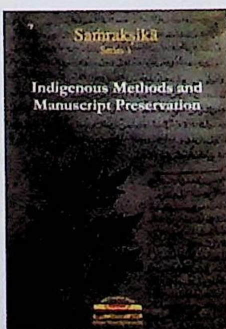
***TATTVABODHA* VOL–III**
Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dev Books, New Delhi
Pages: 240
Price: ₹ 350/-



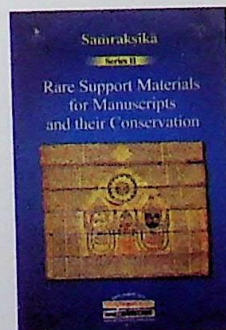
***TATTVABODHA* VOLUME–IV**
Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and D. K. Printworld (P.) Ltd.
Pages: 251
Price: ₹ 400/-

SAMRAKSHIKA

Compilation of the proceedings of the seminars on conservation of manuscripts



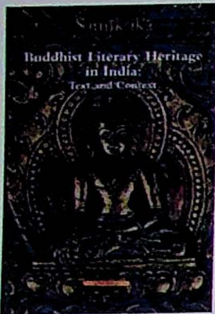
***SAMRAKSHIKA* VOLUME–I**
Indigenous Methods of Manuscript Preservation
Editor: Sudha Gopalakrishnan
Volume Editor: Anupam Sah
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and D. K. Printworld (P) Ltd., New Delhi
Pages: 253
Price: ₹ 350/-



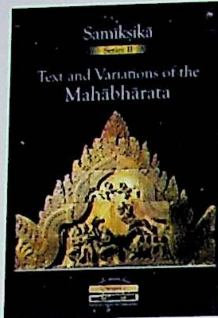
***SAMRAKSHIKA* VOLUME–II**
Rare Support Materials for Manuscripts and their Conservation
Editor: Shri K. K. Gupta
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dev Books, New Delhi
Pages: 102
Price: ₹ 200/-

SAMIKSHIKA

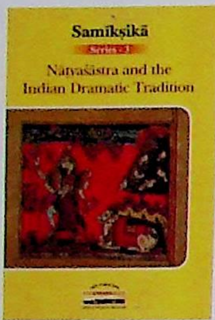
Compilation of the proceedings of the seminars organised on different topics



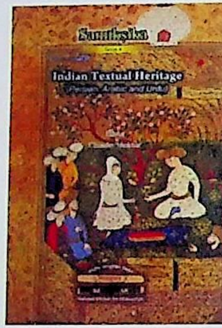
***SAMIKSHIKA* VOLUME–I**
Buddhist Literary Heritage in India
Editor: Prof. Ratna Basu
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi
Pages: 158
Price: ₹ 325/-



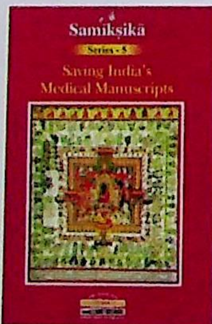
***SAMIKSHIKA* VOLUME-II**
Text and Variantions of the Mahābhārata
Editor: Kalyan Kumar Chakravarty
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Munsiram Manoharlal Publishers (P) Ltd., New Delhi
Pages: 335
Price: ₹ 500/-



***SAMIKSHIKA* VOLUME-III**
Natyashastra and the Indian Dramatic Tradition
Edited by: Radhavallabh Tripathi
General Editor: Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dev Publishers & Distributors, New Delhi
Pages: 344
Price: ₹ 450/-



***SAMIKSHIKA* VOLUME-IV**
Indian Textual Heritage (Persian, Arabic and Urdu)
Editor: Prof. Chander Shekhar
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dilli Kitab Ghar, Delhi
Pages: 400
Price: ₹ 350/-



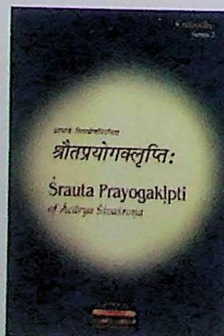
***SAMIKSHIKA* VOLUME-V**
Saving India's Medical Manuscripts
Edited by: G.G. Gangadharan
General Editor: Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dev Publishers & Distributors, New Delhi
Pages: 260
Price: ₹ 350/-

KRITIBODHA

Critical editions of manuscripts



***KRITIBODHA* VOLUME-I**
Vādhūla Gṛhyāgamavṛttirahasyam of Nārāyaṇa Miśra
Critically edited by: Braj Bihari Chaubey
General editor: Sudha Gopalakrishnan
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and D. K. Printworld (P) Ltd., New Delhi
Pages: 472
Price: ₹ 550/-



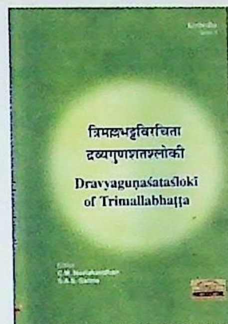
***KRITIBODHA* VOLUME-II**
Śrauta Prayogakḷpti of Ācārya Śivaśroṇa
Editor: Prof. Braj Bihari Chaubey
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and D. K. Printworld (P) Ltd., New Delhi
Pages: 200
Price: ₹ 250/-



***KRITIBODHA* VOLUME-III**
Tattvānusandhanam (A Compendium of Advaita Philosophy) by Sri MahadevanandaSarasvati
Consultant Editor: T. V. Sathyanarayana
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and New Bharatiya Book Corporation, Delhi
Pages: 90
Price: ₹ 150/-



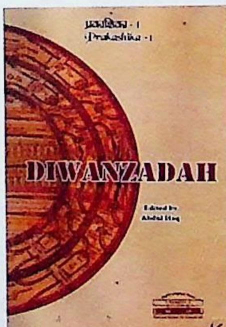
***KRITIBODHA*, VOLUME – IV**
Śrījonarājkṛta Kirātārjunīyaṭīkā
Editor: Dr. Dharmendra Kumar Bhatt
Consultant Editor: Prof. Vasant Kumar M. Bhatt
General Editor:
Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi & Nag Publishers, New Delhi
Pages: 338
Price: ₹ 250/-



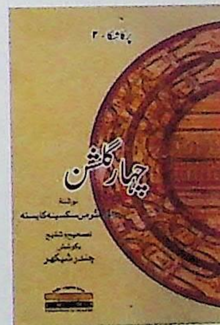
***KRITIBODHA* VOLUME-V**
Dravyaguṇaśataślokī of Trimallabhaṭṭa
Editor: Dr. C.M. Neelakandhan & Dr. S. A. S. Sarma
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: NMM & Nag Publishers, Delhi
Pages: 136
Price: ₹ 250-

PRAKASHIKA

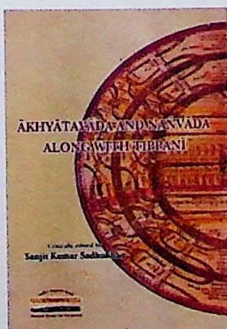
Printed editions of rare and unpublished manuscripts



***PRAKASHIKA* VOLUME-I**
Diwanzadah
Edited by: Prof. Abdul Haq
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Delhi Kitab Ghar, Delhi
Pages: 454
Price: ₹ 250/-



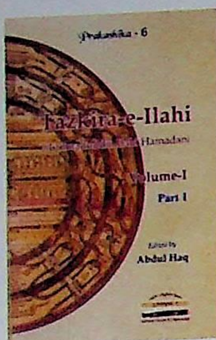
***PRAKASHIKA* VOLUME-II**
Chahar Gulshan (An eighteenh century gazetteer of Mughal India)
Edited and Annotated by:
Chander Shekhar
General Editor: Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dilli Kitab Ghar, Delhi
Pages: 473
Price: ₹ 250/-



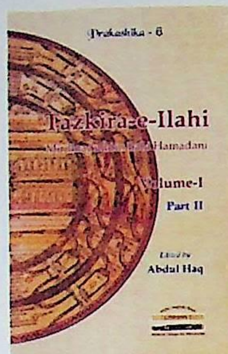
***PRAKASHIKA* VOLUME – III**
Ākhyātavāda and Nañvāda along with Ṭippanī
Critically Edited by Sanjit Kumar Sadhukhan
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dev Publishers & Distributers, New Delhi
Pages: 127
Price: ₹ 250/-

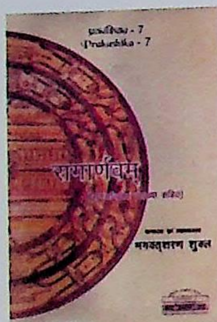


***PRAKASHIKA* VOLUME-IV**
Pakṣtācintāmaṇi and Sāmānyanirukti of Gaṅgeśa with Kaṇādaṭippani (Text and English Translation)
Critically Edited by Subuddhi Charan Goswami
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dev Publishers & Distributors
Pages: 113
Price: ₹ 225/-

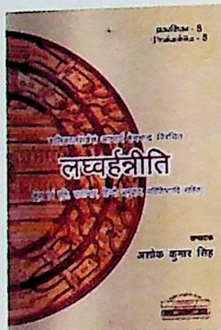


PRAKASHIKA, VOLUME VI (Part I & II)
Tazkira-e-Ilahi of Mir Imaduddin Ilahi Hamdani
(Facsimile Edition)
Editor: Prof. Abdul Haq
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi &
Dev Publishers & Distributors, New Delhi
Pages: 436 + 347 = 783
Price: ₹ 2,000/- (for two parts)

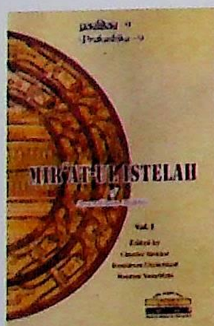




PRAKASHIKA VOLUME-VII
Rāgārṇavam (with Rāgacandrikā Vyākhyā)
Edited and commented by: Bhagavatsharan Shukla
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and D. K. Printworld (P.) Ltd.
Pages: 251



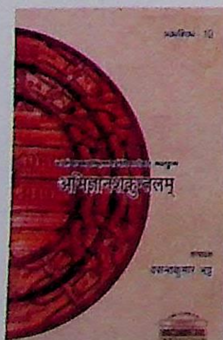
PRAKASHIKA VOLUME-VIII
Kalikālasarvajña Ācārya hemcandra's Laghvarhannīti
(Text with commentary, variant readings, Hindi translation and appendices)
Editor: Ashok Kumar Singh
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and New Bharatiya Book Corporation, New Delhi
Pages: 314



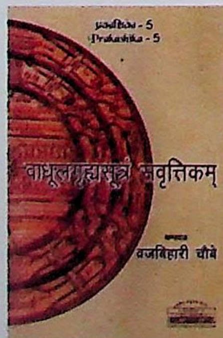
PRAKASHIKA VOLUME–IX (1st Part)
Mir'at-ulIstelah of Anand Ram Mukhlis
Edited by: Chander Shekhar, Hamidreza Ghelichkani & Houman Yousefdahi
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and DilliKitabGhar, Delhi
Pages: 566
Price: ₹ 400/-



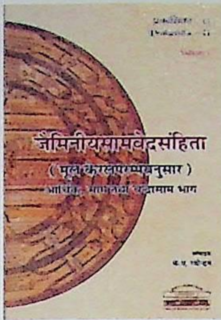
PRAKASHIKA VOLUME–IX (2nd Part)
Mir'at-ulIstelah of Anand Ram Mukhlis
Edited by: Chander Shekhar, Hamidreza Ghelichkani & Houman Yousefdahi
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dilli Kitab Ghar, Delhi
Pages: 403
Price: ₹ 400/-



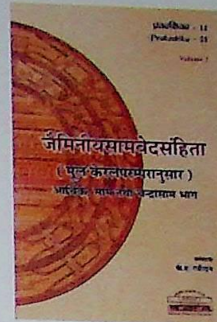
PRAKASHIKA, VOLUME X
Abhijñānaśakuntalam with Sandharbhadīpika of Chandrasekhar Chakravarty
Editor: Prof. Vasantkumar M. Bhatt
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi & New Bhartiya Book Corporation, New Delhi
Pages: 262
Price: ₹ 300/-

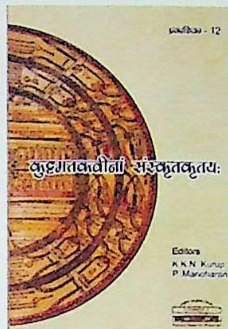


PRAKASHIKA VOLUME-V
Vādhulagṛhyasutṛam with Vṛtti
Critically Edited by: Braj Bihari Chaubey
General Editor: Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and New Bharatiya Book Corporation, New Delhi
Pages: 262

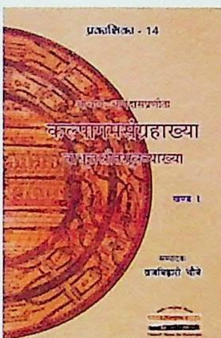


***PRAKASHIKA*, VOLUME XI (Part 1 & 2)**
Jaiminiyasamavedasamhita Text of Kerala Tradition
(Arcika, Sama and Candrasama Portions)
Editor: Dr. K. A. Rabindran
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi & Nag Publishers, Delhi
Pages: 206 + 413 = 619
Price: ₹ 600/- (for two parts)

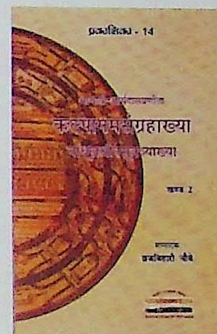




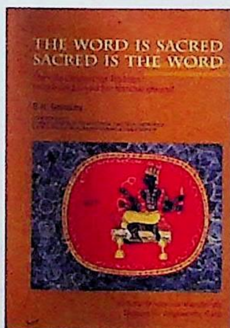
***PRAKASHIKA*, VOLUME XII**
Sanskrit Manuscripts of Kuṭṭamatt Family of Kasargod
Editors: Dr. K. N. Kurup& Dr. P. Manoharan
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi &
New Bhartiya Book Corporation, New Delhi
Pages: 279



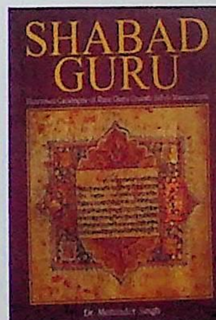
***PRAKASHIKA*, VOLUME XIV**
Ācārya Āryadāsapranītā Kalpāgamasamgrāhakhyā Vādhūlaśrautasutasūtravyākhyā
Editor: Prof. Braj Bihari Chaubey
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi &
Dev Publishers & Distributors, New Delhi
Pages: 300 + 429 = 729
Price: ₹ 650/- (for two parts)



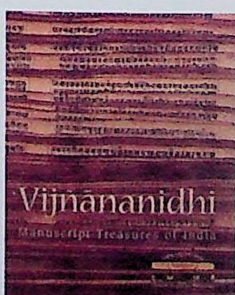
CATALOGUES



THE WORD IS SACRED SACRED IS THE WORD
The Indian Manuscript Tradition by B. N. Goswamy
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Niyogi Offset Pvt. Ltd., New Delhi
Pages: 248
Price: ₹ 1850/-



SHABAD GURU
Illustrated Catalogue of Rare Guru Granth Sahib Manuscripts
Editor: Dr. Mohinder Singh
Publishers: National Mission for Manuscripts,
New Delhi and National Institute of Punjab Studies,
New Delhi
Pages: 193



VIJÑĀNANIDHI: MANUSCRIPT TREASURES OF INDIA
Published by: National Mission for Manuscripts,
New Delhi
Pages: 144



A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF PERSIAN TRANSLATIONS OF INDIAN WORKS
Editor: Prof. Sherif Husain Qasemi
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: NMM & Asila Offset Printers, New Delhi
Pages: 310
Price: ₹ 500/-

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

॥ विज्ञानमुपास्व ॥



National Mission for Manuscripts